

घर की रेल

[राजस्थानी लोक कथाएँ]

सा० म० नानूराम सस्कर्ता



लोक-साहित्य प्रतिष्ठान
फालू (बीकानेर) राजस्थान

प्रकाशक शास्त्रार्थ प्रतियोगिता काल (बाकावर)
संस्था एडुकेटिव प्रग्री बीकानेर
मूल्य १८५०
प्रथमावृत्ति १९५५

भूमिका

राजस्थानी लोकसाहित्य की महिमा घणी ऊंची है। ई घरती र गौरवमय इतिहास की रचना अठ र लोकसाहित्य की प्रेरणा सू ई हुई है। राजस्थानी लोकसाहित्य जनजीवन से अग वणर म्थ्य सदेग से प्रकाश दियो अर ण प्रदेश रा नर नारी आत्मवलिदान र अनूठ आदर्श की थापना करी जिण की महिमा देश विदेश रा बडा बडा विद्वान मुक्तकठ सू गाइ है। राजस्थान लोकसाहित्य से रत्नाकर है। या साहित्य सामग्री परिमाण अर गुण दोनू इ दृष्टिया सू घणी बिगाल अर गौरवमयी है। इण की विविधता से आर भी अनूठी है।

लोकसाहित्य से एक प्रमुख अग 'लोककथा' है। लोककथा रसमयी अर प्रेरणाप्रदायिनी हुवण र साथ सांस्कृतिक चित्राम भी परगट करै। लोकसंस्कृति से रस धारा से लोकजीवन सरम अर उन्नत रूप धारण करै। या रसधारा लोककथा र साथ अति प्राचीन काल से धाली आयरी है। समय सारू ई रसधारा से नया नया तत्व भी आवर मिल। ई से प्रवाह आदकाल से बतमान काल से जोडर गभीर अध्ययन सारू एक सुरगा त्रिपय उपस्थित करै।

किणो प्रदेश र जनजीवन र अध्ययन सारू उण प्रदेश र लोकसाहित्य अर खास तौर से लोककथावा से अध्ययन घणो जरूरी है। एण लोककथावा र अध्ययन से पहली वा से सग्रह हुवणो आवश्यक है। या घण आनंद से बात है क राजस्थान से उतनाही साहित्य सेवक ई दिशा माय भी मचेष्ट है अर चा र परिश्रम से मधुर फल सब सुनभ हुय रया है। ई क्षेत्र माय साहित्य महोत्सवाय नानुरागिनी संस्कर्ता से नाव आर जाग है। आप से नइ पुस्तक घर की रेल राजस्थानी लोककथावा र उद्धार से दृष्टि से एक मुक्त प्रयास है।

लोककथावा र सग्रह से दिशा माय एक नियम परमा

व्यक्त मा यो गयो है कौ वा रै मूळ तर्क माय परिवर्तन न करयो जाव । एक ई लोककथा रा अनन्य रूपांतर भिन्न सक है पण वा रो प्रस्तुतीकरण अपरिवर्तित रूप माय ईज हुवणो जरुरी है । ज सग्रहकर्ता किणी लोककथा रो घटनावा म फेर बगळ कर नैव ती या परिवर्तित रूप साक्ष्यार्थाशास्त्र रै विद्यार्थी र अध्ययन मे बाधा उपस्थित कर । यणी सुमी रो बात है क श्री साक्ष्यार्ताजी ई पर मावश्यक नियम न ध्यान माय राख्यो है ।

एक ई लोककथा सक्षिप्त घर विस्तृत दो रूप म भी सुणा जाव । कोई सग्रहकर्ता सक्षिप्त रूप न पसंद कर अर काई उण र विस्तृत रूप न ग्रहण कर । कई लखका रो प्रवृत्ति इसी भा देमी जाव क य लोककथा र सक्षिप्त रूप न आपरो तरफ सू वणन विस्तार देवर नामी शीच । राजस्थानी रो पुरानी बाता माय भी या प्रवृत्ति देखी गई है । यो लखक रो आत्मप्रकाशन है अर उण रो आत्मचरित्र दात्री रो दूरगाव है इण मू लोककथा माय रोव कता अर मजाबू रो तत्त्व बद्र अर अर नई माल आप भाव । या नई शीच एक प्रकार मू लोककथा पर आधारित सत्यक रो रचना भी सात । ई रूप माय साक्ष्यार्थावा रो उपयोग बडा बडा लखक करता आसा है अर माहिर्य रो आवृद्धि रो या भा एक गनी है । नी साक्ष्यार्थावा इती गना माय आपरो या पुस्तक प्रस्तुत करा है ।

ई पुस्तक मायस्थानीय रण म नवक रणा घोष है । या तत्त्व ई रचना न सारत्रिफ कथा र परिवर्त माय उपस्थित करी है । भग्या जना रो तद नमुना दया—

एर अउ मखाड माय भात भाना रण गणीला,
बाना घन गा गण्डा अर जाव न तु हाव । कसा जगळ रा

वासी बेयी अकास रा प्रवासी अर बेयी जळथळ रा निवासी नामजादीक होय रया है । रोभ जरखडां, नुरजा नुरगतळी, सह सेळा वाडी बिच्छू भीग अर मामोलिया आप आपरी जगा पर्गा पूटरा फव छिद्र ।' (पृष्ठ ६२)

इणी भात एक दूजा चिचाम भी देखो — एकर रो वात सुरजो खेत म खडघो माठा रो खळो काढ रियो हा । ऊट न डेरें र खनें चरण वगी छोड राख्यो हो । सेता म लावणा हो चुकी ही घर धन पमु चरता फिर हा । मिनख भेळवाड खराव हा, आपर खता म आप आपरा पमु चराव हा । सुरजें रो ऊट दावणो दियोडो खडघो थोडा घणा ल्हासुडा तोड हो ।' (पृष्ठ ८६)

ऊपरल दोनू उद्घरणा माय स्वाभाविकता सार्थ सजावट रो छटा भी देखना जोग है ।

घर की रेल माय सकनित राजस्थानी लोककथावा रो विविधता घणी सराहना जोग है । ई मग्रह माय कठ छोट टाबरा र मनभावर्त चीडी कागल अर ऊदर रो विश्रण है तो कठ गाव रें बुभाकडजी रो बुद्धि रो अनोखो बखान है । एक जगां पीरदान हूम रो चतराई रो चमत्कार है तो दूजी ठोर भरड रो पोल गुल है । एणो भात थोर भी अनेक रंग रंगील पात्रा सू लेखल ई पोथी म रोचकता रो वातावरण बणाया है ।

आशा है लखक रो ई पोथी न साहित्य जगत् म पूरो सम्मान मिलसी घर वा रो कलम सू इणो भात राजस्थानी-साहित्य रो श्रीवृद्धि हुवती ई रहसी । श्री सस्कृताजी राजस्थानी भाषा रा लूठा कवि अर लखक तथा लोक साहित्य रा पारखी है । आप सू राजस्थानी भाषा र प्रेमियां न घणी आशा है ।

बीकानर

दि १५-३-१९६६

(डॉ) मनोहर शर्मा

सम्पादक वरणा'

चिला पटड़ी

गुरु-दिश्वणा

भारतीय विद्या मन्दिर् जडो भोक्छी मस्यावा रा कुळपत,
म्स्कृत घर हिदा तथा राजस्थानी लोक साहित्य रा
ब्रह्मपत दुनिया रा साहित्यिक दीया, व्याकरण
समीक्षा अर प्रबन्ध जिता ऊहा विसया
रा प्रडूड हीया भेर सोधनिवध
रा निर्देसक वय
परम श्रद्धेय पडित
श्री नरोत्तमदास जी स्वामी
न घण घण विनै सू भेंट

—सा० म० नानूराम सस्कर्ता

बाता री धानरदाळ

१	घर की रेल	१
२	भाग चरियो	१४
३	पारानिया	२०
४	आधिया पगळियो	२६
५	बूभवुभाकडजा	४८
६	पचमारखा	५
७	गिडत अर नाथ	६७
८	सूध अर जाळसाजी	७७
९	नाडावद	८५
१०	डफाळसम्ब	९२
११	कजायण बतामी	९९
१२	मदुधो	१०७
१३	ऊपरतो उमनाद	११३
१४	चूग रो व्याह	१२१
१५	अव	१२६
१६	घोडे रो जमयान	१३३
१७	विडता री टक्कन	१४०
१८	तरयारो गिडत रो रोग	१४७
१९	कवाजो	१५४
२०	वीर समन देम	१६१
२१	गुटियो राख	१७४

घर की रेल



अडचान धारकरणा वरस, काळा र खनला वरतारा ।
 गोरा रो राज तप्यो, देस म नू ई-नू ई चीजा घर नू वा-नू वा नावटा
 वापरजा । हाय रो काम छूटयो अर कळा माय कूटो बाजण लाग्यो ।
 कठ ही गाभा सीवण हाळी कळ कठे ह। पेटी वाजो । कठ ही मटर
 गाडी रो वाता ह्य अर वेइ जगा रेलो रो चाळो सा चाल । काद
 इटरेस कोई वी० ए० फास कोई रगन्ट वया कोई तार उधाड
 वूडिया द्धरज कर गाळा टाक । डर भो सू दिमा रो काळजो वाप ।
 ज रेल तार री कोई वुचभाधी वाता वदेव तो बो धारियासमादी
 निधा । इ गरेजी भण्योडो घरमभिस्ट करणियो पापी भिनख मानीज ।
 पुराणा आदम्या नै बो खारो आफ बापरो सो मारणिया लाग ।
 बीसू व पल्लो अडाणो ही अघरम गिगुँ, वात कर र कुण विघरमा
 यण ।

पली-दूजी पन्थो-ग देस निहावर जावणिया जुवान भिनख
 इमी ही कोई हिल री नू ई वात वता देव तो वूडिया सू मोटी राड
 रो मोरचो लणो पड । जात सू वार करै, यात सू यारो राख ।
 साख, पात होणै, रै समै पूरी अडास लगाव । डेड सो अंनो अळगा
 रणो पडै । छेकड घापर हाथा जोडी करै, खल्ला पचा रा माय उडाय

भाकतो मोटो पडवो, बारी बारणा सू खुल्लो हुवा खाव । बारणा
 भाया गया ऊरै, हर वखत गाव री हथाई हुवै । पडव र भागी छाता
 सूणी ऊची चौकी, चण न च्यार पगोधिया । चौकी बीच चौडा घून्
 सारै तम्बाखू रो भरयोडो गट्टो पडयो गुडै । खन दो च्यार सुलफनी
 पडी हड । चीपियोर कुडछी, सन मीगणा रो छालो छटयो पडयो ह ।
 पळ पळ करती बोभर मे पीळा सान सिरसा गोळ गाळ खीरा रा
 चिल मिलाट करता चिलमिया चाडोर-नीयो । मुरडीजती मू छा रा
 गामर जुवान आपतो पान रो चिहोसो भोरो भालर चिलमडी चाम
 घूव रा डूड अर गोट उपा । पण झुटिया न धणा फूटरा, जुगना
 सू होका भर भर पावता रव है । ई कबत सू लाभ ठी है—'होका
 भर बूढा न दीजै पान चाल्या पाछा लीजै । बूढा जाणु राख्यो मान
 टावर जाणु चाल्यो पान । चौका माथ गुरवत हसणा र बोदणा ।
 चुपा चपा राम रमी चोदणा पगोलणा । कोई पैली कळी मे पाणी
 पूरो कर । कोई नडी नै भाजर भिजोवै । कोई चमरुपोम टिडक
 कोई चिलम माथ चिलमपासियो जचार्व है । डरहाट ऊपड बुरळ
 कड । दो दो होका बरोवर वग अर दो-दो ठाली पडया ठर है । मळो
 स लाग रियो है खेलो सो भाग रियो है । मक्क मदीनाळ मीय दाइ
 दरसणा रा कोट हरिया है । मिलण बेगी भाव गाळा दूट भिनखा
 री कतार सी उत्तर है । बडोबावो नागपर नगर री नौकरी सू
 भायो है । अचाचू क री मेल, हस भर खिल है ।

वाणी गावतो जोगी घाणी बावतो तेली अर ढाणी जावता
 जाट जिया गरभाज बिया ही नाग पर सू भायोडो वडो (बूटा
 चावो) सूजरियो है । दू पीज्यो बठयो है करडो डूड हरियो है ।
 कदेही-कदही बडक सी देव तरळ मी मारै अर देखण भायाडा माणसा
 माथ भूजै बळ । फाटै पोमाव अर क्व है—य मेर माण-ताणन क
 जाणो हो ? इ भय (अठ) ये मन के धो (बवो) हा ? काका

राडगो ? रिपियो दो रिपिया भाडो ही तो लाग ? पण कित्ता ही खडो, कित्ता ही ऊतरो अर कित्तो ही भला ही भार घालो । कटे ही वूदं न पटकै, नाखै न चमकै । ज ज काळा ! ज ज काळी ! करती वग है । बीं म ही जाजह, बीं मे ही पाणी रो नळ ! माही लालटण रो लोटियो अर हवा घालण री वळ ! फास्ट सिक्न अर घाट, 'यारो यारो किरावो भरो अर मूता आराम करो ! एकरगी मिणत है सगळा लागर घरगी रेनडी करल्यो तो ऊमरसृतगा सुख हुज्यावै । मजो कर नाखो, मौज वण-यावै । फळो है पू गो है फोफळियो है कावरी है ! वाजरी माठ ऊन अर घी, घाल्यार मर गया । दिन-दिन आपरी चीजा बेची अर सिभया बजार रो सीदो सूत लेर पाछा घरा आ सूर्या । वयू दो तीन दिन ताई छोड म रळो । क्या वगी भूखा तिसा तावडें बळो ? यात विरादरी जान जपान अर 'व्या' साव हीडा सावता वगो ।'

गाव रा आयोडा लोग राजी राजी बोल्या— वडा ! वात तो मांटी जबरी है वडो— दू घू नी रे ! बटागो बापो ! घररी रेलडी न के नावड ? आखा मिनख उतावळाहूर बोल्या— 'घर री रेल किया करा वडा ? वडो बोळो— किया बे करा । बठ तो बै कर्व है गोरा अर आपा इभय (अठै) कवा छोरा ! (जका दिना अग्रोज सा ब ही रेन न चलाया करता हा) अर बठ तो व कर्व अजण आपा अठ कवा कोठलिया । वठ ता व कर्व है डबा अर आपा अठ कवा हा पडवा । बठ तो बै बोल है गाट अर आपा इभय कवा जाट । बारै तो बठ ली री पटडी है जका माथ गाडा चाल अर आपण अठ धूड म बळगाडी हाळ पेडा री लीक ही ली री लण दो काम सारली । बारै तो बठ लामा थमा अर तार है । पण आपण तो अठ लकडा री लामोडी हाना रोप परीर ऊपर बोदी मू जेवडी लगाय लस्या । के परक है रे ? व तो बिभय, कर्व

मिटी भर पाया—भय कम ही वीरगी का मन ! हूँ पू नी रे ! के परक है ? बारें तो बठ पया पारें जं गुगार अत्र घर पापनी घटे तवो यत्रा रेखां तं पापनीडा धार रेन पड जागी । हूँ पू नी रे ! के परक है ? बार ता बटे घटी मिटां सू रेन भाव घर आपनी थठ एक पापनी होव रो पानी थो परो मान दगी जिनन रेन टुर पडनी हूँ पू नी रे ! क फरक है ? बार तो बड अत्रण म कोयला घळ घर भापण अड बोदी बाड रो भुळम मूर जगेली । जब सू भव भव करती धू थो उतानी रेल चोखी तर चालली । गाव र भावा लोगा रें बडळी वात जबगी । बोल्या— हुवा ता वडा । कान सू ही घरगी रेलडी वणाथो । इ सुख वेगी थारा ऊमरमुत पग पूज स्या गुण नी भूला । मरे पछ ही तारें सू पगलिया रोपस्या देवळी थोकस्या । वडो— हूँ पू नी रे के परक है ? घरगी रेलडी करत्यो तो सो फोडो मिटव्य ।

बारा वासा सू घरदीठ आदमी बलामा । राड हडो ही छोडी नदी । बा हियागता सू ही रन र नाव नगदी रिपियो रिपियो तियो । बारी भर स्यारी पळार्ई । घरगी रेल थणावण साय्या । गाव गर गाव रो मू बो, मांग लियो एक एक आदमी धूँवो । कोठलिया पुडकलिया तिथा खभ खडा कर दिया । पली पोत बीकाण र गले मावे शळण गाडी टोरी । लारी पेडा री लीकटी ऊपर प्रागोवाळ एक मोटो कोठलियो माडघो । बी र नीच फूथोड घड रो गळवो— गिडघतियो दे परार साहीणो राहयो । बी काठलियै र लार लगे लगे गाव खान भाक्ता थका माटी भीमणा री गार गिलोर बीरी काठी वाट सू पनर—बीस पडवा घाल्या । पडवा न ऊपर सू सिणिया भर बोनी श्रीपोळी दे परार छा दिया । एक एक सू चिपा चिपार आपस म मिला दिया । दोना फानला च्याहू कूणा बूर भर कश्वी स्यू काठा कसता थका थिच बळी बाध दी । कोडवा घर ठाड

चाह परार पडवा नै छद्म कर दीना । बोरिया रा जूण बंध जक्या
 वाती बाही, पुडकनियां डब्बा री मोळें लगाई । बीस दिना ताई
 अटोम्बटी वग्या हीचक्या ! मनसू मग्धा—पच्या घर। थवया जद
 आर रेल री रगत लेंण मार्ये आई । पडवा नै डब्बा र डोल माळ
 दुवाया आडी खिडकी किवाडी चाढी घर फळा फोफळिये जिसे
 गावा रै माल सू काठी भर दी गाढा । की म ही घी बी म ही उन
 की मे ही मोठ-बारी की म ही परचून ! नीर पाळ घर सेवण वास
 सू आवा डब्बा पडवा छननारया । कुतर कचर सू बोड दीना, लकडी
 लडे रा लाड लीना । एक एक पडवै डब्ब म चार चार, पाच पाच घरा
 रो समान दबोसनीनो । तठा भर दिया, सठा जड लिया अर वासा रा
 मुखिया भाणम चनता पुरजा आप आपर डबा म रखाळा धणी
 वडे री मीख सू जा बैन्था । कोठलिये खनल डब्बे पडव मे गोरै सा बा
 री होडा होड गाव रा दो जुवान डलवर छोरा अणार बाड दीना
 अर आढो काठो कू टो दे दीनो ।

टासहाळी लुगाया सप मपाटिया, काना वाती सक्करी अर
 मटरका करती वाती— हुसनाक अर हुसरडा है जका ही गाडी
 चढमी । बाकीरारै तो आपरी वळण गाडी ही आडी धानी । जै तो
 नागा लफ्या अर धक्का खोरा रा काम है । बोल जका रा तो
 बोरिया ही त्रिक ज्यावै, न बोल बी री जुवार ही पडी रव । चर्णिया
 सनावाती वरी अर चढ्या । दुजे नै की नै ही क्यू वूभा ? आपरळा
 (धणी) बापडा सूधा भोदा, गऊ रा ऊपरळा दान ! बीकानेर रो बै
 के देख ? बारी आसी लेख-लेख ! रेल गाढा री बारी कठ वडी है
 कूव री स्यारी भला ही कान्ते । सीर री मां नै स्याळिया खाव ।
 सीर तो सावढ रो ही चोखी ! कोरा टीगर कूवाण्यां ।' इसी अपरोखी
 बात्या वास री बहुवा रै मूठै सूणीजी जद एक वूनी डोकरी नै ही
 जोस धायो अर गाळयो रा मूक्ण ठोकण लागी । बोली—' सरपडो

गाव रे ई भोमसँ म । 'जेवड़ी बळगी पण घट कौनी बळपो ।' मर
 ज्वाणुं जे गाडी ही करी तो सँर जावण रो भारी ही सावळ बांधणी
 बाहिजँ ही । म्हार तो पोमलाळो दोरो रातगो रोव है । गाडो
 चरुँ रेव चडू करँ ! पण घड नागद्विपलाद यह मँ भोड म वे ?
 इतँ ते देता-देती डूजी दोबरी भळ बोली— म्हार ही मऊ रेल
 देखण नँ गर्द; अको मरज्याणां परियां सू ही पाछी बाढ़ दीनी ।
 कियो— लुगाई रो इभया के काम ? तो रउकी हाळो लुगाई बिना
 ये के ऊपर सू घोमस्था ? गाव मे आयोडी रेल ही देखण देवो नही ।
 म्हे तो गगा माना र गती मे अर मऊ रँ भारगा म ही घणी देखना ।
 परभीम म ही कोई नी पालता । हत रां सत नी कैता । पण चाई !
 के करा ? टावर कूकाणना ही लिख्योडा है । आपणाळा घरहाळा
 पर ही पटकी पडगी जद डूजो के कर ? ले ल्यो नफी डो । जगा जगा
 लुगाया ? भूलरा मे इसी इसी वाता दुर्व है । गप्पा जोड मू ड मच
 कोड हे । मिनख मगेज म वगता माव नीं हस । पग जनी पर ना
 टिक । बड र घर हाळी जुगाया एकँकानो मू डो उतार सुण कुड कुड
 काळजा बाळँ ।

१
 सिटो वेगा मिन्दर सू सख मगापो घटी री जगा भार
 अर तवनो बजाया । हाक मे तम्बाखु रा पान घाल्यो अर घडो र टम
 खातर एक वृत्तँ स मिनख र मू ड म नड़ी देपरीर पीवण न वँटाण्यो ।
 कद पान बळ अर कद रेल दुर ? कोड तागण्यो हरख जागण्यो । हेता
 हेन हुगी— होक रो पान बळला ही एक घडो हुवली अर रन हक
 जावली चाल पडली । सर जावणिया लोग म वेगा चड जाया नही
 तो आज री रेल चूक जावती । लाग म आणुद री सर जाग पडी ।
 होळी रो फाग अर भादव रो भटो सी राग पडी । उमग मे चारा
 कानी भाज्या फिरँ भुवाळी तावँ है अर होक र पान बाळणिय वृद्धिय
 मिनख माय विरही भीच है । कोई वन जा परोर वव— 'म्हान ही

पावो दादा !' कोई बव खाया ख जो दादा ! कोई बव कुरळिया काढदया काका ! कोई हाया जोडी करै— मोडो मत करो भिया ! पैलो तिन है पाछा कन आवाला ? केई गाळ काढ है— बापड सदा ही चम्मड पास पीया ! आपर घरा तो भावतडी ही खेची नी ! कदे ही कागत री मू गळो बणार ही बैठयो नी । गुड गुडी रा री सासा हा । अठै आर बणग्या मुखिया हाकची ! हाकची बिना काटिमा फाट ? देखो कोनी कळी रै पड़ने ! इसो डोळ हूवै ! हिपो फूटम्या कारै कामरो मोडो कर ! पानडो बाळ-बूळर अळगो हुव का की दूज नै सूपै ।'

बूडिय होकची री डर-पट सी सीवी हूगी । च्यार भर भाकै भर उतावळ २ टरड २ खाच है । धूर्धो बाररो पार ही राम कठा रै नडो ही नी जावण दव । लोगा री करडी मीट भर निजर नै ताड, आप ऊपर जगतोडी आस्या न घणी बाळ है । कीरो जार चालै ? नाम पर हाल वड री जूनो जिगरी भायलो है । बाळ-गोटियो पार है । उन्नाळ री तिन मिखर मू दो आग्यो भातो वखत हूग्यो । तम्बाखू री गुल भर गुल री सफा चादी वणगी । पण बोदिय डण बिलमडी न नी नाखीस नी नाखी ! छकड वड नै ही जू भळ आई भर बिलमडी नीच उतराइ ।

वडा वरस साठक रा खोडो मिनस ! ज पर र सेठा री चौकीनार ! नाग पर री दुवान रग्वाळ भर वरमो वरस छुट्टा लेर अकर देस आव । मटारा पनार मो ऊषड । बोली म फूल सा भड । त्वडी खाव चानना खुडावै भर घाळ जीन र कोट मू बीडी रा टुवडा काट काड घुकाव है । गू भै मे छोटी दियासळाइ दवोस नसा मू बीडा रोस है ! मोती मूळघा जैपरी काळो धोळो दुमाला ! बाळा वूट भर काधे दुमाला ! सीकर री सी स्याणप मीणा री नी मनवार ! बीटी री अक्कड म मिनखा रै विचाळै बैठयो वाता वसाव

फाँ । तारै लमूट अर लताडै । काळत्रो होळीय । लिनाड रो
 लाई उगार ली, जूना मू तालबो घड नाट्या । भीड थिडी जद
 तका री थाडी अकन ठिनाण आयी । मिलर बैठ्या अर आपम म
 वाना वणाई — लुगाया बापडी माची कर्वै हा । गाव हाडीहेत हो
 बस्था । भयान में भैडो नामून अर कौणकतीण करनियो । गाव बाग
 लो ऊरो मू लो काळा ळ्यो । मुलक मू गुमान हटग्या, मूरख पणै रा
 मणो खटग्यो — “हू घू नी र । क तारै ? घरगी रगडी करल्या ।’
 (म्हे क्वू हू नी रे घर रा रेल वणावत्यो) ।

आखँ वामा में चैळ पळ लागरयो है । जाभा जम्मा-जगण
 अर माता जा रा डोल वाजगा सए हुमा । म्नुनी, मामनै सू बरी
 ह्योडा मुळजमा दाद घर गी रेन रा मुमाफर दूजै भो राजी मुमी
 घग आया । वामत री ताव तारा जद टोक तानारी’र अँ लान
 लारली किवाड्या मू ग्योड कानी कऱ भाया हा । किमी गिजगिरी
 ही ? हा तो फूम रा टापर हा । दिन ढ़ळ न जळ-बळर ळडा
 ह्य्या । रेल रो जावक मुदा मिग्घो जणा इया रा जी टिक्यो । स्ळर
 आयण घरा बढ्या । पाटा चूडा पैराइज्या, गीत गाइज्या तिया गुड
 बटायो । लाड कोड करजा । गाव नाव कमायो अर वीभत्स हास्य
 में बऱळयो ।

आज री सिरकार रलरी पऱ्नी तो नहीं पण मोटर लोरचा
 री लामी-लामी सडका तो इय गाव में वरधा मू वणा राखी है ।
 सारै दिन घणी वना मोटरा अर कारा घग पण काइ भी गाववाभी
 अब इसी घर री मोटर नीं वणावै । तिया में ही चढै-ऊतरै है ।

भाग चंद्रिणी



घोनी रा कुच्छा टूटेडा खलक री बाबा फाटेडी भर तार तार पोतियो माथ र चिप्येडो पडघो हे । मधरो डीघो तुवान खळ वच डील्लो डील दियाळी रो सो लपाड लाग । मोचडी निगतर फटाक, रावडी रो डाकी गिटाक । पगा र घणोरी व्याड भर म्हदर रै लपते डघोना माकळा रगतर ! तक्तीर रो सोळ आना घरा भाग बळी, पण घरून में जावक कुत्ता मूत्योटा जर सून घराण रो मिनत जर बाणो सा दीग है । जूतो गाभ रो साजत सफा विगणेडी है बाला चानी री जुगती जावन फिक्ळयोडी है । इस मिनत २ घरा चीज वसन री घतराई कः जच ? उण्यार माथै गणु गाभ री रगत चिया रच ? मने ऊर घाड्यो ठपर पनाण तग वारा । टोरड र कोन्हाळो वचचो बाभेडो पर मा रो टूटो गाधेना । ऊर न कुच्छा मठ जाव है घरहाळी न घनाया मन में गरभाव है । आळमी लडपोतिया गा पातो । फोडा रा नुकनाण घरमत्ता म गाव घोना गधो एर बराबर जात । ताळियो नाव है पण लाग बोळिया २ कर है । ताळिया कः कारा ही कियो जानों नीं ठार है । घोळो बघ घान घादी रा गो लाग बाळो हुट हुटो तेवी रो मा पाव । पाचिया गाँ भर कादा मोर मन हट बावण न जाव है ।

— पलाण उतारघो डाँधियो लीरो पेनी लँधी, पटियो दीनो !
 तणार री नाक्या में पीनणी मोडी अर नाड में कानी गगार हाल
 जोनी । बीजियो वाध्या, हळ रँ वासिय माथ हाथ मेया ! ऊट नै
 त्रिबन्ारी देर रास साभा अर दूजो-हाथ में पुराणी तेर गावण
 हळी बाण डीभी ! पल भच्छाँ ही जमी में हळ अडग्यो चर री
 कनी में चऊ-कुन नमन जल भिडग्यो । ऊट भनीड लाग्यो, हाळी नै
 तावियो घाम्यो ! भड भच्च ! तेज गाण में भिजोक पडग्यो ऊट
 पाछो मिरक्यो अर डरग्यो । कोग तरी करती अळग सडी लुगाई नै
 हना मारयो ही —

अे गड ज !

‘क है ?’ लुगाई कियो ।

‘है जामण हाळा रो मिर !’ तोळिया कियो — “हळ
 अडग्यो ! ऊट री मो रा भान काडा ।

दळो ! पैल पोत ही अडा दियो, आधाहाके ?’ इतो क
 परोर लुगाई कस्ती ल्याई अर हळ आगनी रेत अळगी दगाही । खाडो
 खादघो तो अडकास र जोर सू जमी बार एव मोटी टोकणो बडगे !
 हळहळाट करता हीरा पना में हाथ धाल्यो अर हाळी बोल्यो — ओय
 राड ! करम में कोरा काकरा ही रिजग्याडचा है । भाटा सू काटो
 भरघोडो है । चाल ह्या नै खेत सू वारै, उलात्तर गिणार आवा ।
 पपरा सू भळे कठै हा अडर हळ दून जामी । ऊट री नळी छुनसी
 मेरी पगधळी सू खरला खलसी, पडसी । दोनू जणा लाग्या अर
 मता सू वीन्चोडी टोकणा धीसर खेत री नीव में लेग्या । आडा
 करयो ऊघायो हस्या खिल्या अर दूबो बघायो । मूघो करता ही
 सावण भादवँ र घटाटोप तिन में सीकडू मूरज ऊग्या । डर्रा
 आवै अथवाळी छाव चिलवा पड आधा सीसी दुव है । जोय
 राड ! प्रासा भाटा दग्गड निसरघा है । कोरा गळाचिया गड्डा है ।

(एक रा र हाथ गगार) मांग लडत घोसा ? । गाग प्यारेक गूटरा
सा पुगरत्या दू टर र गळ म ता पाता तोडू थयै ।

मोटो दारो मोठी पाई रया रो ग्य भाळ गागर मत्रबात्र
जचाई । हातम मुगण्या हाक मारी नात्रम तसातर धाक पगारा
अर फीज म गगारा बायो । छत्रा मा ऊत्र पाडा अर हाया मजा
परा र रगान रा मिपादी गिरणार मा गार गू थडपा । गिकारी
सोगा पाडा म घोडा दाबण्या । जळ म मळ हुया । गुगारी रो
जावतो देवग जोग वण्या । बाण्या दवर बावनी गाथा में गिकार
रो सौक पुरो कर है । मिनसा रो बतार रोहा में रळनी गाबणा
फिर है । नीकरा गावरा र बरका बधगा ऊत्र पाडा म सणा सो
सधगी । भाग्य जिन रवक्या अर पाबण्या पण बाण्या जाग गिकार
एक ही नाधी नही । माडा मट्टी न हाथ पात्र नहा । बोडा मथ
कटक कर कुण ?

पाछल पीर पाछा मुडपा तो मारग में एक मन आयो ।
सेत रै बार मै गरी दियाळी सी भिनमिनती गीती । च्यारु मर
पळपळाटा हुब हा । सौ मो पावडा ताई रा सत सचनण हा रिया
हा । साल पीळा हरपा अर दुरगा चुरगा तथा मतरगा डबळका मा
ऊपडा हा । नेज तारा सा दूत्र हा । अघावण खाड में अमोळक रतना
रो च्यानणो देखर बादस्या न घणो इचरज हुयो । चाग्यो तरिया
देण्या ओळण्या अर आपरै स्थानै उजीर न साथ ले परार सेत घणा
खन चाल्या । बादस्या रो सुवारी रो हनबलो सुणपरा सत रो घणा
चिमक्या अर डरघो तिथा भूयो वळथो । जाप्यो का तो बापडिया
का कूचिया का कानवेलिया तिथा बाळण्या गिवारिया है जका
सेत में बड है । बादस्या र हाथी न देवर हेलो मारयो— अरे !
तेर दणू द्विय न परिया ही राख । आतर ही बाळ ! मेर डगरो
चिमक है । बोळियो किरळी मार है ।

बादस्या समझयो के कोइ ठरकीज्योहो गु गो भोड है । पून नीवळयोहो बरो पळगोड है । जद पैली उजार नै कने मेल्या । उजार नैड जापरै र ताळिय न कियो— बोला रे ! हजूर री पालकी आटे है ।' जद तोळू मूढो मिचकार वाल्यो— ऊहू ! कालगी मरघोटा न म्भ्या (मरठ) इज्ज (मोड) लिधा फिरो क ? बादस्या इरु नहो गियो अर बोयो म्हें ता थारै म् घरम भाइ हावण न आयो हू ।'

बोयो— हूया ।

बादस्या कियो— तरो नाव के है ?

'तरो नाव के है ? ताळिय कियो ।

'अक्कर बादस्या । बादस्या बाल्या ।

'मरो ताळियो भागी । ताळिय बताया ।

बादस्या कियो— 'म्हें ता घन भागचरियो कस्या भादडा ।

तोळू बोयो— 'वा ! मरा क त्या ?'

बादस्या बाल्या— 'ता प्राया आपा पागडी बढळा, भाइ वणा ।'

— भागचरिय पत्र स्तू गळघाड गमळिय रा पूर आपर माथ मू उतार पर बादस्या क ना कस्या । बादस्या आपरी मुचमता रुवाळी टोना भागचरिय रै माथ मेल पगर कोनियो पूर आपरै माथ पळयो । बादस्या उर म्भें बिलकता हीरा र हाथ लगार बोयो— 'भागचदरा ! तर उर रै वगी इत्ता हीरा पन्ना कठ स्तू त्यायो रे ?

बोल्थो— ऊडोडै मे सू ! तू ही लेज्या थारलै दप्पू छिय माथ घार । बै खेत री सीव में घणा ही पड्या, खेतगो नास कर । भागचदरियँ कियो ।

बादस्या कियो— तू लड तो कोनीक ? '

बोल्थो— मू के बाळू वासत नगाबू के थार ? म्हार तो खेत रो सित्यानास कर दियो ।

बादस्या मन मन में मोकळो राजी हुयो अर खेत री सीव परल त्रिगलै नै भुवार भाडर आपर ऊटा रा बोरा भरा दीना । लथ म खिस्कोडा भळे चिलकता दीस्या बामू काठा गूभा भर तीना । ऊट लाद नै दिल्ली कानी टोरथा अर बादस्या आप पाछो भाईड सू राम रमी करण खेत म गियो । धरती रो बादस्या हो वहार क छानो हो ?

भागचदरियँ बादस्या न पाछो भावतो देरयो अर बायो— ' मळ त्रियायोक तेर दप्पू छिय न नड ? डाने फीटो हँसा मो मो विरिया क त्रियो क इह (हाथी न) देखर मेरो टूटर चमक है । लेजा तर न परिया ख न मतल्या ।

बादस्या कियो— भागचदरा ! मिलण नै आयो हू मूँ जावू हू । कही कोई मेर जोगतो काम पड तो सीधो मेर खन दिल्ली घा जाई । भीड अर छोडी रो विरिया थारी पूरी मत्त करू ला, पाडो भावू ना । '

भागचदरियो बायो— ऊहू ! सो चाल कर देसी, अब दाळगो देमी बापडो । वाना किनी भाव ? पाणी पील अर भावो थारण ल्यैनी ।

बादस्या कियो— जावू हू तो ।

भागचन्दरियो बोल्यो— जा ! जा गिड ! मत ऊटिया चिमकाना । बोदळो ह्यो ।

बादस्या हस, भादप में फस अर जिल्ली कानी सामी हीं मुरे टुरे है ।

बायडो ऊगी नितान आयो भागचन्दरियो सगळा सू पळी खत निरबाळर अळगो ह्यो । धान वध्या खेत गरणायो । फूटया भाग फकीर रा भरी चिलम गुड जाय ।' घरा अर आपरी तुगाइ न खत री सँ वाता वतार । बोल्या—'अे राड अे !

लुगाई घोर कै सू कियो— क ह्यो ?'

भागचन्दरियो बोल्यो— तुग्यो मिर जणीतागो । करम में ता कारा भाटा दग्गड ही लिख्योडा है । तू कागी खेती हाळो हिनरडो कराव है । धान कीरें बाप रो ऊगे ? वेमाता तो भोड में राड भाटा ही माड्या है, धान कठ सू नीपज । सिट्टा म अन्न रै दार्यो रो अकार बोनी । खाली पनकाळा सा काकग पत्यर चिलक है । वेगी खेत चाल जको वूटा न बाडर नीच नाम्बा अर खत नै सूया करा ।

दोनू जणा भेन गिया अर लीलाकडव लीलाहूर वाटण लाग्या । गिटटा समेत धान रा वूटा वाड दीना । कडबा रा सायरा करघा, पूळा रा बायळा धरया जद बीरी लुगाई बोली— सिट्टा म दाणा री जगां मोती सा लागे ! की स्याण मिनख नै बलार पूळा तो सरी !

भागचन्दरियो बोल्यो— भाड तेरो ! नानडिया भाटा है नीं ? इसा ही हुवे जाण मोती ! दग्ग्या घणा बापडी मोती ! पूळा रा वेगा वगा भारा ल्या छिवरा चिणा !

छिवरो छायो बोनारो आयो । खेत र सार लखा विणजारें री बाळद आयी । भागचन्दरिये दग्ग्यो अर हेलो मारयो—'आत्तर

ही रागी रे । तरा बल्लदिया न । खेत म मेरा पूछा बोधोडा पडघा है । बिडा दिया तो तन खाये बिना नी छोडू नो । लखीबिण जारो तिस र मिस नडा आयो । बूक माडी सन करी भाळो बध्या धर पाणी पीयो । सिट्टा म मोली अर लाल देखर बडो राजी हुयो । बोल्यो — तेरा पूछा बच है के भाईडा ? भागचदरियो बोल्यो — बचू हू भी त ले । काकरायो कूचो है । बाळमाके ? रावडिया सू बाटाराड है । धन पमु री तो जाड नी जागती । छान उपरियो भना ही छा नया थापा तो पैली साथी कथा हा ।

लखी बिणजारो बोल्यो— तेर भाउ को करो, तू तर दिवर रो सराशरी मोन बतायदे ।

भागचदरियो बोल्यो— द देई तेर जच बिताई । तीन जार बीनी तो दसीक नी ? थोर के हयरफी मागू हू हाथी घाटा तो नव ही बीनी ?

लखी बिणजारो बोल्यो— हुवा तो रोवडा पचास रिपिया मू ।

भागचदरियो बोल्यो— उहू ! पूरा नैस्यू ।

लखी बिणजारो डरयो अर बीन रिपिया चडग्यो । बोल्यो — मित्तर रिपिया न्यू । देणा हुव ता द ना तो राग्य ।

भागचदरियो बोल्यो— मित्तर मित्तर जाग बीनी मू तो पूरा तीन बीनी नैस्यू धर सो गो सो दैस्यू । डोको ही गत म सधूनी । मेरो का गारो मळयो करणा पन्ना । दताळी अर बू धरो दणा हुमी ।

बिणजारो रो वाळ माई जार जार मोकळा लानी गाढा ही थाया । दिवर रा भाग्य बारानो गाग माथ जार उमरा म पडघा हीरागना गुजारण लाम्पा । बोल्यो — अ धानिया रावडियाळो

तिणबला भले बुहारल्या के ?

भागचदरियो बोल्यो— बुहार-बुहारल्यो ! भलाही, चालणी
स्यू छाणल्यो, छालै मू ख्ळकाय ल्या। तारी छाडो राम जी रो
नाव । वस ! बोपारी नै राम लावग्यो ।

सतकाळी पडी गाव वाली हुग्यो । अनर दानां घेर घट्या,
भय मू भगडा सफ टुया । घर ऊरा थनी घर कबहुा करण खेतण
नाय्या । माया नवै नागगो । ग्यारस उमावम ही नी तला चागा
अर पचाला जिमा वरत दटोलिया तथा उपवासा री भजी लाग
पडी । अणहत भाठ सू काठी हवै । विगनी रा किमा विनायक !
भाइ भीड म पडना भूल्या । माथी सहजोग री वानीं वर कर फूट्या ।
तुगाईं कियो— 'घव भूस्र मरता मरम्या नागडलादा । घर म दाणो
न कृणको । गाभो न लसा ! अग्वो अळो थंळा खा बैठ्या । अखद
रो बीज नी छाड्या । घर म दाधो शेवण नी रियो । का तो मऊ
चानी टुरो का थारलै घरम भाई इकवर खनै जावो ।

बोल्यो— आय रात्त ! वो तरो वाप अब कीकय
लावमी ? भोग्यू ओळप थोण ही है ? मू ता बीरो गावहो ही पूरो
कोनी जाणू ।

बोली— 'जाणतो के है ? वा तिली रो वाग्या वताओ-
हानी ? कूडे ही घोडो नी कय हो ?'

भागचदरिया बो-या— 'ऊह ! वादस्या ? वादस्या भळे के
बनाय हवै ?

तुगाईं बोनी— राजा ।'

भागचदरिया (मूढा मोडर) ऊह धिराणीगोकाधो !
राजा बिना को चालनी ! काठियो फाटै ।'

कटीन जाव ? पोर सडा सतरघां न किरप आई धर तारव रो नांवी
 नर गळा वताई । पण तारव राने रो भाषो नीय भूवर र्पतर
 खानो दफनर खानो । पूय्तो अेक आयो । वात्स्या र भाई नै कुण
 लडे ? कुण पाल ? निरवाळा कचडी म बटो निमर है ।

राजा वादस्या भाग उजळा पुयायो । घराणो जोव,
 भयान वटायली टावर डबाव है । भागवदरियो घागणे पाजी पण
 विय पर इक्वर वात्स्या इधका राजी । वादस्या जाण जिण न कुण
 नी पिछाण ? एव ताजामा सिरदार रो नाड कुवरा सागे ब्याह
 माड दियो । गाजा-वाजा हुव, नीयत निसाण घुरै है । भागी रत
 वादस्या र घरम भाई री सगाई र म व-गमूरत री खुसी मनाई ।
 "याह र दिन सर सचनण हुयो । लोगा अचु भो कण्यो । भाई हुवै
 तो इभो हुवै । एक मुत्तम रा भाटा भान ता दूजो निरसन री गरज
 पाल है । किमीक गान ? किमीक सट्टा ? कूटरो हुकाव उजळा
 हयळना । चवरी म गाव अर इजाग रा हाथी घोडा तिथा हीरा
 प ना यारा आया । मोठा मवरा गीत अर सारा सृण मनाया । मैड
 म दाम तमाम गोग उच्छाटळा, कुवर जो र कोडा में वग । सामू
 सपमपाट कर साट्टच माळियो सजाव । आयाडी सुगाया जुवार्सा
 न उपर माळिय वृत्तावण खातर उतावळ कर है अर टावरा न टोच
 तगड है । फू फटा फाफी तिथा अधरातिथे रो इतजाम । मू निखाळी
 अर देवा नवी रै नायत ग जाव । राखमी रीत सुगाया रा नेग ।
 काई गादा माग काइ दूडो देव है । काद आटी घाल हे कोई पाळी
 बोल है । वारी वारा मू मगळी वतळाव है पण कुवर जी मुत्कार
 ही नी है । जद सग धापर आपो आप, आप आपर घरा जाव है ।
 जुवाई जी एकला हुव है जद ऊवा भाई है । माळिय री भीता
 माव माड्योनी रग रगोनी तमवीरा दव दखर घणो राजी हुव है ।
 एक ऊर री सीवी देखना थको कान म भागळी घालर तेजो अगीर

देव है। व्या रो घर, व धे री रात, कोई सोवण री बात ही नी कर। तुगायाँ तायजा सजावै मिनख सीग वाही री सला सूत मोच। जीमावणिया काम मळटावता थका दिनु गै र रमोवड रो सरजाम कर गोला नाला वरतण भाडा हाथवसू करता ठावा घरै है। अचाण चका तेज री किरळी मुणीज है। स वाला र। चिद्धा में भाटो सो पड्याव है। स मिनख चौकना हुता कव— ओ कुण रे ? सगळा ही पाछा पण्डळो दव है— कठा कुण है ? तजा गाव है।

तुगायाँ वनाव— कु वरजी दीमै।'

सै मिनख कवै— कु वर जा है ? ओ तो कोई टरडो है। का एवड रो याळ (गुवाळ) है।'

तुगायाँ मियो— सरडो ही म्हाँन लाग्यो।

वीनणी रो बाप बायो— तो को सीख ना वाटी, मूका ही वाता। धाया हुंया। बादस्या ठग लाना। दूक लगार काटिया कर दाना। छळर काज वाड लिया। पण रावडी रो चपा कित्ती ताळ ठे ? कु वरी म भारा भीलो पडग्यो। बटी रा जमारो अडावता भाड न माठ अर नो न मो क आवै ? घरा ही कु वार-काटडा चिणावणा पमी। जन न कागो वगी मार तडार। वीनडै न न गळगोला अर अरधच र गिनाया। हुकम री ताळ। रावळा वावळा। पा ड मिघ पग्बत मिघ। रावजीकान गर वरत काई क ? आघो माप न वै क गिरै ? माफमाठ अर मूरवा, नाहुंया वणण न निया ही पापिया पग। अर हुया ही भागचदरिये री भारणी उतारण नै त्यार। केई जान म्हाँनी गिया, केई माळिय काना मू वा हुया। भाग रा घरणा काप्या, तरुदीर न तिरवाळा बाया। अकल हसी अर बोली— कुण घडो ?

जद भाग अकल न बोयो— म्हारें मू तो अब की घरी नीं घटाज । थू काई वा तिथा उपा सगा ।

अकल बोली— निरळ आषो ! जगा सुधरी कर ! म्हू ताण मारू । अत्र तू म्हारा मजा जो ! बनी रा चाळ दख !' भाग भुवाळी खाई ! अकल माम न आइ ! वरो ऊणो, चचळाई छाई ! पामो फुग्यो भागन दर बुधच दर वण्यो ! उठर बळ्यो अर आळ मू माटी पोथा कादर बावण लाग्यो । घोना बोला आय, मैढाळा लागीं साधा वूकिया भाल्या । कठा रो मैल उतारण उतावळा वृया ! बुधच दर तेवर बदळ्या अर ऊपर भाकतो थको बोल्या—
क्यू ?

मूरवा म साग ही बोल्या— कोटडी मे तेजो कण गायो ?

बुधचटर बोल्या— सिरणारा स्याणा ममभंगार दीगो भाय अकल रो बीज ही कोनी के ? अचाचू करी वात किया करो हो ? तेजा अठ कण गाया । नीद नी आई जद म्है भागवत काटर भणनी पळार् ही । दमच सकध म राग गीता र वियोगी छटा रा पाठ लय मू बावणा सर करधा हा । एतन ही ये घा घमक्या । (रीम मे अर) घाय घराण रा राजो हो तेज र सवाय की सुण्यो हैकनी ? थार अठ आया जट तेजो गावणिया भळ वाया । ' मूरवा वणनिया री उपरवी जाड उपर अर नीचाळी नीच ही रयी ! की बोच नी मक्या दडकी जम्या ! बुधच दर री स्याणो मोठी वात सु सागीडा सरमीटा हुया । पाणा जतरम्यो सतगा दूम्या । विरगगवतामा बोल्या— कुवर मा म्हारी मोने गळता हू अत्र माफ कराषो !

बुधचटरगिध वाया— गळती म्हारी हूई मा जिको आपर अठ भाया । था जिमा मिनसा म म्है जहा जितावरा रो के काम ! पण नख वमाना रा लिम्बोला टळ किया ? कोई वात नीं ! म्है

म्हारी जान नै नेपरो जाऊ हू, ये सँ स्याणा सरबजाण थारो काम सुधारो । इसो ठिकाणो म्हाने कोई भळ लाधमी । स्याणा री क योडी बूडी घोडी है— वर या अर प्रीन सारोमा सू काजिये । बुधच दर सिप ऊवकयो उळ्यो अर फफेरी खाई । कपडा पैरघा साफो बाघ्या तरवार गळबढे घाली अर मै ल मू हेठ घाया । रावळे म लळबळो मची डोडी म हाका हुया । लोगा काना वाती करी सामू आडा फिरो । भारी भाळ्य वही ।

मिनख अकल मू उजळो हं घराणै मू नही ! विद्या अर बुवार मू वादीलो है रूप तिथा जात सू नी । धन रा कोयला हु-याव माया मींगणा म बढळ ज्याव । कुळ रो जस जापर नाम-नामून नीर भरै । पण ग्यान गुण अर कळा कदे नी फीका नी पड । भागच-दर रा कठ भाला जिका सामो हा मिनख बुधच दर्गसिध मू सागोपाग मवकीज्या । दाना निणोल्थ आठफरी दध ।

जान में चणे चणे हर्त, मैलाळा ठमो-ठमा कथी । पागड्या मन्नी आण दिरायी अर वरात आग आपरी कठनाइ गाई वताइ । छकड मोकळी भीड री हाया जोडी र ताण पागळिया सू पनाण पाछा उतराया अर नोरा विनता र साग मीख दीनी ।

भाग नुळ्यो अकल न वडी वताई । हारा पना रा नसाव हुया । लखी विणजार री ब नी नळव करी । जाण र पाण अर जार सू म भाई-बीरा भुक्या मूरखता रा सारा मामना लुक्या मुक्या । अकल अर भाग री लारवी राड मिटी । भाग हारघो अकल जीती ।

पीरदानियो



निगतर फटाक ! निगतर फटाक ! फीडी जूनी पोरा-पोर
मण मण री हुरयो है । भीजी भू गिच पिच गिच पिच चूरयो है ।
कादो कीचड गोबर अर खोलनो, बगता भातळ-भातळ पड़ है । लाग
तिमळै फिमळ अर नामा हुव है । चळा भर टापर चय आभो दूध
वरण हुरियो है । गृदड सीला गाभा ईला आवा चूला चाकी गीना
हुया गळ है । भासरा भांगण खरीज गिपा है । वासळ घर पिछोकडा
ओ डा सा भरघा पड्या है । बूने बठो मिणियो घुलाव जोनी मुन
पाव, डोकरी आपरो भाटो आमण हाय पग तपाव है । छपर री
जूनी जगा, टवकी, ठेगा टाड घर टगा : पीतळ री मोटी पुराणी
परत छानडी र ओल काठा गाना री कनात ! भाठा रा ठिया
तोणकाळो तवो, वेवणी री वोभर रळका रळकार डोकरो वूडघी सू
चिलकता चिलमिया चाई है ! ऊभनी कळी नामो नचो घर आछी
नडा डण डरडकाव है साग साग पाणी ही पूरो कर है । घाळी
दाडी मैदी सू रग्योडा ऊपरलो होठ सफा पण ठोडी पर भासो सी
जट नीची लग्योटी । स्तारक सी चामडी सफा सळ पडघोडी बोरिय
री गुनी सी भास जावक बळ्योटी । धोती रो आधो पाट गाठ * र

पैरघोडो गोड चन् । तैमल री तजबीज मू निवाज पटै । चीपियो सोधै वावळी सिरकावै, फूटेडो लोटियो मू ड रै लगावै । लुगाई माथै जामदारी जीमण री जुगत, मूरज ढळग्यो लारनो वगत ।

निगत्तर फटाक ! निगत्तर फटाक ! अँ सलामे घालकम !

वामकम पित्तम ! डोकरी बोली— 'कण पीरदान ?'

'हा माऊ ! पीरदानियो ।' — पारदानियो बाळ्यो ।

इत्ता दिन कठै हो मेरा नाडना ?' डोकरी पूछ्यो ।

'ओ हो तो माऊ कामरू दस म हा अे !' पीरदानियो कियो ।

इत्तो मोडो किया आयो मेरा फरजन् ?' मा कियो ।

ओ हो तो ! इत्ता दिन बठै मीढियो वणायोडो बैठ्योनीं माऊ ! कुमण्या री कामण गारी जुगाया कामण म्हारा कर राळ्या हा । हमै ही मम्सा छुडार आयो हू । पग पग माथै भुवारी रा तिण-कता नाखतो थकी आपणै मुलक री काकन् मे भाजर बडयो हू । काकड मे वा जोगण्या रो जर जायक चाल्यो नही जन् ही थोडो हाळ पटयो हू नी तो भाजते भाजत खना (जूता) फाटन खू सडा हुग्या । लिगर फटाक ! लिगर फटाक ! जूत ज्जडता ठरडता गोडा मे पाणी पट्यो । पीरदानियै आपरी आली वाता मा नै बताइ ।

मा बोनी— मुकरिया घेटा पीरदान तू वेरियन म घरा आयो ! पण ! तरी बहू ता मरा लान नानै उठगी । थोडा ही तिन हुया है उघळगी ।"

वेतो बोत्यो— हुआ अे माऊ ! उठगी तो जावण दे ! म्हु (थोई डूजो रडाए तगन् त्यास्यू" ।

हुअ ता घटा पारदान, राटी कर जीमन अर मोज्या

मेरा भूमिया ।” मां कियो ।

बेटो बोल्यो— माठ रोटी ताभ्यां बचाम अ ?”

आ होकना । आ गिला पडी है, मिरचां रा फोनग रगडर
छमक देखू । आपण तो आहा भूरी आहा वाली है । आहा हाडा
आहा नियाळा है” । मां कियो । मा पोशा राट घट बट्टे बग्गी
मिरचा । दटर जीम्हा घर लट्ट हूया । घर रो माना रा छढो भायो
गावगी सुख माता सह हूई ।

ओ होवतो माऊ ! गाव म नग राजी सुगी तो हैर ?”
पीरदानिय पूछ्यो ।

हा बटा । ओर ता सँ राजी ही है । पण अक चौधरि
याळी बटी लानी कानी सुग्गी । उवाट घरा जा भाई । तिनू ग
वेगो थको मिन आई बेटा पीरदान । भाग गागा सामा आव है ।
तिवारी है तडा है पुत्री है बटो है । मां भूमिया काम पड है ।” मां
वात कयी । पीरदानिय हँकारो दिया— ओ हा ! ता मा मेरी
दिनग बात ।”

पीरदानिय रात आडीकता अडीकता काढी । मम्मा दिन
उगायो । भावफाटी लागी चाटी । लिंगत्तर फटाक । लिंगत्तर फटाक ।
सूरज रो उगाळी साधो चौधरया र घरा गियो ‘बडा राम राम ।”
पीरदानिय कियो । बडो ही बट ही घे पडी घर जोर सू मारी
वाग — मेरी लानी अ ! तन कट देखू अ ?” पीरदानियो ही गाण
म सिर धावर बग्गी । आट्या म परळणी पाणी ले भायो । नाक
सू मरडका सह कर दोना । डसका खातो टसका भसका मू वाणा
करण लाग्यो । जट बडी ही थोडी मोळी पडगी । लामी गू घटो
काण लीनी घर मार्ग रँ हाथ देर सायो बटगी । सिसकारो नाट्यो घर
बडा पूछ्यो— कुण पीरदान ?”

‘हा बड़ी !’ पीरदानियै कियो ।

कुन ह आयो पीरदान !’ बड़ी बोली ।

‘ओ होक तो बड़ी ! भगवानग दरीखान हू आया हूकनी !’

पीरदानियै कियो । दहा भल्ले भू ! भू ! रावण लागणी । पल्लो खच लियो मूटाढक तियो अर पूदना—

‘बटा पीरदान तू दरीखान हू आया है—कठ ही खाली को मिनीनीक ? लाली कोनी रही । भगवान न सुहाई नही’ । बड़ी रा तान तिया भोळप नै पीरदानिय चट गुणली ।

आ होक तो मिली ! मिली क्यू कोनी बड़ी । लाली तो भगवान रै घरा सूडा पैरचा बठी धमड बिलावणे करै । पीरदानियै कियो ।

बड़ी बोनी— साचे हा रे पीरदान ?’

‘ओ होक ता साचे ही नी क छूट ही घोडी ।’ पीरदानियो बान्यो । लाली तो बठी मजा कर ।’

बड़ी बानी— ‘तानी की मगायो है के बटा पीरदान ?’

पीरदान बायो— ‘आ हाक तो बड़ी ! लाली ता मनै इतग अटै मेयो हा है । वीरी चीजा रावण नै ता मल्यो आयो ही हू । आप रा सै गणा मगाया है । नू दौंडा जु कारिया लाबडा अर पिक्क रियो मगाया है । भगवान आपणा जु वाच है फाई कोषलिया-आग टियो ही भना ही घानद । पावग वीनी अेक कामळ अर अेक पटुडो मगायो है । पल पोत रो अटा है फूटरा लाग । सी रिपिया घालद नाला नै कना ही अडघं भडघं चाहीजज्य ।

बडा बानी— पर्दे बृगचा ही मगायो है के पीरदान ?

ओ होक तो बड़ी मर मन कितो टोरटो वैज्यो है ? , नको

पेर देवटी जिगी सगें बीजा मे जाऊ ? म्हू ता उडण गटोय मू उतर परो र भाया नू । पात्रो जागू जन् की मोट दरमन माथ पल्यां तडणी पडसी । उडण गटोचो टाळें र सार माग घामी जणा म्है भार घानर भगवान री सरगा रो गलो तमू । सो वढी ! मू पेई तो रेंवण म घर बुगलिया काठ। छार भटकर बाध द । घानी छैन निया छान मोटा मू दडी पार घर कठी-नवटा तागटी पाजव, तीव निणरा न प चाप हानचून कोई चीज ना भूली । पयटी म्हार मगरा म गड जाय । म्हू तो पूण गरी राघर भागमाने चड जा मू । ऊचो उड जागू । थोड भाग मगा व जड हू ? मल बोळू मू वे दवू हू ? घण्या रो घान थोणे ही विग मू हू इम पाड न की कोना धार । वगी मी म चीज वसता घानर भला जकी सरगा सरपट्ट । वहुटा वगू ! पीरदानिय बियो ।

नू वा घणलिया घावळा काचळो कबजिया कागमी कूपना काजी जोधपरो भुगलिया सग गाभा भेळाकर परार बुगच म बाध दीना । फामडली फनू रें रेममी मू भा म काजळ री डवी नीकी दाळिया वामवाळी री मोसी घर घानमारी आळिया री सारी जिनमा घाल दीनी । दो रा टक्का रिपिय रा गाटिया पीमा चाळीस चरा माहो राणी छाप पचाम पचम जारज र निवक दीपना अक पाटेड परतण र पल्ल बाधर बुमी रो लाग कोणळी म घान न डोरडो मू दडा दार जडाजन कर परीर निवकरिय बिचाळ बुगच म दे दी । कीटा कमार रो कटार नान भटकर वणा दिया । कामळ घर पट्टो हाथ म भला दियो । मटकैर सीस दे दीनी घर चटकर सरब वाता वता दीनी । वेटी रो मिर बुधकारणी भुळायो जुवाई नें घासीस वणा वनाइ अर विदा करती यकी वडो कियो— वेदा पीरदान ! जुवाई न नें परो फाळी पीळी कळायण मगाई । क देई म्हारा सेत बळ है । गुवारियो बीज जकी मोकळो म अर समो कराई वेदा ।”

पौरानियो बोल्हो— ओ होक तो वही । मे रो इन्धे के फोडो है ? आपसै जुवाई रै हाय म ही तो है । जाता पाण काळा-पीळी कळायण वरमा देस्यु ।

वही किया— ' तो हुया वटा । वगा सो जा अर मेवडा करा !

खळवच ! खळवच ! डीलो पिलाण । "दु टर थारो घणा जीय रे थारो ! सेन म हळ खोती हुव नी ? वेगो मा गव चाल, पगो पग पाछो थावणो है । ऊमर न ऊमरो को नावडना । भीजा सूकै है नी । ठोकर मारी नलकारो करघो अर दियो सांभी मारा रो मबीड जद हळा सू यकघाडै ऊट थोडी ढाण लीनी । खळवच ! खळवच ! घडा बोले पलाण डाल है । वारो हाल, ऊट दारो चाल है । थान्तेती खाक पिनाव है ऊट गाव खानी घाव है । खळवच ! खळवच ! पासळथा माथ अेटघारी घू काई, पग थवया नही जका सू पनी गाव नडो आग्यो । ऊट उतादळो घर कानी चात्या । भूचो मरतो ठाण माथ उलळयो । अरडू । खळवच ! खळवच ! थणी जीय र थारो ! माड आगै ही ज कग्यो के ? ' चौधरी कव है ।

चौधरण बोली— घरे किया आया लाली रा बाप ? थ कवा नी 'सो खेत बाजर ही घरा आस्या । विघाळ ही किया भाज आया । '

चौधरी बोल्हो— उ हू राड ! गुवार कठ हा ? थोडा सो तो घाल्यो हो । गुवार निवडय्या लवण न आया हू । जाण्यो ना दिन गुवारियो भळ बीज दया । भूल चकर राम जी दाणा द ही दव तो हाल हुपावा । वेगो खोल कोठलियगो साहिणो गुवार काढा । ' चौधरण कोठलिया खोल्हो । चौधरी दोवड भावर्ल में प्यार मण गुवार रा माटका सू मिणर दो लोदा बाध्या । पाछो खेत जावण न

गम्बो भर बायो— घटकर जाऊ लीरा भद्र गारै म मङ्ग पङ्गी ।
 मान बोली । पही ही निरैनी । मन बगानो बाबानो है टगा-गरपार
 गाव । बाबानो है । बाबगारो मं बाबपा मङ्ग । है ता बगार ही पग ब्यार
 गो रिता गाग है । बाग ऊपगो बीरै । मरगा रागू हू । 'मन बाबोडा
 गावगा ता रे घो दे सागू लप । बोई हा बाग मरगू बोई हा नी
 कर । इहल्लग मङ्ग घर मङ्गबाग करवाकरै । बोई हल्ल मङ्गार तोड
 मङ्ग गो मन ही गापळ करणो पड । बोई माडो भाडो कर तो मरै
 लो मोहणो (हल्ल) पड । बाबग निरंग रोत्रिया पोवर दगू जीमाऊ भर
 विद्यार मुवाणू । मगळा ऊगनें पशगू पाऊं बागू घर बारी-बारी
 गू हल्ल जोडागू । घोडी गी ही बाई बाबळ-गावळ तिया सोन्वो
 हुज्जावै तो बाबा । बाबा । बांग ती देवग राग उपाय । बपा रो
 मन बावणा है ? मेरो तो दाती रा दोडा ल तिया । घाड-गोर
 बोन्ड घडा लफगड करणी पड । तमिमो तिया मापगग है । घेडा
 उग करता घर विचाळ विचाळ फिरता रवान आगो । घेडा के है
 मग है । अबकाळ तो दोरा-मोरा मर पहर रोका बडागू भाग
 माळ भाग भाग रो नीचोर भोडो । मङ्गार गू तो बो हि-वरडो तावै
 भाव नी । बागो समो (तमानो) हु-पाव तो मळगा करदू ।

चौधरण बोली— मोटोने छोरो रोमलो लहाको भोडियो
 मङ्गघो घर उलाडो है । जवा नै अत जदो करदघो दाटिया तो घणा
 पददा कोयनी कियो बाग कर बोकरसी । सूपा ही है ।'

चौधरो बोल्यो— तेरा जायोडा तो स अकसा ही है ।
 नू म मोठ म बोई घाटू कोनी । क बूडी थोडी है— 'इसी खाट इगा
 ही पाया इसी राड इसा ही जाया । इसी इट इसा ही सोरा, इसी
 माय रसा ही छोरा । बापडी अक छोरो सावळ ही जकी बघू जीय
 ही आगीन गई । रामनी न प्यारी हुई ।

चौधरण बोनी— हा । लाली रा बाप । इत्ता म तो छोरी

खोली ही । टीगर तो कुडी बिगाड है । सग धार ऊपर गया । थ कित्ता भूजोक्डा बळोक्डा हो ? बिता ही सँ थ सबळवादी है । साची कयी है—‘भा माथे डीकरी, घड जिसी ठीकरी ।’ म्हारै माय तो लाली ही जकी रामजी र घरा बठी राजस कर । दूध म राधे धी म खाव । रामजी जिसा जुवाई कठै पडधा ? कात ही अल्लादीन जी हाळो पीरदानियो समाचार समर आयो हो । बीर साग लानी रा मगळा गाभा चीरडा घात्या है ।’

चौधरी बोल्यो—‘अरे राड ! किसो अल्लादीनियो आया हो ? अ हूमडा-डुगणा ठग बळ । की दे कोनी दिया है क ? वै रा वाता किया कर । पून निकळगी क ?’

चौधरण बोली— हा लाली रा बाप ! अल्लादीन जी हाळा बेटो पीरदान, भगवान री दरगा सू आयो हो । आपणी लाला रामजी रै घरा चूडो पैरधा बँठी घमड विलोवणो कर । जब वगी पीरदान साग चौधरी वान थोटर— अरे राड ! की दे को दियो है नीक तेर बाप न ।

चौधरण—‘हा लाली रा बाप । लाली वगी पूर पत्ना अर गणो गाभे तो घाल्यो है । छोरी में हर वगत फोडा पडबोकर जब वासतें खुल्ला टका पइसा अर स रळार सो रिपिया पीरदान न दिया है । जु वार्द खातर कामळ पट्टो साग घाल्या है ।’

चौधरी कियो— अय राड ! तरै बापगो मिर ! लानी घब कठ बँठी है ? धीनै तो बाळर राख ही कर आया । हूमडो मन ठग लग्यो । बता तो सरी, कुन्न मयो है लारी जाऊ ।

चौधरण कियो—‘दरगा गियो है लाला रा बाप । अकूरडी ऊपराकर खोड हाळ गलै ढळयो है ।’

चौधरी—‘जणीतागो सिर गयो है तेरो । खळबच !’

खटवच ! ऊँट नै नियो पीरदानिय र मारें । गाव सू तिरळ्यां ही चौधरी रै चकरुं पीरदानिय रा भाजी भू पर त्रिगत्तर फटाक मन्थोई रा रोज भाग्या ।

माही गी पग डांडी गाथां रो गी बो माग्नेत ताग्नेती चावता ग्वेज टो घो ! ऊँट काटो काटो हुव ! गेतां गू ऊध (दूज) मारग च्या चाल ? जण चौधरी जकाण र फोगां रो मोगी मोगी पाच मात छडी तोड नेवै है । कामडा देखर ऊँट डाडी सूवो हुमाव है । खळवच ! खळवच ! पिनाण रै घटा रा राड्या हुव ।

त्रिगत्तर फटाक ! त्रिगत्तर फटाक ! पीरदानिया भार म नहु पडू हथोडो भूय मरण न लाग्यो । मिरचां रोटी गळगी घर भीठ पर जीभ दळगी । फगीरदान सोवो मगद अर कीटी खावण वळ्यो । घापर दड हुग्यो देजो प्रघग्यो । गीला गीला मुवाद सकर पारा टोकर हात हुग्यो । पड सू थकघोड (पीरदानिय) न अन रो घळ घावण न लागगी । आध घुळगी आळस भाग्यो । आड न्ह वरण रो जीमें करती । बटै रो मीट नागगी । ऊजळी रेष्टळी माघें कामळ विद्या गडडी सिराण मे नी अर लारन भावतो मुडतो चको अपूठो फुरर आडो हुग्यो । लारनै मूड माम ऊच घोर पर भयरकाळी लीची बन ! जनी गाव रो आसा रुडियो वाज । उच र नीच कर गाव नी गला आव । घो इकळग गाव सामो देख । समटक नीच लव नही ! चारडर म माव नही आड पडय पीरदानिय रो आमा रुडिय कानी करडी निजर व धगी । ओभक सू नीदही उडगा विड रगा । गाव कानल घोर सू दळन ऊँट माघ दोना कानला तटकता पासळिया बोरा रो खाती खूज जमी पर उतरतै चील कावळ रो पाह्या सो हातती दीसी । खळवच ! खळवच ! खळवच ! अेडी पर अडा घाची मारी रा भचाड अर कामही रा सबीड उपडता मुणां प्या । पीरदानियो नूत्यां ही चमळक्यो । सलता थोतर भाज भीर

यो ।

चौधरी पटपट र हाथ देर हेलो मारघो—“घोरे ! हूमडा रे ! खडो रज्या, नी ती तेरो बाबलियो ही तामू ।’ जाड भीची अर तडातड ऊट र कामढी मारणी पळार्ई । पीरदानिय ढाण छोडी अर पाळो भावघो पट्टे थूक मुट्टुघा में जोर री तडी दी भाज्यो । चौधरी ऊट नै ते पगा बीचाळर ताण मारघो अर कियो—
‘रडकी हाळा हूमडा खडो रज्याई जावण द्यू तो कोनी भवोक । विल में बडघो नीं छोडू लो । का सारें भाग मानज्याई । तेरा च दरमा मोच रेई, मार बिना का छोडू लो नी ।

पीरदानियै दूजै मळे लारनै देण्यो अर—‘तुरत पुढी तुर कडो पिच्छम बुढी जाट हाळी कवत र अनुमार साचतो थको मारग मायल मोट खेजड माथे चड बैळ्यो । उगणा पग मगरा में गठडी अर आड लामे ढाळ माथे लूग माखर लुक्घो भाके । चौधरी कनकर वडै टपै जद खोज सिड है । भच्चकर भाजन ऊट नै टाम रेथै । बुचकारी दे र दोरो सोरो ढाप्रताव । चौधरी ऊट सू ऊतरै करडो करटो चालै, आकडीज्योड डगर नै तर्चै है अर सोजा पर जावै है । अचाणचके ही खेजड रे ढाळ माथ दीसो गाभा री गठडी ढानी, दात पीस्या अर गाळ वानी । कियो— अरे हूमडा ! नीचै भाज्या ।’

पीरदानियै अगूटो दिग्वाळयो—‘घो ले वडा थो ले । कोनी आवू ।’ जाट नै आई रीस ऊट न हो जठे ही गळे नीचै छोड्यो अर आप झूती खोदर खेजडै चण्ण नै लाग्यो । जोर जोर मू दूकै है गाळा ठोकै है । पीरदानियो हमै वटरी गाळ घी री नाळ सी समझ है । चिडाव है अगूट दिग्वाळ है—‘घो ले वडा थो ले ।’

चौधरी दोरो सोरो उव र खन जा पूग्यो अर लगायो सागी ढाळ रे हाथ । पीरदानियो लटकग्यो, थकयोडै ऊट पर घाल ढाळै

र बांघर छिटकग्यो । ऊट गग्घायो, पीरदानियो पनाग पर भुरघो ।
 घोही पकड र सामो पुरघो । भागल आमण वट र गडही भाग
 घाल ली । नस पर हाथ देर मोरी भान ली । फीपां नीग गाव ही
 सौस भाग्यो । बोल्पो— यहा दरगा जावू । दे बळामिय पगर
 उगर टिचकार दियो । तपेड हाडां ऊट सागण ही पाछो पडध त
 लीनी । एक द में तीसू पावडा जा सडनघो । चौधरी डाळ उपर
 वठ ही हेतो मारघो— अरे ! पीरदानिया पाछो भाग्घा । वड न
 मठ फोन्ग घाल बेटीगा बाप । परगो ही छोरो है, की को घू नी ।
 पण पीरदानिय तो पाधरो चट्टो अगूटो दिखाळ दियो । जण चौधरी
 सिसकारो नागर कियो— ऊवो चड तळ नै दस जा घन गिया
 सली सख ।

आंधियो-पंगलि घो



घामै माय धु घोडी रुई रा फनसा भूरा घोळा बादळ सोघा हो आवै जाव है । घाट्या फाड घाप्या पण छाट तो उडर ही नी पडे । नीमी पर लाव सा वरसै तावडाळा इमी किरड पड जाणै काळो उभाळो है । सावण मूको ही जावै भादवो घघावणो आवै है । फोगा री मूकघोटी छड्या रो हृद्याभतूळा सू सढीड ऊपड । ऊमस आपरै तातै सास सू वसरायला वाटका रा कोयला कर काकरा उद्याळर वाना में गिलगिली सो भरै है ।

आधियो पंगळियो सून घर सू सक्कर वार आया अर वारलै गावरी गळी रै नीम री ठडा गीली वेळधूड माय गुडकगिया । सिसकारा नाख्या, उबासी खाई अर बोल वतळावण करणी पळाई । वमका पाग्या अर डसका म्वाया पण उजड गाव म कण ही नही वन लाया । लकोर रावता अर राखसा स रुखाळी किया करता, जका माईत रातरात लदग्या । उवाळो घानग्या अर आधियै पंगळियै न राम र डोरै सूता ही छोडग्या । कैवत है क 'काळा रो क डर है वाळा रो डर है । विमा बाळका नै लोक काळा स नी काड सक्या । वैचर खाग्या मऊ माळवै पटक दिया तिथा परभोम म नाख आया ।

सूना लगदा न परी दाइया बरी रो तो बाल म कैं बा ही क है ?

टीली मारी जिन्ही बरी घर मावला ही नांवा म गर हाको मपायो । दानया गिर घोदा कर निया पण तेनां रो उपढी टही वगी सू थाप रो लाफरी मिनती रियो । घोरा न तातां म, गाप रो गा रो म आधिय पगळिये रो दुगी उरात्र सू ह्या न्या मूत्रग लागयी । बाल जरळ करती फिरप बळत उता, पण ' कण हा ब' जाण विया रा भागू नी पू दया । माई पण पुत्र न बारा गिया जकी वान आधियो पगळियो जाणया । थाप रा उपाव मोरग माग म्या । भरता क्या नी वरता ?

क करी रे भाई आधिया ?

के करा रे माई पगळिया ?'

पगळिये बियो— बापो घर माऊ तो रात र पण मऊ खानी उठया लाग । आपा न सता ही छोण्या ।

आधियो बोया— भाई पगळिया । पू म्हार म्पोळ बर क्या घर मारग बतातो र । म्है तन लर माईना र तार वानू ।

पगळियो वा यो— चात तो भना हो पण मां बाप आपा न के हाय भाव ?

गाप सू गती कळी आधिय माथ पगळियो पाचो । रीछ वानरा ग राम शर भोला रा भगवान । घर वू चा घर मजली । खालता रिया । हागो नीं नाह्या तिमंत राची । आगणां पिंगता चालता चात्रता विधा र मारग मे जक सुनी गाव आयो । गांवरा माणस तो घणखरा रावसा खा नेवटया तिया ऊपरया मूवरया भूख र विख मऊ माळव भाजया । सुनात्र पटी भूत वम पिनस रो नांव नां गडकडा भुस । वूव र सारण सू पगळिये रो सुवारो बढी । मारण मे लामी पसरी लाव सू टिपतो आधियो उळमर पडपो घर

बोल्यो—“के है रे भाई पगळिया ?”

पगळिय बताई—“कूव री लाव !”

‘उन भला !’ के परीर सरड देणी लामी पडी लाव नै
आधिये खींच लीनी पर बोल्यो—‘ड री तो मेरी तागडी करमू ।
लाव न सावटी नाके म बाध्चोडा कोस आयो । जद आधियो भळ
बोल्यो— इरी तो मेरी टोपी कर मू ।’ भूण उतार परीर काख म
दे लियो अर बाधा— धा ता म्हारी माला रो मिणिया है ।’

पगळिय न चडा परीर आधिया पाछी ही चाल पड्या । गांव
सू वढता ही अंक ब्यायोटी कुतडी री घुरी आयो । ऊढे दरडे सू
आखडचो अर कूरकूरिया चू चाया । आधियो बोल्यो—‘अ क है रे
पगळिया ?’

पगळिय कियो—‘कूरकूरिया !

“उन भला म्हारी चू वरू । आधिय कियो तिया कूर-
कूरिया पकडर काम म घाल तिया । कामडो जच गियो, भटकर
भीर हुयो । घर चू चा । घर मजला ! चालतो रिया । मारग में
अंक स री घुी आई । स री मूळ वाती मुणी अर आधियो चौक ना
हूतो थका बोल्यो—“अ के है रे पगळिया ?

पगळियो कहे—‘से’ री मूळा !’

आधिय कियो— उन भला म्हारा पटिया कर । कट्टो
भरर से’ री मूळा मावें में टाग लीनी अर टुर पडचो । वणता वणता
मारग में अंक हूजो गावडा ओजू आयो । ऊच उठ पगळिय अंक घर मे
अंक वूडी डाकरी न विलावणो करती बँठी देखी अर आधिय न बताई ।
आधिय, पगळिये समेत आखो अटबर डोकरी र घरा उतारया अर
विमूणी मारण न बठ्यो । डोकरी आपर घरा बटाउ आयोडा देखेंर
पाणी न चाली अर बोली पर री ख्यात राख्या । म्हू पाणी रो घडो

से घाऊ हूँ । पगळिय हजारी भरघो, डोररी गिर माय पटो धरघो
 अर घाधिय घर में सोपा किराळा तट करघो ; द्या रो विनायणा
 थो परोर— धो के है रे पगळिया ?'

पगळिये कियो— द्यारो बिलोवणो ।

घाधियो बोल्यो—'उन्नभना म्यारो दूव करू । घागा
 धोजा र माय बिलोवणो भळे माय मार पगळिये न काप बटा
 लियो घर आगरो पण नटो कियो ।

उज्जड मेडा मूना घर गिनत ना तुगार्द रागस घर मर ।
 मरी रो हळो रागसा रो पूळा, गावरा गांवगो कर दिया ।
 मिनख खा नवडघा तोन ग काम तवडघा । रागसां री जमात जुगत
 सू र व है अर मावळा माग मलादा उढाव । घाडा दौड घर
 फोडा करे अर दूर दूर री दूकाना फाड ल्याव है । रात्यू द्याष्ट्या घर
 घोरा घोरा पर लाग्घा कतार सा वगै भूता री लगर सी लगै है ।
 खाड रा कापा अर धी रा घडा री राखसां रै घरा अढाभोड होरयो
 है । सीरा भोजन राघ मोरम प्राव घाधियो पगळियो हापरा सा
 भेल्या सीधा जावै है । रागस आपर आयोडां वटाउवा न डेरै मू बला
 धण वेगी नीसर है । लारै मू घाधिय पगळिय न मूनाल लाध जाव
 है । घर रो कू टो खोतर माय बट ज्यावै अर घाडी भोगळ जड लेवै
 है । घाधियो आप रो सारो भार उतार परो यवपोडो गुडव ज्याव ।
 पगळियो होळ होळ रागसा रा रा घोडा सीरा भावू मळवाव है ।
 भूखो मरतो सगळो मरजाम सामट लेव है । ऊवरयो सूवरघो भळे
 आपर वेगी धूणा खचूणा में लको २ सोव है ।

घाधियो वृक्ष है— भाई पगळिया ! भूखा मरा की
 खावण न है के ?

पगळियो बोल— घाटो पडघो ला धो है जकां रा रोटिया

पौऊ, तू दहज रै किवाड सार सिरदे परोर सोज्या । कू टो काठो राखी तकडो रयी तिथा दबडक मारी । राखस घर में आयग्या तो घापणो अक गबळको अर गटको कर जावला ।” पगळियै परात में घाटो ओसणर घूल में वासते जगायो इत्तै न ही तो बाग सू राखसा रो बोलारो आयो—

“भायनै कुण ?”

आधिया पगळियो सभर बँठ्या अर जोर रो दाकळ सू पढ उथळो दियो—

“बार कुण ?”

डरता सा राखस बोल्या—“बारै म्ह राखस !”

मलकार सू—‘भायनै म्हे बडवाखस ?’

राखस होळसै— बडवाखस के कर ?”

सामा बोल्या—(चिरडी भीचर) ‘राखस के कर ?’

राखस— मिनखा नै खाव !”

बडवाखस—(दोनू दात भीचर)—‘ राखसा न खाव !”

राखस बोल्या— तो दिखालो थारो वाई सैनाण ?” जद आधिय पगळियै रै किय मुजब साळ रो सिर सू उची वारी सू लाव नै वारै पटकी अर कियो— आ देखो म्हारी तापडी ! राखसडा चकराया ! इत्तै न ही वारै खन कोसडो जार पडघो अर सामे ही उ थावळी उवाज गरणोई— आ घो म्हारी टोपी ! भच दा देणी भूण भळे वगायो, जका र नीच अेक दो राखस आयो । आधिय बतायो—‘ मो है म्हारी माळा रो मिणियो !” राखसा न घूजणी छूटगी । जित्तै नै ही वारी सू से री सूळा राखसा र खुभाई जुभाई तिथा चपी, जवी बिया रै हाया पगा म गुडी बडी अर टूटी । आधिय ऊपर सू कुकरिया भळ पटवया अर पटिमा तिथा जू वा रवा रा नावटा सामे ही बताया । उपरोथळी छा रो विलोवणो खिणायो,

गल्लियापो घर धार रै घुस री भाग दिनायो । रागमा रै ह्योर्ग माय
पनी घर कडाई आयो । टुगली कर पण हांगे ॥ परी भाग बारण
ऊभा टर है । छेहड करणी छानी कर परी गल्ल री घारी गल्लो भीन
रै गारै वेई धोडी धोडा मग्घा घर बँई उपर धग्घा तिया गल्लो रै
मग्घो म न माथ ऊवतो थक रागग घारी म मूतो घानर गल्ल मे
दगण राग्या । जब वगन हा आधिय पगल्लिय री सवाण दिनायो ।
पगल्लियो रोटियां तकतो थका थोस्यो— उपरतो मभीन नागनो
(रोटियो) ?

आधिय भूस मरत गिरडी भीनर कियो— होय मू तो
सगळा ही खानेगू र । ' चोर न पानवी धाजो ही धो । रागगडा
भीन रै सारै मू दडादड ! नगानड ! द पटया । बो बो मू आग
अर थो वी मू आग भाज भीर हुवा । पत्ता तोड रा गिया । नारन
ही नी भाग्घा ! देग्या ताग ! तेतीसा अर तडी । सावरियो
सबळो ह्य ता अवळा हुवो अतेक ।

घाव में घोबी थकघोड न जोशो अर बाळक न बोबो आपे
ही आग्घाव जिया ही भाधा पगळा न राखसा री भेळो करघोडो
घन हाप आव है ।

आधियो आछो, पगल्लियो पापी धन धन मोक्कळो पण
दिवमा न धापी । आछो उजळा खाव अर मौज उडाव । आधिय न
नूँ ही परचाव, मारणो चाव । जाण थो मर ज्याव तो म्है अकलो
बँठो खाऊ । कूँ आटो फकाव नदही बाटो वणाव । पण चग्गा कर
अर चूरमा जीम । एक दिन आधिय नै मारण खातर पगल्लिय न
दाव नाथ जाव । एक काळो जरी साप घाव अर बनकर नीकळ ।
वी सरप न पगल्लियो दोरो सोरो मार नव है । सागोडो काटर तेल
मे तळ निजाव है अर आधिय न आगला घरा मेखण री जुगती
जचाव है । आधिय न पापड बडी री साग वताव अर आज घपार

जीमावण रो बोट लगा वै है । नाग न इमरत चारै अर देगची
 डकर घोडो झाडो हुज्याव है । लगडिया नीद म लापालोप, पगळिये
 न डर ना बीरी ही बोप ! भूखो मरता भाऊपा मार है । हाडो
 ठाकर हितावै वरतग माडा गिडाव मचकाव है । माग हाळो देगची
 री डकणी उघाडै भर वाफ में मूडों दे परो सोरम लव । साई रा
 सजोग मिलाणा हुब तो मिसरी वाफ नू आधियै री आख्या उघडज्यावै
 है । सरप न मीजतो नेवर खूनियै माध भूज मर है भर नीदा म
 मुसावितै पगळिय रै बडल र, घुरव में लात री मचकावै है । लात
 रा पडठा ही पगळिय रा लूला पग सीधा हुज्यावै । चोखीतरा चालण
 साग जावै है भर आपरा सूवा मुआळका पगा न देखाळर आधिय न
 कवै— ओ के है र ! आथा ?

आधियो दगची कानी हाथ कर परो पूछ है—“ओ के है
 रे ! पगळा ?”

पगळियो— मूह तो धारी आख्या करणी चावै हो !”

आधियो— ‘मूह ता धारा पग करणा चावै हा !’

दोनू राजी, काई ना नाराजी ! जोष जुवान हुग्या, कूवडो
 हाळी लात ताव भागो भर धन रा धणी वणग्या ।

मेह वरस्यो जमानो हुयो । मळ मयोडा मानवी पाद्या
 मुटघा । बेती करी तुलर नीपज्यो मोठ-मतीरा रा डिगला लाग
 गिया । कीनै ही बेटी चनें आयो कीन ही बेटी चेतै आई । कछ ही
 गुगार्द री ओळ करी भर कौण ही मोठ्या वगी मूला धोयो । पण
 साची कहीजै— बेटा बाजरी रा है । बाजरी ही नी जद पेटा रा ही
 मामा पडग्या हा, बेग कीन चन भावा हा । केइ सूता छोडग्या कई
 बेचर छाग्या । क्या न र में डबोया कई घरमाई में द आय़ा । आप
 आपर डाल री ही कास राखी । जद ही ओ काळ बच्चा राणो

बाज्यो है । स्थाणा मिनसां भुळार घापरी सुगायां न घची, भोय्य मिनख सुगाया र हायां मू ऊमर भर रा हाळी भोगळिया मळ्या । इण तरा मू भासा परवार दुरभय बाळ री वाट-वाड मू सेरू खांदू ह्या । पण घाधिये पगळिये रा मा बाप तो सजोड घाप रै गांव में पाछा बड्या । हाया हळिय मू मचवार मता करो निनाण बाळो निघा रात दिन घत रुमाळयो । लावणा करो, अर दळा बाडर माठ बाजरी मू धान री कोठी भरो । घर र तिला रो मळयो तेल, गाया भस्या रो धारयो घीणो । पण निपूनो घर सुनो हीणो । रात दिन वेटा नै चेत कर । घाधिये पगळिय न मूरै सराव । पर । घाधियो पगळियो कठै ? जद ही कोई ना'र गादडा खा पोय्यो । हाडका ही गमगुदरग्या । मा कोरा सिसकारा नाव । बाप खाली हूडरका आव । सुरत भाग मान फिर लपना आव है । पण निजोरी वात ।

मरद मल्घार दालद चल्था । घाधियो पगळिया हुया मावळ वण्या कमाऊ अर लाग्या घन भेळो करण न । कारा ही बळद पव ड्या कीरा गाडा लाया कीरा ही बोठा पाड्या कीरा ही गाभा मभाया । सोनें चानी रा जेवर नगणवण री योळ्या, बीटी छर्ल री बुगचड्या अर घोरा भाज री पेया छल परीर घरा लदा दीनी । ऊटा पर पातळिया पलाण मा'रा घर वल्था ! बाटवै कसीद री भूली अर ऊपर घासिया घालर टिचकार निया । हिणटिणावता घाडा लार खव लिया । रणभुणता रथ वल्था समत जात लिया । हाथा म कडा कठा मे गोप खव दुनाळी व'दूक अर गळवड चांशी रो मूठ हाळी तरवार म मुवमनी वाळ री ओप । पूटरा पररा राजा रा कुवर सा गेल वग हा ।

बादस्या री फौज सी चाल । गाव धणी री सुवारी सी नाकळ । विणज्यरा रा भरी बाळद सी दळ । माघण दिनग रै पडाव म पातिय राजायती जमे । पार रो परवर तम्बुधा रो इतजाम,

दूर दूर तार्द डको पीटीजग्यो । आग मू आग राघ री टूलवग फून्गी ।
गावा रा लोग मारग मे सामेळी आय, देख देखर जी मोरो करे ।
मावा मायो भुवाव म्हार ही इसा वेटा हुवै । सुगाया कुढे कव — म्हारा
मोम्हार ही इसा वण । बना लोच म्हारा ही भाई इमा खिल । भाई
मोच म्हान ही इसा फून्रा वीरा मिलै ।

सुगाया सुगन वताया, जोतकथा टीपणा फळायी । भोपा
मिर भुवायो, पडा परचो दिगयो । आधिये पगळिय रो मुदो उव
डियो । माईता रे सोन चाणी रो दुघडियो । भाजता नासता हाफी
जडा दो मिनख आधिप पगळिये र घरा वघाइ वण नै आया । लू ग
री डाळी टागी अर बोया— थारा बटा घरा आ गिया है ।' मा
वोनी— म्हारा वेटा कठ आवा भाई ? वापडा आधा लूला न कदे
ही कोई जीव गिनावर खा पीग्यो है । तर्घाईनाग बोल्यो— 'व ता
दोनू दूधिया जुवान वणघा आवै । सोन वरगो सरीर है कचन वरणी
काया है । लूला है न लगडा है, आधा है न पगळा है । अडया
खडवा री माया ताद लघारिया है । मा र मन मे ठडा वायरो आयो
सपने रा सुख आतरघो अर वाछळ विरख फूल्था । वावा मे दूधरी
घार कठी जद ऊवकी अर उपराड चनी ।

उद्यम रा प्यारा, माईता रा खारा अकन री उजीर, हिम्म
तरा हीर आधियो पगळियो डावर नैणा अटावरा वणा कोडभरथा
आया । हाथी री तरिया भूमता भावता घर मे बडथा । मा आरतो
करघो, वाप मिर बुचकारघो । ऊजड सेडा मुडवस निरधनिया घन
होय गयो न जोउन बावडै, मुवा न आवै बोय ।

मैं मर जयामू जद धारो के जान हुनी ? योग रिपियाँ ली चीज न ब
 आना में न आस्यो । रास्यो करना न धर या धसन म्हान पणा
 चित्तारम्या । (आरमी न अर हाथ मू ऊची कर परार) घो का
 तो बाद रो चदहलियो, का वना सूरज नुइयो । है जवानना—का तो
 बाद रो पूरो पाठी बटो चदहलियो है का घानन मूरज घपूरो गरम
 नास लियो है । गुवाळिया न ग्यान धर म्यानो घादा जका सू घणा
 राजी ह्या अर अंबड पा परा पाछा रोही न टुरपा ।

पण ब्रह्मभुभावडजी न वृण भास खान देव हो ? जेक दिन
 ओज वेइ गुवाळिया घरा आ बैठ्या । कारण में बडना ही हेना मारघा
 अर बारना भाचा माय सट्या । घान तो ब्रह्मभुभावडजी सागीन
 लाल हुम्या । हाथा में आग्या आपो खो बठ्या । बोधा— के
 बळग्यो ? धारै ? को जाणाक नी ? का कोरो ही घान रो नास
 करो ?

गुवाळिया हाथ जोटघा दात काठ्या अर अेक मिनखा र
 पैरण हाळो नट्टु रा धोली मूयणो दिताळना यका बोधा— म्हान
 घो रोही में काई लाघ्यो है ?

ब्रह्मभुभावडजी बळनै भूजनै मूयणो लवण न हाथ माड्यो
 अर कियो— घान वगू जान्या हा ? म्हे मर जसू जद धारो के
 हाल हुनी ? किया नण दण करग्यो ?

गुवाळिया बोल्या— म्हान कठा इसो चीजा रो ! म्हे तो
 खोड में फिरणिया जावक बागदा मिनख हा । म्हान बतावो—ओ
 क स तो है ? के भमनो हे ?

ब्रह्मभुभावडजी मूयणो (पायजामा) टटोळयो चोखी तरो
 निग करी । दोरी लोली लामो करी अर तणकाई । देरी भाळी अर
 घटकळ उपाई । पण वात बगी सो नी जघाई । जित्तै नै गुवाळिया

भले वूम बैठ्या । कियो—बूमबुभाकडजी—“यो बाऊ है ।”

बूमबुभाकडजी आपर मायै स्घायै पण रो मोड दिखाळना
यका बोल्था— का तो वे खणा री कोयळी है वा बई (जेळी) रो
म्यान । का तो दो खणा बाळी घाटै री कोयळी है अर का जइ रो
म्यान है ।

गुवाळिया बाल्घा— हा ! हा ! ओ ही ! ओ ही ! वस
धा गी ! जव वेगीतो म्है लीग भाज्या भाज्या थाँ वन आया ।’

बूमबुभाकडजी बोल्या— आवो ! आवो ! जी आवता
न । या न आवता नै कुण पानै ? आवणो जावणो ही तो वणायो है ।
घोर के सागै चालसी ।

अब तो बूमबुभाकडजी री अक्ल री वात च्यारू कूटा म
फलगी । आसा पासाल बनल गावा रा पाडोसी गुवाळिया ही कोई
म्यान तिथा म्यानाळी वात बूमबुभाकडजी न बूमण सातर उफण्या
पाणी पीय ।

अेवड रा गुवाळ उजाड भोम म रळ जूनी-मूनी जगाजोव
अर जुळे श्रुळे हाथ घानता र व । अेवड खरक म बठा दव अर ठाला
ठामो खावता फिर । सेता खोडा तिथा ऊजड खेडा मे खडभडै । अेक
तिन कठ ही अेक टूटडा सो तदूरो हाथ लाग्यो । जवै म तार न
खूटी सफा रदखळ खोलो पण बिया न तो मजो तिथा तमासो हाथ
आग्यो । मिलर भवकाव साध्या नै तिखाळै अर गडिया सू मित्राव ।
जागै न वृभ समभ न सूभै अचू भो कर है । सोच— गडिया घणा ही
वाटा कामडी भोक्ळी काढा अर पळूड डाडा ही डाडा रयावा हा ।
पण ! व्सी लवडी तो कदे ही नी देखी । कूकर उगी है किया वणी
है अर किसीक सु ताळखी हूई है । वाटा न गाठ अळी न आट, जाग
छनी छाटर छोली है । दाम तमाम अेवड हाळा री ज मरघा सोच
घाण्या पर तदूर रो नाव कोई ही नी वता सक्यो । जद बोल्था—

चांगो बूमबुभाकडजी सन चाता अर इय सोट नै निखाळा ।

बूमबुभाकडजी उफोळमख ! नोकदार ती पैर घर चौकनीं
भान चोळो राख । पत्लादार ध ती बाध चादरा लपट्या गप्पा नाचनां
फिरिं है । ताय गये न उधनी दब अर गावाळा माथें आपन मोटो
मिनख जताण रो बाक राख है । पू छी हाळो जवां ट्रांटीवी दाडी, माय
साफो मू छी व टो हर वमत आर्वां रा मटरका करतो र व । पा
म कया कडरां म योगी आगळी म बागी, लागडी खोळी आपरी
पाळी पर अळो गोळी जाडै । गुवाळिया न तदूरा निर्यां मामा
पगां आरतां त्यै जद फतर कुप्पो हो ज्याव ह । क नै वट्यां मिनखा
न कर्व है— क वतादां रागी लावां घर री काम करा पारको । कित्त
दिन निभम्या टा नी ! आरतां मिनखा न द्यर—७ देखो व
आया, वाद न रो पचो पपाळ न परार ।

गुवाळिया— बूमबुभाकडजी येत म म्हान जब तकडा
लाघी है । जकी कठा बूबरकी है ? सिर मावो ही कोना । छानी
मू छी चीम्णा चट्ट है । अर ।

बूमबुभाकडजी लकळा हुना यका बीच म हा बोल ज्याव
है— हुवा ! हुवा ! रणदया ! रवणया थारी वात ! घणी मुण्णोडा
है । तन भनापो वगी मी वनाय टाळू ! वना बनूर नारी छुडाव
गुवाळियां हूयो- तदूरय न बूमबुभाकडजी र आगीं कर । बूमबुभा
कडजा तदूर न हाय म तर उ न बुन फोर अर च्यार मर सू देख
है । मू ग्या कान उरत पास सू पकड है ।

यं र नाट त्या पद्य रोगी रै घरहाळा घाई रा दौत
दखतां ही दगाळ अर घान री बानकी वतार दुवानदार पारखी र
मनहाळी वान बूजगी चाया कर है । बियां ही गुवाळिया बूम
कड्या— 'बूमबुभाकडजा आ तकी काऊ काम थाव ?'

बूमबुभाकडजी इत न ही अडीव हा । जियाल कोर्दे सासू

आपरी बहू री भोळी घात माय बोई न कोई रोव गाँठती ही र बँ है, वियाँन ही बूमनुभाकडजी गुवाळियाँ नै मु छट गाल्या टोकणी सह कर लेनी । कियो— वार मारेंता र भाड म काम आव है । जाणो ता की बानी । धा (तटगे) का तो वरग्यागँ दवता रा घूपियो वणायोडो है घर का उरगडे री हाना है । खावग मुष्ट देवताँ न घूप सवणो पट त्रद इयँ घूपन रँ चाडै पानै म घूप तिधो गारवती घाल्य अळगँ मू ही खे दव । का पागेभन न हानी दवण म उखत पर काम पडै जणा रँ र आगीनलँ गोळ पानै म मान मगद घालर दाड परा कर ही आपर घरा खटशा ही आगलँ री थोळी थपाळी म तिणा रेवो । इतो ही को जाणो नी जकारी गारा कर्धा पार पडनी ?

बूमनुभाकडजी री इनी अमोहन अकल रा दाताँ मुणर प्राप्ता गुवाळिया मावळँ लाडकीड मू उदळता दवका बुदना आप आपरँ खेबड म चालया । माग्य म खेज हूँ सामा दान काडता राफा सेळता, बूमनुभाकडजी री जै बोवता यवा खाज न थकाय माथै उठा तिया ।

पंचमारखां



सत मोकळो मोटो साथ दोडो खोड ही कबज कर राख्यो हे। च्याह मर खुल्लो भर बीचकर एव भारग वगतो हो। पण गांव र खन होसो र कारण बटाऊ आता-जाता रता निया खेत म पालते पालते उजाड कर जाया करता हा। कतारिया भर गुवाळिया रो पणो मोटो दुख हा। काकडिया छोडता न मतीरिया, कडे, कडे भेळ वाड रा ठोकाक गाया भस्यां ही बाड निया करता हा। सुगाई टाबर री तो परवा ही नी राखता। जक वेगी ही खेमल पुरखिये री मा खेत म कऱ्ही अकली ना रती।

सुमले पुरखिये री मा छाला भर भर वेगा वेगत्या। पून सतिरी चान, अजरगी माद तो उ पण नासा। खेत र धणी खळ म मोठ उडावत भापरी चौधरण न उतावळ-ताकड दी। भळे इसी वाळ (पवन) नहा चाल-ती। वगामा काड-कूटर घरां जावां। आया गया अप्पार खाग्या आणालिया। माठ काड लेवा नीर री घट लगा देवा पद मा सत पट्या आगी कर देवा। काई आवो भर कोई जावा। टाबर खळ बट्या नीरो रखाळ बोकरसी। फटक र बीचाळ बीचाळ किरणो छूट जायो।

चोधरण कियो—“अकरगो काम तो हुग्यो । मोउ घरा ले चालो अर नीरो ढक दघो, होळीं होळीं सजास्या । दिन भर म उपण नाह्यो, नीर रा दिग्ग लागर्था । फळथा रा दिडम चढाया ।

जाट कियो—‘इया ही वरस्या !’

इत्त न मारग मू अक ऊट चढ्यो सिफाही आयो । जाट रै खळ म विये बडिया चारै री घड (ढर) पडी देखी अर आपरै भूखे ऊट न चरावण खातर जी चलाया । ऊट नै खळ खानी मोड्यो अर मोरी तीली छोडर चारै माय ढको दिया । जाट कियो—‘क्यू भाई ? म्हारो चारो क्यू सडावै है ?’

सिफाही कियो—‘म्है राज रो सिफाही हू, मने खुल्ली है । म्है रयत री चाधू जिकी जिनम जवरन ले सकू । कोई पाले तो राजा नै खबर कर दधू । राजा जी विय (पालणिये) आदमी नै बनार जरवानो या बंद कर देवै । नही माने तो मने पालर दख !’ जाट नै जतायो ।

चोधरी कियो—‘राज रै सिफाही न इत्ती वाता री छूट है ?’

सिफाही कियो—‘हा ।’

चोधरी घातां वातां मे ही जाणग्यो के वातडी सफा धूगे ता कानी । जद चोधरण नै कियो—‘घान राड कोयळी म घाटी म्है ही राज रो सिफाही वणस्यु । मजा वरस्यु अर गावा मे फिरसु !’

चोधरण कियो—‘इया सडाखडी के सिफाही वणस्या । सेती रो काम सामत्यो, घास फूम अर घान घरा ले जावो पछ मना ही वण जाया ।’

चोधरी बोल्थो—‘कीगो म्हु तो अवार ही जास ।’

पाच चार दिना म खळ सेत रो सारो काम सळ्या लियो । मारग बगतो सिफाई ही दूज दिन आपरें पापे पु ये लाग्यो । पत्तं वुड वुड वारो गियो । पण चौधरी र मन म सिफाही वणनें वाळी वान घर करणे । मोठ वेव्या नीरो तियो लुगाइ टाबर सारें निया अर राजा रें गाव गियो । दरवार म हाजर ह्यो नोकरी री अरजी पेम करी । राजा जाण्यो कोई वार राजपूत है । जक वामत नगर म घर दिसा तियो अर ठर जाणु रो हुकम फग्मा तियो । भळ क चाहिन ? भिर मूजग्यो । करडावण म छनाजग्या ।

चौरा नेतो डगुतियो डिवाण नुवान मोटा अर घोटा सा पग हाय तिया काळो-नुरा डरावणा मिनख हा । बडा बडा दात रुप रा दिवाळा भूत प्रेत रो मूग्त ब नी रो छाळो हो । गुप्पा म आगळो पण काम म सफा पागळा हो । मुकी घड लदू-दू वग असधी जगा म क वडाई दग ? आपरा सुग्योण सा हाय पग पोट परा दात बार बापपार भात्री री दावळ मारतो जणा लोग तोट पोट हो पाया करता ।

एक राज चौधरी नीतरा वगी राजा र खनें जावण न भळे स्दार ह्यो । जण पायास्या हमी टळा म ल तियो । तियो— भाई गुता दम ! थार अठ आता ती राजाजी राजी हो परार घर वता तियो अर गावण न समान भिजरा तियो । एक स टाबर टीकर जव वग वग्या । अ म वता थारी रीरता ४ वार ही हुई है । नही ना तन का पूरना ती कोनी । राजा क्तर वर मिनख न पिदाण है । घर भळ जापरोर ताय टकांग नोकरी माग । थारो नाम ही मग दिसा र जागा चाय । राजा न नटाई रो पणो डर रव है । थार त्रिय पुयना रो मोकळा चाव कर है । वगा थो दरवार म पूग अर मागे नोकरी माग । भग्वा करधो तो फीज रो गनापती वणा देया ।

चौधरी रं अ स बातों जचगी । वो समझ नी सक्थो के
 अ पाडीसी त न अठं सुं काढदेणो चावं है । घर बार खोमणै रो
 जुगती सटाव है । पण वो ता वंण रो बोन सो तुम्ह त राजा रं आगे
 जा खडा रिया । राजा र वृभरुणै पर कियो—'अनदाता । म्है सर
 बीर अर भादर मिनख हू । मन्नें काई माटी फौज म लाख टकाळी
 नौकरी दिरावा । छोटी नौकरी नै म्है हाय नी घालू अर बडी नौकरी
 बिना म्है रो पार ही नी पड ।

राजा जाणग्या कीरा ही पोगायोडो है, वो अेक बार आपण
 ही थोडो ऊचो नीचा लथो । छेकड राखणो तां है ही अर फौज म इमा
 हां मिनखा रो जकरत है जिका आपर मत्त अर ह कारो भरे । राजा
 कियो—'कोइ धारो भोगे किरतद तिथा काइ बीरता र वत्ताइ
 वत्ता ।'

वताव के हो ? सिफाही वणन री जी में आगी अर आ घम
 कथो । कीं जाणै तो वतावक ! कीं करै तो कवक ? बस ! उप
 रनी जाड उपर अर नीचनी नीच । सेतिय कान सू तो बार बज्जोडी
 ही । सू टो सो खडो रियो । गाव में घणा गण्वा मारतो पण अठ ता
 राजा रो नज ऊपराकर किग्ग्याक टा नी । उथळो नो आयो । जद
 राजा कियो—'जा भ्हारी वान रो उथळो परमू ताई द जाई नही
 तो कद में नाख देखू ता ।' चौधरी रा कान खू सर हाथ में आग्या ।
 नेख सू दणो बधग्यो । घरा आपरोर आपरी लुगाई न कियो—'बीय
 राड । अक्काळ खोटी हुई । अर आपा अठ नी रवा । राजा कियो
 है का ता काल धारी भादरी रो काई बात वताग्याई, नी धाणी में
 धानर पीडा दस्सू ।'

लुगाई स्याणी अर समझदार ही । बोली—'धीरज रामो कोई
 बात बोनी ! किसो इयाय करयो है ! भागी ता नौकरी है । रोटी
 पोई, चौधरी न जीमाया अर माँचो विद्धार सुवाण दियो । पण सेत

रौ निकल्यो चेतो ! नींद गई सारणी गळो ! सूतो सूतो मुळक
मुळक भाव कोइया फोर धर बाड है ।

चौधरी रै माचै सार रात र रा पोड दळिय रौ एक हाडी
मेनी पडी है । हांटी ढकणी सू ढवघोडी तो हो पण ढकणी मबड नही
ही अधवाणी भी हा । ढकणी रै सारै धर हाडी में मागी वड नीसर
ही । सेत री निजर हाडी खानी गई अर भागरी जाग पडी । रीस
में आपर हाडी पर मुक्की मारो । मुक्की सू हांडी ता फूटगो पण
साग च्यार पांच भाखी ही मसळीजगो । चौधरी भाखी मरघोडी
देखी अर मुळकघो । भाखी गिणी अर पूज्यो । बोल्यो— अेर मुक्की
में पाच ! जक मक्की में पाच ! तुगाई आई वात बतार्ई अर पूनर
डोव हुयो । तुरत राजा र कन जा पूग्यो ।

राजा पूछ्यो— किरतब तिथा बीरता री वात बतानी ?”

चौधरी घणें धमण्ड सू कियो—“बतासू !”

राजा—‘ तो बताने ! ’

चौधरी बोल्यो— मैं एक मुक्की में एक सागें पाच जीव
मार नासू

राजा— जे नही सार तो ?

चौधरी— नो माह तो कोर काम पडै जद मन आप
बतलाया अर देखा कित्त माह ?

राजा र सोळ आना वान जचणी । चौधरी न नीकर राख
लिया अर फौज रा मोटो आदो मुळा दियो । ‘सागो धर में रो
चौज बसन रो बी पण काम पड जद तुरत हाजर हो जावो ।’
राजा रियो चौधरा हकारो दियो अर आप आपर काम जा ताग्या ।

अक समै री वात नगर में पाच चोर हिन पड्या । चोर
घणा घरफोडा कर अर घाहा दोर है । कीरी हेलो फाडै, कीरी

तिज्जुरी तोड' तिथा कीरो ही घन बाढ भाजै । घाणाळा एजे घाप्या, चौकी णळा सोध घाप्या अर फाटवाळ र नाक में दम घागयो । घोरी त्रिन अेक दिन ही खाली जावै नही अर चोर हाथ आवै नही । वात राजा र भागै गई पुळम हाळा साची वही । 'चोर पकडवै नही, मर पच खप्या पर उपाय नी चाल । ऊभो पोरो लाग कोटवाळ री गमत आधी रात जागै । रात आन्या माथेर कड पण पार पडै कोनी । अेक न अक घर काजळ घाल नी जाव । अेक नै जरु आदमी री रपोट आ ही जाव । हजर म्हारा तो हाथ पाधरा कर दिया । आप कोई घटकळ वतावो दूजै ही जावतै मू चार वेगा पकडावा । ना तो नगर नै थोथो कर तैथी मर नै जोजरो घालर उत्राड नाखसी ।' कोटवाळ राजा आ हाथ जाडर अरज करी ।

राजा आपरै ओददार फौजी अफमर (चौधरा खेत) नै बलायो अर नगर में चोरी होग वाळी मारी वाता समभाई । चोर पकडन री ताकीद करी अर दो दिना रो समै वखस्यो । अफमर ह्कारो भरचो अर आपर मुकान न पाळो टुरथो ।

झोय राड ! आज मरग्या !' चौधरी कियो ।

'के हुग्यो ? चौधरण पूछयो ।

बोन्यो— हुग्यो जणातागो भोड ! तेर टियरी फूडेडा है के? सर म चाहिलग्या । घाणा तमील अर कोटवाळीहाळा खन मरघा पर कीर हा हाथ नी आया । सर म खळवळी मच रयी है हाको हा रियो है । सगळा री हार है । जद अब राजानी मन बनार दो टिना र माथ ही चोर पकडनै रो कियो है । नही तो कद कर लसी ।'

चौधरण बोरी— तो इमी क वात है ? आपा पली ही ठोका द जास्या । दो दिना म आपणो गाव नडो लस्या । छाटो इसी

नीकरी नै । कूनगा अफगर वण्णा हो ।'

चौधरी कियो— हुवा तो !

तिन बिमूज्यो रात पडा भर अफगर र घरा घाला मनी सरु हुई । पै पैठठा भर नाख्या बीटा विमतरा बाध राख्या अर आखी चीज वसता हाथवसू कर लीना । जीम्या जूठ्या अर टावरा न सुवाण्या स काम जधार मे ही सुवारया । गुडरी पात चाग तूरमा तूरणो पळायो । सैग कामा र उठाव पटक म अकना चौधरण पात री पूरी निग नी राख मकी । पात म अक काळो माप भा पड्या अर भीजकन गुड म सागाओ घुळ्ळ्यो । रसर सागै जर अका मरु हुग्यो । चौधरण तिद म कुच हुयोडा गुड री पात छाणी फूमका अर मापरी हड सकळ परिया वगाई । देख्यो न भाळ्यो पात मू मोकळा चूरमा चूरयो । पोडिया बाधर मेल्या अर घाडा घाल खागी करणु खातर माचै माथै गुटी । जाभरक टुरण रो वात त ही । आज रोरा तो ही अठै धामो हो । सोपो पड रो बड्या अर बोल्या— भाईडा आज ता सुगन लेर आया हा । चूरमो चूरेडे भाल पत्तर बाधेडा राम नाधयो । कृममा जीमो अर उगावो । हाथ साचा पड्या है । पीटिया खाया अर पोत्या थाडा पड्या (भाया) इय घर में तो दिनगै ताई काद नी हुया लड्या ।

सूरज उग्या चौधरी कान कटकडार उउयो ।— ओय रा-
मरण्या ।

बोना— के हुग्यो ।

चौधरी कियो— राजा कद कर देसी ।

चौधरण— तो अ कुण पड्या है मरेडा ? वै दिया चार धोर रो ठानी म्हान तो अ ही लाख्या है ।

'ता हुवा — चौधरी कियो ।

सिफाही आया चोर माग्या । चौधरी सामे पडी पाच मुहण री लग्न वता दीनी । चोरा न घेळख परार सिफाया मूठ में आगळी घात्री । बोल्या— आया तो आस्ता सिफाई चोरा न पकडणै वैगी मर पच गिया पण इया तो अक दिन में ती मार नाख्या ।' बात राजा रै सन गई । राजा घणो खुसी टुया । चौधरी र घरा मोवळो इनाम भिजवायो भर पचमारखा नाव पक्की करायो ।

कैई दिना पछ नगर में अक दिनख खावणा सिध लावण लाग्यो । सिध रात पन्था सन रै सार आव भर मिनखा री नुक्माण पुगवै । कीरो ही तार न जाव कीरो ही धन पसु या ज्यावै तिना क्या रै चाट फट पूचा दव । दाता रै तोही लाग्यो हाथ आणो दोरो हुग्यो । आत अठानल दहा तो कात वगानल पाम । गाळी खाव न पकडाव । आख नगर न ओटा नाख्यो मिकारधा रा पण पादा पडे सार कवांगळा कारा तकै तिथा तरवार वरदधा हाळा वागदा सा टुगिया है । सिध तोरा घना राखी है कूक मचा नारी है । बात राजा खनै गई । राजा पचमारखा नै बुतार सिध मारणै रो हुकम फरमायो । पचमारखा हा भरी घरा आयो घर आपगी सुगाई भाग गरलायो । बो-या— राड अकक गरग्या ।

‘के हुग्यो ?’— सुगाइ बियो ।

‘हुग्यो क आजकळै नैर में अक सिध आव है । जक सू स सिवारी आना गाव है । घणा उजाह करे पण कोई नी पकड सकै । सिध न मारण वगी मन हुकम हुया ।’

तो क मिया मरग्या भर के रोजा घग्या । के आपण अठे रो पट्टो है । जाभरक ही चड चात्रो । कठ ही और पूर पटक स्या ।’ तुगाई कव ।

‘तो बायो टीक’ पचमारखा राजी हुयो है ।

राज पक्षी पंचधारणा म पुरा नाद महा आई । धरणी रो हा
 धु पुरलो धार्यो । जिनम पतर भार बायो जगाधारा त्वार ही जका
 सदर्षी बागती धाग गुना धरा में गु गदा आई गरीयो पकड़ श्यामन
 न गियो । गिप आय रो धागर रणा कर अर पूरेइ नमइर में
 घाडनेइ कर रियो हा । धाग भीध मू श भाव गुना हा । पचधारणा
 भच्चर र तार गु जार जुह जा भाव गिया । गिप धाग में धार्यो ।
 जाण्यो क ज हुव तो धो आई पर गु ही बजगा जाराकर है ।
 पचमारस्ता पच नाका बाका में मारवा पीहर पीर पर धा बंधा अर
 कोरहा रा मवीह चणगा मह कर गिया । गिप र धरती रा गरीर
 पड्या जक बो बाधहो गु गो बावलो हूर भीर ह्यो । पचधारणा क
 बाध दीयो ? बायो लढवार गु र बाध दीयो धर आय रा सुगार्द
 न जगणी— अ ! ममल पुरतिये री मा ! बार धा, भार त्या ।
 अक गयो पकडर त्यायो ह । उ बाळी थाला ।

बोनी— राम निकळ्यो क ? धाडू तो सोरो ही पचपा
 है, धरा कीनी के ? भाव पाट धातत्या । इगा के उचळी में ऊरणी
 है । थोडा सो जावो ।

हुवा तो । 'पचमारस्ता धाडो ह्यो । धोपारो तो फिरयो ।
 दिन चढ धाया जद राज रा सिपाया वारण नाथ हलो मारधा—

'पचमारस्ता जो ता व भादर ' राजा जो गिप पर आय
 न दरवार में प्रवार ही बलाया है । पचमारस्ता धर में जा सुगार्द
 प्राग रोयो— राड आज मरग्या । अर गिप फिर धाप रो देवा ।

बोली— क ह्यो ? ओ पकडर त्याया होनी ! जको
 छुट र बावडो सडघो है । क देवो मूनि तो ओही ताभ्यो है ।
 सिपाया सिध न बाधेडो देव्यो तो मूढे मे भांगळी घालनी । राजा
 धनी खुसी ह्यो धर कुरप बायदो तिधा तिणस्ता वधाई ।

थोड़ा दिन तो अमन चन मू बीनाया पण पछ राज्य पर एक नू वा बखेडो भले आ पडधा । अक पाडोपी राज्य लूठी फौज निया घका देस नै आ घेरयो । पचमारखा राजा रँ आधू तो अफ-मर अर आप रो मेना रो सनापती, घरा बठा ही सामणो करण रो हुकम वरतो रियो । वरी रो भारी फौज र आग राजा रो सारी मेना लड लडकर काम आगई । देस भर म हाहाकार मच गई । जद जी रँ उकरालघ राजा पचमारखा नै कियो—“आप रो मौजूदगी म इमा फोडा म्हारँ म पड आपन अर आपर नाव नै सोभा नी देव सनापत्तीजी । आप इय मुसीबत नै भळ टालदधो तो म्हँ आपो राज्य आप र नावँ लिख द्यू ।’

इत्ता दिना मू दरबार म आणा जाणा रियो जक मू पच मारखा में ही थोडी अक्ल आ गई । जाण्यो— आखो मौको है ऊमर भर रो मौज है ।’ जद राजा मू कियो— मन आप अक चोखो सो घोडो अर हजार भेडा मगवाकर म्हँ कबू जिया ह्यार करवाचदधो । राजा रो सेना ता मारी मर चुकी ही अब पचमारखा हाळो अणोखो लडनो ही बाकी हो ।

सिंभया पडो, पचमारखा र किये मुजब भेडा र माथ अक अक दीवट बांधर धरी । दो चार आगीवाळ भेडा न दुसमण र पडाच खानी टोरदी । अक र सार स भेडा भीर हुई । सगळथा र सार पच मारखा आपर घोड मार्थ आपन काठी बघवापरा चाया । घोड़ मू डरचा पन्क नी नाख इय वासत दोना पगा र चाकी रा पुडिया बध वालिया । घोडो खोडो देखर पकडधो हो पण इय तो तेजी म पग उठा राख्यो, जको चढणँ मू मालम पडयो । आधीरात, बेरी रो मेना बेफिकर होपरी सोरयो ही । जक वखत भेडा र मिर माथ बाधेडी दीवटा, पचमारखा चास परी दुसमण र डेरै कानी टोरदी । आगीवाळ भेडा चाली, बुनँ ही सारो अवेड उछर गियो । सारया रँ

लार पचमारखाळो तेजी घोडो चान पडधो । घाप र डेर म अणगिणत
 चिरागा जगती आती देखर मोद म भोटा खावता वरया जाण्यो—
 अबक गेख न भातो आण्यो ।” दीवटा र नीच अ घारो हो सो भेडा
 बिया न जावक ही दोखी नी । हलबलो ह्यो भेडा वभडकी अर
 वरीडा आपस म ही अेक दूज माथ दूट पडचा । की भेड रँ दीयँ मू
 बिया र डेर म लाय भळे नागगी । क्याळ मर हृहल्लो सुणर घोडो
 चिमक भायो । जण पडणु रँ डर मू पचमारखा अेक साम आवत
 मूकँ खेजठ रँ डाळै रँ सैठी गपपी घाललो । घोडो ठम्यो नही, डाळो
 वघ्योड पचमारखा री बाय मे ही रग्यो । जक न डरत पचमारखा
 आप रँ आडो घोडँ माथ ही मेल लियो । दुगमणाँ रा तार वरछा
 आया जका डाळ र लाग लाग खाली ह्यो । कइ वरी डाळै मू अइ
 अइ हापेही मरबोकरघा । इन तरा उजाळो ह्यो जित्तै न वरी री
 सारी सेना खप गई । पचमारखा जीतर नगर म बडधो । राजा
 बाय घालर मिल्यो । आधो राज दियो, पचमारखा राजी खुमी
 रस्यो-वस्यो

पिडत भरनाथ



“रामलाल न कानी जाणो ? अ है है ! मानख मं माण्योडो मोती है ।’ गोरधन जी मोकळें इचरज अर अचू भ री मोम वरसाता थका कियो— जद काई माथो क्या सुणो । के भाड रा भजन गावो । धरम री धजा है रामलाल ! मूठ सुरमती बोल । क्या बाचण वठै जणा सुणनिया न भाठ री मूरत्या । सी घणा देव । काना री खिडकी खोन देव है । साग्यात वेदविद्याम रै रूप में ध्याज्याव । ये कोइ लिट पू जिया पिडता न देख्या है । घराण री मिनख जवान री सुप्पार अर रतनपर में भण्योडो निथा वासी फिरचाडो, वृहार कुसळ भागवत पाठी है ।

थानै काई ठा पडचो क वसव में काळीदान रामलाल नाव री अेक चोखा पिडत आयोडो है । आ बात ती बतावो ?’ नेमीचंद पिडता री काट करन थकै गोरधनजी सू सुवाल कियो—“लारल लिना तो ये दया री नाव ही नी लेवता । काल पीरू री बात है थे तो गाव हाळा पिडता री बढाई करा हा । आज मो नूवो अलाप कठै मू ल्याया हो ? कदे क्या सुणो न भागवत । सग वीडी सिगरेटा माथ ही जोर खावो ।”

'भाग री बात है घट आव न ग पड । म्हार गधेस्याम री मां तो इयां न गुण ही बना विषा है । बिना लक्ष्मीर र रेवना रूपी इमा मिनवां री मजाग मिनणा दोरो है । गार्धनजी कियो ।

'काटा काटा मती टूटा हूव जिगी बचो । पाव रग निं म हा ये इत्ता किया पुरग्या ? भुरकी नान्योग गा वगया । घारा घरां तो गुमानजी पिडत घार दादो जी यकां सू मानीना पूजीजना आया है । हर्ने वृण जाणर छाडो काई ? मांकी कहीज—विन्त गाय घर उट मुतळव सू ही मानीज । रामलान गुण क बनाय है ? म्ह ता म्हार गुमानजी न ही मानस्या । म्हं सू को मूढा देखर टीका बादाज नी । ज गोलीमनणा धान ही आव । म्हे तो को टट पज जाणा नी ।'

—नमबद कियो ।

काल व म्हार घरा आया । गोरधनजा बोल्या— रोव दार आदमी है राजनीत रो ही पुरो ग्यानी घर विलाडी है । बोनणो जाण मनरी विद्याण है ।

निमक उजाळनो आदमी लखाव है । खाव जकी हाडी म छेज जरूर कोनी कर । वाणिया री ढाल है म्हारी ही अेक चाल है । इत आदमी र साग म्है ही थोडो ऊचो अर भाग भावणो आवू हू । जमाना सफा नाडा आग्या । बूढिया री तो धिकगी पण आपणी पार पडनी दोरी है । इस मिनख र साग की थोडी घणी पच पचायतो करणी सीखा नेतागरी भाला तिया याव-तपास करण रो मन मायली काढा । अेकल रो धिरग जमारो है । जनबळ रो जुग है जनबळ साग राखस्या जद ही जीतस्या । इयै म राड रो काई लाग ? का काई कथा भागवत कराई अर पिडतजी सू राममारी बूवाई । काई दान दिखणा दीनी अर सेवा चाकरी लीनी । कोई सराध नू तो दियो, चट छाती तोडण न भाग कियो । आ म्हारी चाल है म्हारो दाव है । वाणिय रा वेटा हा दोलडो फायणे उठावा हा । गुमानजी बूढा ओड,

आज रा काम व किमा पर धारै ? म्है तो दुकान म मनीम ही मन साराम जी धात्रै नै रास्वा है । जका मारो दिन दुकान में बैठा गप्पा मारै गुनछररा उडाव अर म्हारै घराम रो बडपण नामून वखारणै । आज री राजनीती जेक मोटो चालण हाळो वोपार ह । पुराणा वोपारा सू अब काम नी चाल । दूडियाँ दुकानदारा म भोळा नै घणा ही रोम्या काट्या अर खा नेवडघा । पण बी काम न आज दुनिमाँ जाणगी । बदनामी र सिवाय पट ही चाल नही । दानी अर धरमा घारीरा घडा वडा मनवारड गुमानजी जडा पुराणा पिडता रा दिघोच घोथा हुया पड्या है । किमारघाँ खाराट्या है, ऊरा काट नाम्या है । जक वगी अक जाळ माहू , भोळी पवेरु फसाऊ हू । गाजर हाळी पू भी है, वाजनी जितो मजै सू वजास्याँ नीस तोड खाम्याँ ।

‘पण जाणतो वूमता जाळ म पडलो कुण ? दोमत नेमचद किया ।

पिडत रामलाल अर मज सू । गोरधनजी कियो । ‘अरे भूख मरतो गांव छोडर भाज्यो है जकी तो मन जी री सा सागण कँ दोनी । छोरी छोराँ रा फेरा भळे करणा है । गाव म गुराजी रो ब्याज ही भरीजै नही । गांव रो छोरो अर वारलो बीन हाळी कदत साँची है । ओ तो आपणी मो री मे सोरो सोरो आ जासी । नाटँनो नी भू डी भडी किसी ! ये सघ हाळा हो थोडो सा रो दवो तो अक कया बैठाणाँ गपफो करावाँ अर चेला चाँट्या सू थोडा पीसठा वणारदघा । वूडी ठेरघाँ भोळो विघवावाँ तिथा वूडियाँ घरमातमा मिनवा मे रामलाल री पिडताई री गैरी छाप मारदघाँ । अरे ! इ साल ओजू मे नी वरस्यो अर पररो काळ पडघोडो है ।

किरसाणा म मेह रो परचार करो । क देवो पिडतजी कया बाचैला जद मेह रा खाळा भीर हुवला । वणघाडा जाट अर धनवाळ लोग मेह रै गाँव सू कया मुणन वेगी वामते माय घा पडनियाँ कस

टीडिया गा भाग्या धामी । घरम नी वार्ता गुणमा ज्ञा बारी पाठ
 दसी । डीना हुज्यामी सीता पढ -वगी जद म पढ्यो बूच म विद्व
 रो काम वण ज्यामी । घटाय रा त्रिग लाग श्रीतो । गाता री सक्क
 व+ रा भारो प्रापणा क लाग्यो ? भुगान मादू जिता यता ही मरडी
 वाल है, टरडीवाळ कामळ गगता रा घट मगा गामी । कोरा जवान
 सा रो ! विद्व ऊमर भर गुण नी भूत वडा क रगी पूत पूत ! घा
 वापटी विडली रो आ हा गुण है । ऊनी नगी गाव । आपणाळ
 (वाणिशंळा) ताव पव नी जाण मूथा गऊ है । याता जाडा ताग
 घर घाऊ रो दूध वाढो । मू भाजे करावो घर घाटी रो का
 सारो ।

गौरधनजी मसरी याणियो जात रो भवर — । दमधी फ
 पण म्हेंदरो वडो मोवणो । मिनत्ता म बोल ज्ञा ज्ञा जोगीतो ह
 चन मच -याव । छ्वालो डीन गारो रग अर मू र रो मुळवाई मनो
 हारणी है । नाक ता अक तागा नू पूटग है । बाळ छ्वाळा है
 ज्ञा व माथ माथ कमरिया गाळ पाग बाव लव ज्ञा वानी र गा
 बाळा रा गुच्छा थोव जाव । सफाई म मिनत्व जात रा अक ऊगळ
 नगुनो है । चोळ ऊपर कोट ही पर । सफाई मिणगार म नू
 नू इ सली र मट रो चणण है । वी रा व आत रा गाभा म म
 राखे ह । आर्या पर मुन री परम रो चममा घर पूच पर घडी
 नाक पर अेक तरफ वाळो अर मगळकारा मग्ग जो फत्राय म साय
 है । विनाशनी घाता अर बमनर ! वूट हा दसी ना पर ।

त्या री ब'व रो ऊपरतो कमरो सोपा राट सू सोभायमा
 अर आगण पर जळ री वारीगरी हाळो मोटो गलचो । गोळ मेज प
 अक कांच रा भाड है । जका री गमीली चमकीनी मिछळ्या आया
 गया री निजर चुरानव है । कमर म वडती ही सामी गाधीजो र
 तमबीर दोना कानी नर बोस ग लिजा खणी है । विद्यांर सामर

आपरी मोटी मूछयाळी सीधी टांगी पडो है । कमरो हर बखत धूप वर्यारी सौरभ बखर है ।

पिन्त रामलाल पैली कारो रामण हो पण अब भागवत बाचणिया पिडत है । पल्या मोट दड हाळो सुगलो सरगडा टीगर हो, पण अब मारणा भयो या माडो सो सुभाचणिया मोटो मिनख है । कदे हा बख वणन ग काड हो पण अब डाकटरी वेगी पग फाव है । क ही चांगी अर मूछयां मोनी राखतो, अब जेकामेक वर राखी है ।

सघहाळा भोळा वाळा छोग, ग्राम्यां रा ग्राम्यांविसवासी अर काम म दोळा नमच द रा कियो कर । दवी र मठ म कथा बैठाण दीनी । मडप मजाया बिय म पिडत रो ऊचो आरण लगायो । पर गिया टांगी अर धूप दीप जळायो । गाव मे हला मराय दिघो, डान घुरा नाग्यो । कथा मृणनवेगी बच्चै बच्चै नै बला ल्याया । पिडन घोल्यो चिड्यां म भाठो पड्या । कचकचाट बंद हुग्या । सरोता लोग रोभ ग्या, पसेव सू पूर भीजग्या । पण जगा छोडर नी जाव, आस दिन बँठ्या सुण है । ज्यू ज्यू पाना, चाल है म्यानां ले न गुण है । सात दिन सटकर बीतग्या ठा ही नी पडयो । होमायत हुई सिणगार चौकी वणाई । मे तो नी आयो पण चटावो तो घणा ही अर पडयो । रिपड ही रिपड चिलक आया । लोग ग्यान वावळा हुग्या म हाळी वात ही भूनग्या । ड रो ही नाव साचलो परचार है । पिडत रो माळा मिणियो चानग्यो गांव म ग्यान गुण हातग्यो । कमाई रो गैरो कग्यो रामलाल थपोट बढ्यो । गोरघनजी र घर मू परमाद अर दिखणा आई । पण कथा सू उठ्यो माय थक्यो । आण उद्याव भरयो मन सू मोटो पिन्त वगची मे जा बज्यो ।

बगची र आगण म मोंकळी भीड । मिनख नुगाद अर टावर टीकर जम्या बठ्या है । भीड मू आतर सामल चौक म जेक माणो

धूणा जल रियो है । च्यार मेर बनफाहा जोगी बट्या बाणी गाव है ।
अब बाळक घाप र बाप न पूछ है— बापूजी नाथजी किगा है ?

ब दख ! धूणीकानी हाथ तिया भांग्ळी गू इगारी करन
थक मेठ बाळक न किधा— ब कामळ माध बट्या है निग्याव ?
टावर बठकठी खाई करटो ह्या घर डरयो । पापी स्वगामन ह्य मठ
कियो—

डर क्यारो है बेटा ! नाथजा तो देवता है । अब म्है धन
बिया र खन न जासू । ब धारो तुमतो पेट घाछा कर दनी !

नाथजी री घास्या इसी बटो कियो है ? लिनाड इतो
चीडो अर चमकणो क्यू है ? मूढ अर माय पर इसा बाळ क्यू है ?
रण काळो कियो है ? डरत टावर सुवाल करघा । नाथजी गरज
उठघा—लोग बोला रग्या ! आज इता ही परघा देख्या । सामण
अब दूजो सेठ बठघो घूज है । नाथजा बिग माध भूज बळ है अर
रोम मे जाड भीज । सेठ रे हाथ मे एक पाच रिपियाळी गिना है ।

हरामखोर निरलज ! नाथजी गाळा ठोकणी सह करी—
साळा फक्कडा न भागवानी दिखाल । गरीबा रो गळो रोसर जोग्या
रो धूणी चढावो कर ? दानी कण्यो घणो हो ! कण कियो है क म्है
रिपिया रो गुनाम हू ? कठ सुण्या के म्है चादी सोन नै लर वरदान
केऊ हू ।

मोटो सठ कापण लाग्यो पसव चानग्यो अर हाथ जोडर
माफी मागण नै लाग्यो । बोल्यो— मूरत हू ।

नाथजी—बाळक गोदी निघोड सठ कानी भानो करर—
अरे ! इयरो (बाळक वेगी) पेट थार पापा सू दूख । कीन ही
मुमीवत म च्यार उधार देव तो पाछा पनर उधाव है । छोड जडो
कोभी घघो ! ब्याज लेणो ब दकर अर थकयोडी री सेवा कर ।
बाळक भलो च गो हो जासी । जा अठ सू ।

समक़्रित भण्योडो पिढत गाया में जावणियो पाडो घर
 सानो मूनो पड्यो टाडा डादो सोरो पटै तिया तावै आव है । भोळो
 हिडद, मूत्रो वदन, सटकैर डालो हो ज्यावै । पिढतजी रो बडधा म
 दोनी रिपिघाळी याली जुळवळावण लागगी । खाज सी आणी सरु
 हुगी । नाथजी रो ताबीज सू सागीडो पिघळग्यो । योळी खानर
 मूप दीनी । थोयो— 'बाबा म्है अठै जेव भण्योडो वामण कथा भाग
 वत करण बर्गी आयोडो हू । वस्ती रो पुण्य वधाळू, भर गुजारो करू
 हू । कठै ही माळा, कठ ही जप कठै ही पूजा कठै ही गल्प, वडो
 नगर है घावो फिरू । सारा दिन घर घर गीतां खातो फिरू ।
 आयण दिनम आपरा दरसन करण तिया सतसग वेगी जी ललचा
 जाव जद बगची म आ बठ । काळ उतारो रो वरस है धरा हाना
 टावर है । धाम तो चनाणो ही पड । अठ आपरी दया मू अेक क्या
 हई । जका मे चोवो चढावो आय्यो । अब कणा ही गिरै गोचर
 धतार पूण पावलो पल्ल घालू कद ही सावो मूरत निकाळर मजूरो
 घणाल्यू । आज ताई मिनार दो सौक कमाया है । जका बारवास
 जाणर कडधा र बाध फिरू । हमे आपर अठ ही राखस्यू, सी लड
 भळे भळा कर लेस्यू ज म्हारै गाव रो अक गडका वाट आसू ।
 टावरा न दाणा मत्वा लसू ।'

ग्यान नाथजी आपर लिलाड में तीन तिरमूळ चाटनी ।
 भूजर नी गाली सूजर । 'बच्चा रिपिया रै जाळ नै साघुवा म मत
 नाख ! कठ ही सटा री हेला म जा मेर । भाग म लिख्योण है तो
 कठै जाव कानी, नही तो धाणिया रो पीसो धाणिया र ही काम
 आयो । पाद्यो कोनैल जावण दथै । रिपिमा रो मो छोड भर भजा
 कर । नाथजी गरी मम्भार उवाज सू पिढत नै किया ।

ना बाबा ना ! म्हू अजाण आदमी धीन जाणू ? धा मू
 दूजो म्हारो कुण घणा है ? म्हारो तो नगर मे घोजू की माथ ही

विगलान हि ! तान् म रो क्त्वा एत रो !"

अथवा तो ! नाथन कियो— एतै व ३ भव गत
परा गो म नान्त !

ही मा रात्र ! विद्वत्ता व ना - गो "वाप विविता
भट्ट कर मद्रु गो मान हुा न पसाव पसा - मा ।

यगी र परलागा म वन वन रं धागव बा" थे । एत रे ?
र क्या पक्ष मी त्रिषी गुगा पर विगत वृग्गात्र ? विवा हा मन्त
तायत्री १ म्योटा म पर विद्वत्ती एतवा हुगा ।

तायत्री ऊर मू धाना म्यारी निवा विगतमी विगावन
री धगता बरी जका वात विगात्री र पगी ए उषग्गा । एत वात
जायक ऊधरी ही । तायत्री विद्वत्ती र वगधी मू वा र हुवा हा विविता
गिणर गुनक म धरपा । काटा वर नाता सकार मय नाना । मन
म्यान विहारग्या मपा निहारग्या । पाटवी धत मन मू निजुरा म
रत्तार आडा ऊधे ताळो निरा नियो ।

निहारी न नू चो निहार भाव तरावो न नू वा गराव अत्रे
धर चोरा न रोज रो रोज धन मिताण रो उम्मे" सागो रव है ।
विद्वत्ती धापरा लामा नचर वधाया अगीन बावत्री नू वा मरगा
मुरगी फमाया । नायजा गु टा में रियोगे मार पास्या गीग्ग हा अंक
उज्ज अडू तिवा धपड़ धादमी है । जगा ही ना जमीन नाव हो ना
नामून ! बाप र रान राती मजूरी भर गरीधी पल बाधेनी ही ।
म्यान नाथ रो नाव कोभा राम हो । अट्टार वरम रा उमर में ही बाप
छोडर चल वश्यो । ज" बाभा राम दक्कन आपरो लुगाई न अधा
वण लागग्यो । "या हुता ही मारी फोरो परणो गीग नियो हो ।
गाथ रा भग हैठ भग रा गाय नाच ऊधा राधरा मद्र कर दीना ।
तुगाई क धापी पण कोभा रान घोला राम नी यण्यो ।

थोड़ा दिना पछ पिडतजी बगेची जार रिपिया माग्या ! बाबोजी जाबक नटग्या । पिडतजी रा हाथ पाधरा हुग्या । या रा काड घाप्या पण नाथजी क्व है अठै तो रिपिया रै नाव सुसियै रो बोधो पग ही कोनी । पिडतजी उदास अर आमण दूमणा सा होकर मर म गिया । सारी वात गारघनजी मूं कयी । पण गोरघनजी नाथजी सू डरता छरा करै डरता रो जी जाव । काई मूठ मार दवै तो कठा ? कून्डी दुनाई अर मू डेड माथै रो के ठा पडै । पिडतजी नै खाती टरका निया । लारलै बजार म पिडतजी रो अणमणो मूढा अक भगतण देख्यो अर पूछ्यो के पिडतजी के वात है ? ' जद पिडत जी सारी वात बताइ ।

भगतण कियो— 'महाराज रिपिया तो थारा म्है सारा कडा देमू । थोड़ी ताळ न धे नाथजी खन आकर म्हारै सामा थारा रिपिया माग लेया । पिन्तजी पटकैर हकारो भर नियो । जद भगतण आप रो दासी बानी न कियो— क मोटीड सद्रूक म नीच दो तीन इटा घाल द ऊपर आछा आद्धा कपडा सजाय दे अर आखा र ऊपर म्हारो सोनहाळो सारो गणा मेल दे । ताळो लगाय दे चाबी मनै ल्याय द ।

भगतण हाणो धोणो करधो, तेल फलेल लगायो अर चाखा बोखा गणा माभा पर कर सेठानी बणी । रथ जोडा लियो, सिद्रूक मला दियो । बादी न सारा वात ममभायनी अर पिडत नै सेन देकर रथ बगाची काना टार दियो । रणभुण करतो रथ अर भणभणाट करनी नेठानी बाव रो धूणी खन जा रक्या । नाथजी गुफा म बठ्या माळा फेररिया हा । बाकी आखा मोड धूणी माथ बिलम बोसा हा । सठानी नाथजी कनै जावरो डडोन करी अर कियो—'बाबाजी महारा सट्टी घणा दिना सू परदम रव है । बाकी आज अचाणचको ही मन बनावो आग्यो । सो म्है परत्स जा रयी हू । काईटा काइ अड चल हुगी क ? बेठा के कारण कुन रिया है ? चडो सासो लाग्या ।

भाजकाळ घोरी चपारी रो घणो डर है । सो म्हारै गग घर रिपि
याळो ओ भाजसो धापरै भठ रगाव दधो । पाछा भास्या जे ल
जास्या । दूजो जगा भरोसो कौनी मा राज ।

सेठाणी इत्तो क परोर मिदूव गोयो घर आपरो अक
सान रो करनोळो भळ माय मत्यो । माल अर मत्ता अवर बावजी
मुढो ढीलो द्योड दानो ।

इय वएन रामलात पिडत घायो घर नायजी मू रिपिया
माग्या । मोड जाण्या इय पिडत न खाती मोठ्या ती अर सा
काम विगडघो नी । सेठाणी र वैन पड ज्यासा अर आप रो मिदूव
पाट्यो उठा ते जासी । जे वोल रे थोळी ल्यापरीर पिडतजा नै सूव
दीनी । पिडतजा रिपिया मिण्या अर थोळी कडघा र बाधो । इत
न हा तो बानी भाचो भाजी आ पूगी अर सठाणी सू वानी — सठजी
घरा पधाग्या वारसा । बघाई दरो घरा चाना ।

जद सठाणी नायजी न हमर कियो — के बात्रा यव म्हारी
सि दूव मेण रो गरज मिटगी । सठजी घरा जाग्या । पिडतजा मुळ
कर सिदूव रय म ओठी मनी नायजी हमर कियो — गन होनी ।
जद बानी बोली — हसी सेठाणी साहु आया विप्र हस्यो गयो घन
पायो । तू क्यू हस भरडा भेरवी (नाथ) अक धातडी ह्यकी
सीली ।

सूध अर जलसानी

८८०

सक थो म वेड माथ जेव चिनी अर एक कागतो भेळा रिया करता हा । घणा तिन साय रगौ मू शेनवा म मोनळी मित रा पडगद् हा । जन् आपम म दोनू घरम भाई अर घरम भण वणग्या । चावो चाय घणो उमाव तिथा मा जाया मा हत भिमता सू रजा नाग्या । चिडो पूरा घरमना पाळ पण कागतो वूडो अर टापी ठग हा क्ते ही कोइ काम कर करा नी टारतो । वी सन् चिडो री सूध सू नागायज नफा उटाणो चाया करता हो । गरज हुनी जणा मीटो जानती अर पटवा करतो तिथा नाचण लाग जाया करतो ।

गिरमी री रुत जेव सुधारण रा दिन । सगळा वता रटिया वूनां काडै अर आप आपरा भेता म अळपाट कर । चिक्करी ही आपरें भाई कागल न जेत सुधारण वेगी कियो । बोली—'काग भाइ । उपरतो रुत मागो हे । आपा ही जेत बीजण न जमी करा । अळम नीट उटावा घापर सावा अर तेनां जावां, धान हुज्याव तो भूपडी माडर बँठा !'

कागल उचळो दियो—“चोखी वात । चानो आपां ही खत

आजकाल चोरी चपारी रो घणो डर है । सो म्हार गण अर रिपि पाळो ओ बाकमो आपर घटै रखाथ दनो । पाछा आस्या जद ते आस्या । दूजी जना भरोसो कोनी मा राज !

सेठाणी इत्तो क परोर सिद्धूक खोल्हो अर आपरो अंक सानै रो करनोळो नळे माथ भेल्यो । माल अर मत्ता देखर बाबजी भूढो ढीलो छोड दानो ।

इय वखन रामलाल पिडत आयो अर नायजी सू रिपिया माग्या । मोड जाण्यो इध पिडत न खानी मोडथो नी अर सारो काम विगडघा नी । सेठाणी र वम पड ज्यासी अर आप रो सिद्धूक पाळो उठा ल जासी । जद बोल र योळी त्यापगीर विउनजी नै सू प दीना । पिडतजी रिपिया गिण्या अर योळी कडघा र बाधी । इत्त न हा तो बानी भाजी भाजी आ पूगी अर सेठाणी स वाली — सठजी घरा पधारग्या वार्दिना ! बघाई दनो घरा चानो ।

जन् सेठाणी नायजी न हसर कियो — के बाबा अत्र म्हारो सिद्धूक मनण रो गरज मिटयो । सेठजी घरा आग्या । पिडनजा मुळ कर सिद्धूक रथ म आठी मनी नायजी हसर कियो — मत होनी । जन् बानी बानी — हमी सेठाणी माह आयो विप्र हस्यो गयो धन पायो । तू बधू हगै भरडा भेरवी (नाथ) अत्र वातडी इधकी साक्षा ।

सूध अर जलिसाजी

८८०

सक ग्योउ म नेण्ड मार्यै ॐ रिंगी अर एण कागनो भेळा रिया करता हा । घणा तिन माय रगै मू ॐनवा म मोरळी मित राई पडगट हा । जण आपन म दानू धरम भाई अर धरम भैण वणग्या । चोखा चाव घणो उभात्र तिथा मा जाया सा हेत मिमता सू रवा लाग्या । चिडी पूरो धरमनो पाळ पण कागनो बूडो अर टावा ठग हो क्ते हा कोई काम कर परा नी टारतो । बी सदा चिडी री सध मू नाजायज नफो उटाणो चाया कगतो हो । गरज हुनी जणा मीठो बोवता अर नटवा करता तिथा नाचण लाग जाया करतो ।

गिरमी री र्तन सेत सुधारण रा दिन ! सगळा सेता मटिया तूजां वाढै अर आप आपरा सेता म अळमाट कर ! चिटकी ही आपर मां कागल न सेत सुधारण वगी कियो । दोली— काग भाद ! उपरली र्तन आगी है । आपा ही सेत बीजण न जमी करा ! अळग नीं उडावा थापर खावा घर खनीं जावां पान हुज्याव तो मू पडी माडर बैठा !

कागल उयळो दियो— 'चोखी वान ! चालो आपां ही सेत

चालीं अर काम लागीं । भैण । नू चाल म्है थोडी चिलम तम्बासू
करर भावू । टाबरा न सदा प्यावू अर समळा भावू ।'

तूवां चाल हूळा उठ अर उताळो आग वरसाव । पखेर
आळा म मिनख साळा म अर पसु खखी री छापी निसक है । आला
पाणी रा ठाव टाला पडया ठणका मार है । रात दिन कूवो वग जद
कद ही पाती आयो गुटको लाघ । पसु पडा स दा दो बिरिया पाय
अर मिनख जात तोइ र ही सार जीव है ।

बिडी जगळ म गई अर फिरघिर बोला सो सेत जोयो ।
सार सेत रा फोग काय्यां अर सगळ सेत रा बूजां ही काड नाथ्या ।
फोग ढेरी करर मिटिया बाळ दिया । पण बागल ओरू ताणी बिड
बली न समाळा ही नी । जद घापी अर अकला खडी जमू भी ।
बागल न हुना मारघो— आ रे । बागा भाइ छत भाव ।

बो-या— भावू जे भावू जामनिया गटकावू ।
दो कावा पाका तन ही ल्यावू ॥

दया कतो रियो पण सेत नही गयो । दिन विमू ज्यो सिफया
आद घायण काम सू धरयोडी चिटकनी घरा भाइ घर रो काम
करयो अर टाररी टीकरा न चुगगा ताणो दिवो । आट्यां भारी हुइ
निया मीठी नीद म मूनी । रात न मागाडो मे पडघो । पाणी ही
पाणा कर निया । तान जा हा अर गत आला पाणी मू भरया ।
पागडा पूरण लागया ।

भाल प ता नय्या बिडनी चुचाई अर बागल कन
गद । बावी— बाग भाइ । नू तो कोनी आया पण म्है तो सेत
माफ कर निया है । आयणनाणा तनें अडाक घाका पण पू नी
आयो । हमें मवुवा तू गिया है । भाजी भू है उमर न उमरो नी
नाथ । कित्ता चाया काम हुव जदी आया दोनू भण भाई मिनर

खेत बीज देवा तो । हतरा वायोना माती नीपजै । '

बाबू लाई अर पास कडफवाई । कुल्ला कुल्ला करयो तिया हवारो भरयो । दिया— 'ठाक है भण । म्है जाणू के काले म्है नी आ सकथो । भूल हुई आळस करयो । घर रा कामा म ही दिन ढळग्यो । आज घू चान काम नाग अर म्ह प्रायो हा । घू भला ही बैठी रयो, म्ह अकला हाफही हळ वा नाखसू । तू क्यू डरप बैनड, तेर सार काग जिमा भाड भूप खडथा है । सत न ऐक सराट बा प्रासू ।

चिडी भोळा अर सूधी वाली बोली खेत कानी भीर हुई । सत जा पूगी अर हळ बावण न त्यार हूगी । हळ जोडघो बाज गोड़घो अर काम चरू कर दियो । सारो नेन वा नाख्यो, पण कागला काढी नी पौन्यो । जन् जेकनी चिडकली आपजगी । भाई नै उवाज दी अर सत बलायो ।— काग भाड ! वगा आवो खेत बीजा । सगळ्या लोगा खेत जाता चान दिया है । आपणै म घास रळै ।'

बोयो— 'आवू अे आवू ग्रामलिया गटकावू ।

दोकाचा पाका, त न ही ह्यावू ॥

सारो नेन बगियो चिटा घरा आट । बचिया न घूण दी सुवाण्या अर आप ही सूठी । भास फाटी काम सळतायो । जीमा जूटो करघो अर भाड चत प्रायो । चिटा कागल वन गई अर बोली— भाई खेत सगळो वा लियो है बीज नाख दियो है अर जोता चाढ नियो है । तेर नही प्राण सू मन अकनी न सारो काम करणा पडघो । सार बिना खेत डाढा दागे नयो है ।

थोडा दिन जया स ही काम चालतो रियो । पण कागो सत नी गियो । चिडी जाव खेत रवाळ अर फोग पाळ । वाड करै खाई देव अर हू चियो भू पडा माड लेवै है ।

खीली रोही सानो घाग जगळ म मगळ माग रिया है ।
 पंगु चर करमा निनाण कर घर पगरया गहकना यका रण-गण कर
 राखी है । रगीता राम हरधा माग घर यका पुता मू घाग-गारी
 नी नाम रया है । मोटा रा टोत चड रिया है । गगर रा गाग गड
 गिया है घर बाजर उरणा रिया है । घाग रा भाव रया पदपा है
 बाजरी रा वात हारिया है घर आगा माग निनाण बाजग न मगु
 हारिया है । जद धि । काग न न कर है— कागा भाई । बाजरी यध
 रयी है मत नद रिया है । चा नो वगा मो निनाण कर घावा । माडो
 कर दिमो तो बाजरी रा बूटा यधना नी उळटा न्ब जायना ।

पग चिडी न हा बोटी पाछा पडउथळा मित्या— तु पाव ।
 म्है चिलम तमागू धी आगू टावरा न चुगा पाणी द भावू घर
 छाया बठा भागू । चिडकती चाती बागना क है बाती । मत जा
 पुगी भर निनाण बाजग न मूधी हूगी । क जोर कर— आप कमाया
 कामडा किण न दीज दाम भफाभक कमिया वाव है घर निनाण
 काड । कागलो मजड माव घरा बळयो दान पण मत नी जाव । जद
 धापी चिडकती मत मू हलो मार—

कागा भाई माव । निनाण काग ।

बोल्या— गाव ज छागू आमनिया मटकागू ।

दो काचा पाका त न ही त्यागू ॥

चिडी कागल री अडाक छोडर सा निनाण कागो, घास
 चुग्यो तिया जटा करी । घास री कूडी (निगनी) दानी घर बाधा ।
 धान न सारी आगा बाजरो पर खाग्या । पूरा काम करर आयण
 घरा भाई । बच्चिया न चुण पाणी तिथो घर चिया न सुवाण परो
 आप हा सुती ।

एक दिन चिडकली कागल न भळे कियो— कागा भाई
 बाजरी पाका खडी है सूकी सिट्ट्या लुळी पडी ह । आधी है चकी

है जिन्ही है, फाको है। तोडर दाणिया तो भेळा करा। “मू आई रोजी है, साग साग पेट ही तो कात्ता रस्यां। पण चनाक काक भोळी चिडी न क काढ दवै हो। तिरी दिखावता रियो। भळमा भळमा करत थरु विप तो बो ही आप रो पुराणा गीत अगीर दियो—
तू चाल ! म्है हाको पाणी पी आवू टाबरा नै सुवाण आवू ।’

चिडी बडी भिगत मू काम करयो पण बागलो खेत नी गियो। मूकी मिथ्या री मोटी पूजळी लगा अर सेवण वूर मू छा, मिथ्या खोरस मू थवयोची चिडी घरा आई। घर रा काम भळे स पूरा करघा अर। बचिया र वीचाळै सा रयो। दिनगै उठ परीर पाछी बागल बन गइ। बोली— भाई दाग ! बाजरी सारी म्है ताड ली है। अर गहा कर खळा काढणो है। आज बळ वाळ ही चोखी चालै है। आज आपा दोनू मिलकर इ काम नै पूरा कर नायां। मू खळो वुहारस्यू घू पूजळो मू सिथ्या रा बोरा भर भर नाया। मड रोप परा गावटो करनस्या अर हाथो हाथ सडा नासस्या। सावढ दूठ जासी सारो छूट जासी। नी तो आभ माथै म ओलर रियो है काळा भूग वाळ भाज्या बग है। बाजरी भिजो दी तो आपण भारी उजाड हा जासी अर फसळ मे खोटळ पड जासी। आज म्हार सायै चाल ।’

बागलै सदा जिया ही भीठी बाली म उयळो रियो— आवू अे आवू आमलिया गटवावू। दो बाचा पाका तन ही ल्यावू।

बागलै री सागण ही बात सुणर चिडी खेत उठ बगी। सारो तिन काम करघा सिट्टी गाह कर बाजरी ऊपणी। गाया रो याग आयो अर बाजरी र खळ माथ गाया हूकी। चिडी रै उजाड करयो जद चिडी गुवाळियां न गाळा टाकी। गुवाळिया आया अर चिडी न जेक गाय अर बळद दे गिया। चिडी बाजरी अर चाचड घोयी दोनां रा, दो अळगा अळगा दिगला लगा दिया। काम निष

टाया घर घरी घाँ । घर रा मग नाम पूरा करा परार मोगा । परभात सम बेगी उठी अर बागल बन गई । बोनी—'बाग बीरा ! घाज घावा न घान री पाती करगी है । नो दिगता लगायी पड ग है गाय बळ ह्याया गडघा है । पू घाल तो दोनू बीजां बा लवा ।

बागल उतावळ होकर बियो— हं घाल ! यणी घान । बाई गायग्यो तो उजाड हूयायना । बागलो मरगटो उंपरो पत्या ही सत जालग्यो । पण भोळा रा भगवान ! बागल जारन पाण ही चाचडाळो मोटोडो दिगता धिणाग बियो । बियो— पू ! या ! बडोडो बडोडो दिगलो मे रो !

चिडी बोनी— हुवा भाई मरे छाटिया ही घोसो ! पण घाज तो एक ही पाती करस्या । चिडी खुमी खुसा घरी गई घर आप री बाजरी कोठी म भरी । चिडी न बडो भो हो के बागलो पाती करण म भारी भोड घालसी । पण भोड नी पडघो सटकर काम सुळभ गियो । बागलो चाचडाँळ दिग न नी धोडे । भगवान कर जर आखा काम घोसा ही करै है । बियसू के दुसटा री दुसटा ओल थोडी है । दूजी दुसटा न करणी रो फळ ही तो मिल । चिडी दूज तिन सेत गई ज फफळी ज्योड बागल बडोडे वळ न देखर भळे बियो— पू ! या ! मोटोळी गाय मेळी ।'

चिडी बोली— हुवा भाई मेर छोटकी भला ! आप आप री पाती आयोडी चीजा ल परा घरा आया । भूपडी माडी अर बठ्या । सीर सवारी चाकरी राजीप रो काम । चिडी आप री गाय अर बाजरी हाथ बमू करी तिया मौज मज स रण लागी । मणत रा फळ मोठा है ।

बागलो बळ रै मून म चाचडा अलो अलो लोखे पीव है ।

चिड़ी बाजरी पीम खीर राघै अर लवकावै है । आप आप रो दाव,
आप आप रो जुध आप आप रो भाग, आप आप रा दुध ।

अक दिन चिड़ी र घरा मोकळा बटावू आया । चिणी दूध
दूध खीर राखी अर चावळ फनका री जेट लगाई । साग छमकण
बठी जगा हीग चँत आई । भाई काग र हींग री भूपडी है जकी
कागल खन मांगण बगी गई पण कागलो करमा रा कीट, कीरै आडो
धाव कीरो काम काडै ? बीर जो सू चीज दणी क उतरै ? जाबक
नट ग्यो उतर दे दीनो । चिड़ी नामरी निमभर ल्याई साग छाछीता
छमक्या अर बटाऊवा ने तिरपति कराई ।

रात पडी बाण्ड आया वरमा वरमोजद कागल जा
चू चाया । काडी री हींग हाडी भूपडी सा गळर बै गई । कोरा
मगरा घोर बळ्यो भीज, चिटकली हाडी भूपडी पर लीक है । आधा
रो मायो र चिड़ी रै घरा आया अर बोत्यो—

चिड़ी चिड़ी तेरो भाद गीज ।

चिड़ी कियो—' हीग बगी वयू उत्तर दीजै ।

कागलो बोत्यो—स्याणी भण है पाळै मर रियो हू वेगा
भूपडी म बटाण ।

चिड़ी कियो—भूपडी म मन आ नागडखाण ! तै मन मागी
हींग ही नी दीनी । पण कागलो धिगाखै ही चिड़ी री भूपडी म
घमग्यो अर कियो— भाई नै चूलहै बटाण द, का चाकी जगा दे
चिड़ी गई करी अर कागल न भूपडी म बँटाण्यो ।

जेक दिन चिड़ी पाणी र घड नै चानी । चूल म सीजती
पीर री हाडी कागल न समळाई अर किया मै वगा आऊली अर
रोटी पोर तनै जीमाऊली । पण कागल सार मू रपती खीर हाळा
हाडी घूस सू उत्तार ली अर ताती र खीर गत्वा गणी । सागीडो

घान्ग्यो घर हांठी पू छनांवर मू धी मार पती मू टी तान र मोगिदी ।
चिह्वली घाई घर गीर हाळी हांठी बागो पद्ये देती ज चिह्वनी
नै ही भाळ ठपडी ! गरम मू सी, हाळो ताबळो वाङ्ग्यो अर मूठ म
सातो दीप्यो । गरही रं गीरां म ताबळो तान मूट हुग्यो ज चिह्व
बली निपडव मूनं बागल री पुडावठ माप घरट देती चप नियो ।
सातो ताबळो चिप्यो घर बागनी ऊछटपो—

‘चिह्वी चिह्वी मेरी पूछडी राज’
चिह्वी— मपू लोगां री सीरही साजें ।

नाड़ी वैद



सूरजो जाट खाती अेक सा उट राखतो अर खेतरो काम करतो । बाकी चौग रै नात घर म खाट ही नीं धारतो । डकम डका, रडो भडो, दो पोई दो काल म राखण हाळी कंबत लागू करतो । कदे ही सीरो घुटा नाखतो, कडे ही खीर घणा खातो तिथा कदे ही लाघण ही काढ दिया करतो । कदे ही घी घणा कदे ही मुट्टी चिणा वाळी बुवावत इ जाट पर पूरी फवती । कदे ही एक वखत कदे ही दो वखत, कणा ही फाकी भुजिया अर कदे ही दो दाळ सागरी तेवढ लगा लिया करतो । ऊट घणी रा कोड करतो घणी ऊट रा बुचकारिया भरतो अर घास रा बगाळिया तिथा लीलै रा गवाळिया ऊट र मूढै म जाट वडै ठाठ सू दिया करतो । ऊट ही सिफाया री सू क दाई बोलो-बोलो ल लिया करतो हो । निलम पीवतो जद साग पावतो, जीमतो जद टुकडा खुवावतो । ऊट सू घणो लाड प्यार राखतो उनाळ में मण मण घी सीयाळी मे छुद्यो चारो, मेथी अर पिटकडी तेल गुड यारो, मीण री मीण बघ्योडो पढथो हो । थोडो घणों उणायलो रै जातो तो घान छोड देतो अर टाण में बठथो हाथ फरतो रतो । थोडो घणो खेत वावतो बाकी रा भाडा कमावतो ऊट र ताण खच्यो-खच्यो फिरथा करतो हो ।

सुरजो जान जगा निया जु बाद भाई साग मू हाप म
 ताठी धनखबाण गोळ माफा, ऊ माथ चढा रो गिणान, देवना घर
 घातियो तिया आपरी चनिया घोनी र गत म अणगिणत मळा रा
 उमरा रो लर वणाया भावतो जग मिरोमान ऊ दखना जो वना
 ही उरणावण ताम जाया करतो । सुरजा सत्कर गुड गाळ तिया
 करतो, तगारी भरर ग्राम मेन देंवो घर ऊपर मोवळा मामा बीर
 दया करता । ऊ चरड चरड गुड रो रत पी परार उगाठी मारण
 ला जातो । पड रो आषो थकला उतर जना अर न्निग न ही रा
 काटा सा काड लता तिया कवळो लग वगा वणपावता ।

सुरजो जिया डूजा र घरे आ । उतर जीमत बिया ही
 आपर घर आप गियै न वाडा गोट खुना दिया करतो । क्या दीई नी
 हो । जिया कई मिनख पारक घरा ती च्यार च्यार भावाँ माथ कमर
 खोन अर जीमण न बडे जद मर पूरा दय । पण आपर घरा कोई
 वगतो वटावू आयाव जणा सित्या सी कड ज्यावै । मूडा उळाव अर
 झोलो खाव । कोई घर हाळा र इवयाबर री वारी वता देव । कोई
 कडमै मे सोग साबित कर देव । पण मरथा ही टुकडो नी घाल ।

सुरजो वा माखीचूम मुडदा मिनखा मे सू नी हो । वो
 कतो रतो तोप रै गोळ रो लडीड पचास कोम ही सुणीज । पण
 तोवै मायै पडती रोटी रो दडीड पूरो सौ कोम ताई सुणोज है । बीर
 घरा पटवारी हुवाल र । गरदावळ अर घाणार, भाया गिया कुछो
 वजाना ही रता ।

अेकर री वात सुरजो घेत में ख०घो मोठा रो छळो वा
 रियो हो । ऊट न डेर र सन चरण वगो छोड राख्यो हो । खेता मे
 तावणी हो खुशी ही अर घन पमु चरता फिरै हा । मिनख भेळवाड
 खवाव हा आपरै खेता म आप आपरा पमु चरावै हा । सुरज रो
 ऊट दावणा दियोने खडवो थोडा घणा र्हासुटा ताड हो । मलरुणो

गयी हव जू धोळ मत रै धारै मार्यै ऊभो घोप हो । अनाणचकी
 नी अक तूम री बल मार्यै जा हूययो अर मोळाय तू वा ग्वाणा मरु
 कर लिया । अक ग्वायोक्, केठा दो त्याया ? पण भाग जोग सू अेक
 भोगे सो त बो हगै र कठा म पजग्यो । तू बो कठा म इमो जह
 मस्यो जको आगै जाव न लारै कडै न गिटोज । ऊट बठग्यो, अर
 आमण-दूमणो हूग्या । माग तो धाव पण भाग अर थूक कटा सू
 अळगा ही रव हा । दू टर उगाला बोट दानी, नस पसार दीनी अर
 गंधारण गगग्यो । ऊट रा दगा जावक माडी हुगा । मुरजै न टा
 पन्धा तो भाया आयो । वीरो जी ऊचो चढग्यो । सुरजो जाणग्यो
 क ऊट वचाणो दोरो है । जे हूव तो की राईकै या वैद्य न देखाळणो
 चाय । एड एड र के अडचल आई ? मेत म छोडण हाळी आज म्है
 क कुवघ वमाइ ? विरतग के हुयो ? ऊट रो अग अग कर नी कियो ।
 मुरज सळो बीचाळ ही छोड लिया अर ऊट नै लपरो हेदकी री पड
 ताल म भार हुयो । सजान सू हेदकी ठावो हाय आग्यो । हेदकी ऊट
 दरयो गळा टटोळो अर सारी वात समभग्यो । सुरज न आपरै खन
 बतायो अर पूछया—

“धोळ मत म चरण छोड्यो के ? ”

सुरजो बोयो—“छोडघो !”

हेदकी—‘दवको लियो व ?’

सुरजो— लियो हो सा !’

हेदकी— मेत म तू वा री खेल ही के ? ’

सुरजो राजी राजी— ‘घणी ही सा !’

जणा हेदकी (वद्य) कियो—‘ल्यावो तो अेक मोटो सो
 ममळ । जाट अेक मुसळ ल्यायो अर हेदकी न भनायो । हेदकी
 मो री हुजा मिनखा नै भनार ऊट री तग नीची कराई । नाड पपोळा
 अर गळ म तू बो अडघोडो देखर मुमळ न जोर सू भात्यो । मुसळ

न सुघोर उर र ह । उर गेवर मरणा । न सुको गूट पना
 उर गे म विमो धर मूढ म भागे मर पानी पा पडयो । उ
 र मगर र ग र धारा । उर । उ धारा पर जमा भ मयो । उ
 माया हागे मुग्धा उरा । उ मयाया । विर । मया बर म र
 म है । वा र रा दा । म ररा उर माया करि यो ना ।

मया हीन उर भाग्य धर व नी मर म गो ह्यदा
 हापे भागे गुरा मुगळ कड र ५ ॥ मय मुगळ

माय माय रा मूम है माय माय रा कड है । कोर रा
 मरत है को भय मरा है । काट कोरो बाण मर मभारी म हा नी
 हय । कोर म म न रो म न र है जो जग र जार गू मिनत नै
 जगी मू माय विचारनी वन है । गुरा व वणने हाळा वा म न में
 काटी धार लेना धर मापर ऊट निमय म न मया धाड्या जाण
 काई दुवारवाजी जायणियो मिनत माय रा मारता मू मुक्क चया
 जामा कर है । गुरा मापर अर मापगे गिरस्वी रै वेठ पालन नी
 शिवमत रो भूषा वाटवारता गावा ने मचार यती फिर है । गाळ-
 गाळ म मू वद । मू व । रा हेना चू चाव है ।

जब गाव में जर डोन्नी पणा दिना मू मारी पडी ही ।
 कटा में गाठ ही उमर सात साठ हो माच म पडी भुल ही । वण
 वटा पोता बड़ वया वगा हव है ? भयान परवार नै मू भूट है ?
 डोन्नी र स हाजर गार छाडा है । टूकमा में हाड है । मार्ग जू
 देव है दवळा सी एव अर छाटा मोटा सारा जणा सव है । नाडा
 भाडो नाख हाथम दाव लिखा सार पर रा मिनत बोळी माय
 पाख दिया बंध्या है । वरेही मुग्धियो कणा ही रो र । कणा ही धा
 रियो हवा रो हिनार । हाथा म पूषाव है । गुरज रो हलो डोकरा
 हाळा वटा मुण्यो मानस्यो मादयो तिर मुण्यो । वद न घरा बलायो
 अर पीडो लळर वूनी रै माच सारै वडायो । माहू वद डोक्को रो

सीधो गळो जोयो । गळं र अंक मोटी गांठ डोकरी रँ केई दिना सू
 कड रयो ही । बी गाठ न वद मा राज आछी तरा देखी भाळी अर
 टानी । आपर ऊट हाळी सागण अडचल जाणर बोन्ळी न मावळ
 कर ऐली री हामळ भरी । मगळा सू मोटो उट न आपर वने वनाया
 ठर पूड्या— 'घोळ खेत में छोडी क ?'

बटो बोल्यो— अर ! वैदजी ! साट घाडी है ?'

वट— म्हे कूह हू जिया ही कणा पडसी ! नही ना म्हे इनाज
 करू नही अर घारी मा जीय नही ।

बेटा बाल्या— ता ठीक है । (जाण्यो कार्ड जाडू होसी)

वद— घाळ खेत में छोडी के ?

माटा बटा— धोळ खेत में छोनी के ?

वट— आद्या मूरख है ?

माटो बेटो— आद्या मूरख है ?

वद— अरे ! मा न ठीक वणार्णा है ना म्हे कडू विय
 वान रा उण्ळो रवो । पूडू जको जबाब दवो । कडू जिया मत
 कवो ! नहा तो घ जाणा घारी काम जाएँ !'

मोटा छोटा सगळा बटा बहुवा उण्ळो देण रा हकारो
 भरघा । जाण्या माऊजी ज्याव तो हकार म म्हारँ क नाग है ।
 बोया— ठीक है अब पूरो जगाव दस्या !'

वट पूड्यो ही— 'घाळ खेत म छोनी क ?'

बोल्या— छोटी ।

वट— दवको रियो के ?

बोल्या— रियो हो !'

वद— खेत म तू वारी बेल ही क ?'

बोल्या— 'घनी ही !'

जद धर विद्यो— त्याचा ता अज तरा नेगर मण्ड !
पर हाळा मुगळ तगावो जाण । काँ भाग्य भग्यो करेता ।
पण वर तो हा वता । त ता वरा ! घसाणवता ही पूरती र गळ
माव तळता तग्या । डावगे योग मारा अर राम नाम गरी गुन
रग्यी । पर गळा घाँ वर रा मूरगता माध पता भत ता वर
गरी भावणा उतारी । तता मू ताळरो घरड निया । माध पर
रगतो दरमण न ही द्याओ ना । धर रा घामही म घाण ।

पण घर के जोर बाल ? वूठली रा प्राण पणू गो उटग्या ।
रूकड जाणो घय विनी गाउ पाथी घाय ? अर तिन ता मरणा हा
हा ? भगतण मू पूरी । पूरी न क पूटी ? पण घरी ना ग्याही
निषा जुगती होणी गाय । घा गावर मग वट्टा घाँळा र वणे
म लाग्या । वर न माग तीनो घर घ्यारां वाना चीजा यमता पारण
न भाग्या । वर मू चनण त्याया कड मू गाणरा मगाया तिषा
दारी मोरी पागळ री नवडा री गोज वगी । आणता घर मुकामिया
गावण री बुगी तिषा सीषोणे नवा साडियो गाभा म टावा वर
रीना । दो हालही दो घाम च्यार भ्याता अर पूळी गी भाव मू
गोही वणार त्वार कर तीनी ।

मुगाया घर म हाणा धाणो कराया मिर घोधो घर
गु घाया । डाकण दीनो अर भाव वास री भेळी हूपरार हट रा नीचळो
घरीरघो । सीडी माध मुत्राणी ज वटाँ पिरकमा देणी पळाइ वाना
डडान सह करी अर बहुधा हाथ जोडघा अर माया निवाधा । माण
रा दाडी मू छघा नाळी टाबरा माथा अर मुगाया मू घटा
काड्या । वरूड जाण्यो वूठली मरी
माण ताण मू पाघो सुघर है ।

वेताँ री रुत, खळाँ रा ि
पण मोट्यार पूरा वाध देवण हाळा

अब वर मिलर ही च्यार जणा हुवै हे । कुण बांध देवै कुण वामन लव अर धी हाळा मवणियो तिया पिडाण हाळा पीडिया ही कुण माभ ? भोडू तो काठ ही मुमाणा नी गियो है । मरधाडा माणग पिना घरा घोडा ही रमी ? हुवै जिला मू हा सारा । टोन्ग रा माटी विरान तो मनी करो । तुगाया भापरा जाणसरा माण मोठ्या रघा न सीव दागी ।

दुगा रा ने वटां अर अब वर पैल्यो तो तीगवां मागे कांठ मुमाणा पुगायो । पछ भीदी नै काठी बांधी अर उटार चाट्या । पण वामन हाळी हाण लवण हाळो चाद वस्तो पाचवा मिनल नी हा । पोता जका दम वरमा रो टावर बांध न ही पूगे पूचै नती, कारो हाण सगाया वग है । आतरी विरिया वागने हाळा हाडी बद रें गळ म घाली । कियो— म्पारी मा ता थ मारणा पण अब दुगी जुगनी मुगनी न तो करा । म्पारा ता थण खानी नी है । पीणळ हाळी लकडी धी अर दाणा कणको दारा मागे न राख्यो है । हाडा म यामत घाल्यो मू जेवडी बांधी अर बद र गळ म घाली । वर ग गाती बळर चमटा उपडग्या । मुमाणा तां दग्या ता मरी पण सग छाता फतकलीजगी । फाना ही फाला उपडग्या । डाकरी रो नाग हुयो अर बदहा पीडो छुडार भाग्या । की दूर्जे गाव म गिया अर भट्टे नाडा बद रो कियो । दिव गात्र म ही जक मिनल मादो पहपा नाग्या । बद नाड दखी अर कियो— ह्य न झाछो ता म्पू कर दमूं पण मरग्या तो वामने हाळी हाडा हरगज म्ह नही लवू ला ।

नागां कियो— मर ठिठकारथा । कमूण ता पल्या हा करै है । इसा के देकुव नाडी वर वण्या है ।

हफोल संख



म्हारें घडें मारवां माय भात भनीता रग रगीता चोवा
 धनोवा पगु पटी घर जीव जंतु होवें । वेची जगळ रा वागी वधी
 प्रवास रा प्रवासा घर वधी जळ घळ रा विवाही नाथ जागीर जेप
 रया है । रोभ जरतडा गरजा कुम्हांतळी मं मेळा रागी विचु
 भीम घर मामादिया आमा भाग आपरी जगा पया पूरुं भ फुं छिं ।
 वधी वधी ता दोनही जगा भा धिणाप रागी है । आं जिरा न
 योग बन्य भी कव जुडण रा घर निरण रो दोनू वळा मीम रावा
 है । कचेधी नीर घर कधी नीर आप ता । भाड ता । मानता श्री
 मिस । मिनयां रो बधाव पडनामी पाणा माय घर पाटी पे मीय
 वरना या तारी घुं माय तोट पो वनळी पांख्या पत्रारण भाग
 भाव ।

धर रा बाव !

टावरां रो टोळी मी ते कोपात जिमी भीन रं कराहे रमण
 भवन न मधी । रमना गवता धी सुगर धर घुरावान जुवळी ।
 नय रा लळ माय अक भावी घाड घुं-मुडना पकी तावडो वर
 रमी ही । बाटवां भुवन दगो भापा घर ध्यामेर घेरियो

बणायो । पण आठ री कमजार पाय्या ता जावक भाज्याडी हो । वा
 बड नी सकी गपळगी बुडबुडती मा बणगी । बाळक अुणने माटी
 न मरयोडी जाण र लकडी करण लाग्या भाळा-पल्ली अर धिग्याना
 बाळ जीव न वै क जाण ? आठ रा वै अोर के लाड कोड करे ?
 गणान मींगणा छती चिरमन्या आड रे जूवर नाख अर हमे राजी
 होव । आड फाटोड खादिये ज्यू पाळ रे कूण माय पडी जमी
 गो दीस ।

दिस्ये मीक, गैले बगता वठीन जेक किरमाण आयो । वो
 बाळकां न भातरा ममभाया । कदा क्यू वापड जीव न फोडा
 घाल रया हो ? जीव जीव तो मव माय शरोवर हाय । आपान कोघी
 मार तो कित्याक लागे / आ के थोल र वाटा आ कैवे ? छोटी
 वापड न किणीन श्री दुख नी दवणो ? टाबरा अण मिनख रा बात
 मान तीनी । प्रतख रो लागे टोड दीयो । पण वतख र मन सू
 टावराळा डर ना निवळ्यो । वा प्रिया श्री भेल्ली होयोडी पडी रे श्री ।
 पण अण वतख रे मन रे सका किरमाण जाण तीनी । वतख नै
 आपर नाय माय अुठा श्री अर लय जायन भील री चोभ माय डोव
 दोनी । पाणी तो आठ रो रवाम श्री हो । बडे डर किणरो ? पाणी
 माय पचना श्री आठ मुख री मास तीनी । किरसाण बठ सू टरण
 नाग्यो जण आठ कया किरसाण बीरा धोडी देर ठंगे । ये म्हारी
 ज्यान अुगारी हे । जिके र वदळ माय मे श्री घागे घोडी चाकरी
 करणी चात्रू ह ।'

किरमाण अेक पड ओ नी सरवयो ।

आठ भील रे अथाग पाणी माय चभी मारी अर छिण भर
 नाय श्री मुण्ठे माय अेक सख प्रिया वार निसर आश्री । सख न वा
 मान रे किनारे मेन दीयो । किरमाण सू कयो किरसाण बीरा श्री
 ये छिण सख न अुठा र धार घरा लय जावो अर छिणने

है । पिण री नाय डफोळमग है । कधी जणा पिण न लण्पोडमम भी क्या कर । पिणमू जिशी धीज गांगाना घा अुणनू दूगा पात्र धाने दगो ।

किरमाण बो-यो न चा यो गग सय परो र णिया घर कानो ततीसा । तडी ण्यग्या । मारग माय घाज फरू कान हाळो भायलो मिल्या । घा घाज किरसाण मू भळ डफोळमग हाळो बान मुणो तो मन माय नाभ र धोमो आगम्पो । बो गाच्यो गरो सग माग जितरो घा तो ण्व पण डफाळसल माग जिम्मू दूणो चौगणा देव । घा 'घाज किरसाण न फरू घापर घरा सग्या । मावळा मान-तान करघो घर ढोलियो ढाळ न मुवाण दीया । किरमाण न नीद आधी जट हाळमारू डफोळमम अुणाय सी यो घर अुणरी जगा खराडो सग ल्यायन मन दी यो । किरमाण जुठ्यो घर घर न टुठ-कयो । रिगतो विगतो वग्वन र वळ आपर घरा जाय वटघो । डफाळ सख हाळी सगळी वारता आपरी तुगाभी नै वतापी । पण लुगाग्ना अुणरी बान रो भरोमो नी करघा । वा जाण्यो क ठा फाल हाळी मी होव । पळ किरसाण घर अुणरी लुगाभी दोनू हाय धोय नै सख म्हागज रा पूजा करण नाग्या । हाथ जोडया सिर निवाय घर बोल्या सख ण्व म्ह घणा गरीब हा । घरा पूरा णाणा भी नी है पूर नी है । मेन्टरबानगा करन धीग रिपिया दिरावो जिबो घर माय अ न बपरावा ।'

सख बीस रिपिया काढ धरघा । किरमाण र अुणरी लुगाग्नी होया हरघा ।

बठीन किरसाण र गलाळो भायेलो उफाळसख सू अरज विनती कर रयो है श्रीमान डफोळसख । मन दम रिपिया री घणी जरूरत है । किरपा करन आप पिण अडवी री मीव दम रिपिया दिरावो ।'

डफोळमख म्हाराज बोल्यो अरे खाली दस रिपिया ? दस रिपिया तू काँची होती ? में तो बीस रिपिया देस्यू !”

किरसाण रो भायली शनी राजी बोल्यो ‘सखदेवता ! धे ता घणा त्यालु हो । लोगा रे मन री वात जाणो हो । बीस रिपिया देय दवा ता म्हारा सगळा काम पूरा होय जावै ।’

डफोळमख दुजै मळ बोल्यो ‘अरे भोटा ! बीस भी बयू ? पूरा चाळीम सब ना !’

भायलो कयो बोला म्हाराज चाळीम भी तिराय भवो !’

सख अूळो दीभ्यो ‘बस चालीस माय भी घापग्यो ? अरे चाळीस ! चाळीम सू तो पाँच दिन रो सीधो सराजाम भी नी होव । अस्मी बयू मागै नी ?’

किरसाण रो भायेलो अूधपग्यो । रीस नै रोक म बोल्यो ‘बोवो म्हाराज, अस्मी रिपिया भी दिरावो । कीभी देय परा नावतो करो !’

डफोळमख कँयो ना भभी ! ना ! अस्ती नी, में धानँ अस्ती रा दूणा-पूरा अक सी साठ देस्यू ! पूरा अँकसो साठ ! चरे साभी भर मिक्कँ दीपता !

अबँ तो किरसाण रे भायलै रा जाबक खाचा ढीला पडग्या । बो लाल होयत बोल्यो म्हाराज काँची पूणपावली देवणो है क नी ? का, कौरी लप्पा-लप भी करणी है ? काँची थोडो घणो देय दिरायरे लारो छुडावो नी !”

डफोळसख ऊधी हसी नू हस्यो अर हसतो भी गयो । कयो ! ‘अरे भाभी तू तो निराठ गिवार लाग्यो । जाणँ कोनी मनै ? म्हारो

व मांश है ? मांश शीघ्र 'हृद्योऽर्पण भरण लोडगण' कदा कर । मी
 तिराण हृद्योऽर्पण इत्यसौ कर्म कौश ह्य ॥ कर्मणा है । दिन भर लो
 मागर्णा अर जरासो भवना भवना कर्मणा ही इत्यसौ कौश है । जरासो
 जमा-भारण है गिवाय देवण भेवण मी इत्यसौ कौश है । र मत्री रा मांश है ।
 दयणो भेवणो लो लोडवा रो काम है ।

कल थरा बतारी



सीयाळ म सी पडै, उन्नाळै म लूवा चालै, जका पोडा जगती र हिवडै म सण सालता रैव है । पर मुरधर रा माणम इया पोडा न जू जित्ता ही नी गिणै । सीयाळ न जावत जमान रो मुत्र समभै अर उन्नाळै न आवतै चौमासै रो चोळ-बबोल मानता थका रुडा रस बस है । नीर भरै चौसै अर कळायण न अडीकै कोसै । वरसा आव बाधो पडै घन पसु छाती सू ऊतर अर हाथ फुरण लागै । राजव्यारी रोजी चालै खट दरसन ने माग्यो चालै । वाणिया रै व्याज सूणा आवै अर बीजोडा ही आप आप र काम रा पूरा दाम पाव । इय खुमी म ही भडो रा दिनां मे ही तीज तिवारा री लडी सी छुपी भावती जाव है अर लुगाया गावती मनावती रैव है । मोर बोल, मिनख मिल अर बोरा तोल तिथा घुरिया ईलै खेता घघो मिल किलविलै है । धा रा दिन है, रोही रा वरतारा है, गावा म सूनाल है, घरा रा मजा खारा है । बूढा ठेरा लूला लगडा, पडघा सई का कोई अपग आळसी अर मद कमाऊ खडघो गळघां मे गट भीगणों सो गुड रुड । की सू जिलो जोडै ? की स गुरबत कर, एक सू दो हुवै तो दिन काट नही तो माच चढघो मरै मरै । अ

मन से प्रेम किगोरु कागी है ? हाँ । इगी ब.ग अरुग ही के बुधमन विषय नै भयो हो धारयो लागयो ।

बुधमन धरु बारो क वगो कायो जव न हो । एका होत एत म दोन मगका मित्राज धो जोरु हायो । बुधमन से भोवरी भायो बगो केगविध पाव धरु धरु धोनी अग भाव । रोबीनी एतक मगोनी भाव भरु एगी एता रँ टाउ मू बुधर मेरी से बुधो ही धोद मा । निभवा रँ वलय जयग। मगन कटो बडा मग ऊपी भा रची हो । बुधर ग कीवनी गुण गाभा देतर बुधमन से नीवण बगो । मन बिटबाठ नियो । पाव पावरगयो मोर परलटयो पोपी भावता पट्ट पट्ट पायो पट्टा म । बुधर भाव रँ रग ध रात्री पण बुधमन हायो धोळ-धोळ भर पायी । रात धारगे धाररा मग करी बुधमन से माग्ग्या पुग । निभय पर निपडक मूण बुधर रा एगी भाव गोडो दे पगोर अठग्या धर सुरी दाय बाडु लिया ।

बुधर नियो— भाई जी इयां नियां ? धन चाहीअ तो र्यो । गीगा चार्य ता रागो पण इगो नामून ना करो । पण बुधमन भाई गहीं वेंरी वणग्यो, धारती अनुभव मुनी अणमुनी कर ग्यो ।

बुधर रोवणी-बुधरु चायो तडफटायो धर उपान बधावण सातर पणा ही तरळा सीमा पण बुधमन तो गोडा तीध दायर बठ तोड हा दीना । मोर्या रा बाळा सोनें से गाबळी बटी-बडा मूडी बाटी धासा थोरा डोडा चूट लिया भर ताळ भातर गिडूक म जरु कर दिया । एहाग से गाभ म पडोव बाधी धर आपर विद्योवडाळी माळ म ग से गलत करदा । बुधमन सारो काम वणा नियो परदेम बभावण से मनो उपा लिया ।

बुधरर नीं साधण मू मूडा टाकर टुकरानी (मां धाप) बाढा रोया अर मू गा बावळा सा हुम्या । गोडा टूटग्या थोमा फूटग्या

परमूष माथै पढग्या । जिनडी सू जळग्या दुख म गळग्या तिया
तीन भयान सू जाता रिया । बुधमल सू कुवर रो पत्तो पूडघो तो
दुव सू क केठा डर सू ? डेर होग्या । आसू ठग्या नही, दाटै लाई
बरहा उळ्यो । जद लोगा बी रै अगै कुवर रो नाव सणो हो छोड
दीनो ।

कुवर रै लोप होण हाळै दिन गाव भर म हाडी नी चढी ।
माणसां मे करळ-भरळ माचगी । करळोपना सी हुगी । फिरणो धिरणा
छूग्यो काळो वादळ पूटग्यो सारी वसती विपता म हुवगा । इमै
मोक बुधमल नै सुन लाधी, गाव छाडण रा मतो पक्यो । बो जाणग्यो
ब अत्र अठ रणो खनरै सू खाली नही है । लोगा न पैत्या सू ही
बदण लागग्यो के 'म्हारो नी अगै अठ नी लागै । म्है कणा ही रातर
पत्र ही निकल जामू । भोळा मिनखा ी ओजू बुधमल रो बद
मासीरो ठा नी पडघो । उळटो आद्यो बतायो— के कुवर विना
वापडै रो जी नी लागे ।"

अेक रोज आधो रै वखत बुधमल गाव सू भाज भीर हुयो
घर आगल गाव सू ऊट भाडै कर परोर परदेस रो गलो पकडघो ।
बठै (परतण मे) एक बारसै गाव म हाट भाडर बँठ गयो । ताखडी
बाट खरीद परार लेणो दणो मरु कर दीनो । गणो गाँठी वेचर बोपार
पळायो ।

मिनख रो दिन दसा ! ममै रो जोगवाई ! दिना दिन
सू ई चालो ! मता रो मुकळई पाप रो पीसो लूण दाई जमग्यो, भूख
घर गरीरो रो गाव निसाण गमग्यो । पीसो दीनो ब्याह कर लीनो ।
टावर टीकर हुया अर आपरै देस जावण रो जी म आर्यै । हमै बुधमल
व सग वार्ता भूलग्यो । देस मे आवता ही तेतीस करोड देवा रो धोक-
पूज करणी पळ्ळई । भोग-वडाई भरघा आढीसी पाडीसी चरघा ।
आख गाव र घरा हाती-नु तो ! दरवायो घर गाव

हेत बशासो । बाह ! याह ! पाई मर वरिचर हुयो, भेळन छ' अर सागो बाग बायण न मनषा ।

एक दिन री बाग मोगम री गान लिल मिन छिल मग एग पु । चौमाम रा गाठ भुव । एगजना मीही म मट मगना गाहवा देर । याग बाणना नोट पग अघेर ए । उनराने मळाएण न साधे धोजडी समकता आय ही । बादणी घम नू जयू बुधमन इम ।

सेठाना कव — आज मन धन म ही कयां हुमो गिलो ?'

सेठ बाबो — अयां ही ।

सेठानी — अयां ही तो नही बाई न बाई बात जरूरु है ?

बोयो — बान ठा है ? या आपनी माया (धन) कयां मायो ?'

सेठानी — नही ! बतावो कयां भाई !

बोयो — बतावां नीं ये किणी न ब' नाखो ।'

बोली — ना ! स्याणो ! पाल्या पाछें क्यू क देवू ! भोजी थोडी हू । पर नही बतावो तो म्हें या सू आज बोला ही नही ।'

सेठ — 'नही ! नही ! मां, भवरु री मा ! थाने बतास्या पण सागी बात बतावणी है ।'

बोली — ज बाता भाठां सू फोडी । म्हे ही तो रोजी न सेर पक्क धान रो नास करा ।

बोयो — नही ! नही ! या सू कदे ही कूड नही ! सोनन खावू थारी । नही ! नही ! म्हारी ।

बानी—“क्यू कूही मीगना खावो बताणी है तो बतावो, नी जगा धारा म्हारा दा माग्य ! नीचा जावो ।”

बोयो—“नीं सा न्या मा भवरू रो ! कीनै ही कँ दिया ता जावक मारघा जावाना ।” सठ डरता कापै !

सठाणी—“हा कवो काई बात है ?

सठ— बात काई है । इयै कळायण न देख परा हसी पावै । घणा दिना री बात है, आज वाळी सी कळायण बरग रयी हा । म्है भ्र म्हारा भायला कु वर दानू इय ही मैडी म सोरघा हा । म्हारो मन बढधो भायल कु वर न मारण खातर उवरी छाती बढधो । जन् कु वर किया — भाईजी काई करो ? म्है मर जामू घान कद हो जामी म्हारै घन रो क होसी ?” म्है उव बखत भायन रा बात मान जावतो ता मफा भून करतो । आज इत्तो पीसो बन्सु आवता । पण पट मिणिया मोस नाभ्या अर मारला नाळ म खाडो खोदर गडत कर पानो । मरत-कु वर भळ कियो हो या बर सती कळायण हा कचे म्हारै मारण री सारी बात बता देसी । पण इय कळायण ओजू उवा बात किणा न नी बताई । अद मनै भात्र हसा आई । आज घान म्है ही साची बात बताई है । कदे कया मत ।

सठाणी कियो — स्याणो ! म्है कीन कवू भोजी थोडी ह ।

पण सठाणी काठी छनीज गई । माम दोरो पढग्यो । सठ री ना हाप मे आगई । आधी रात आग्या स काडी । भोरे उठी अर हाप धोयकर नख चख गणा गाभा पैरघा । पछ मारली पाडोसण बखनू नायण र घरा गर् अर आपरा साग गणा री बडाई करी ।

बखनू बोली — बुधू रा बाप मा मरघा जन् ओ कित्ताक हो ? छोगे साक तो हो । रोटी रो ही गासो हो । जाज आयो दिया

गादो भाव । वण धापरी भवकन र पाण । ' सेडाणी मू थापर न
 रो वही भणहो पडाई गुणी ना मर् । बीची— धवकन क पाव
 हो । थापर ठाकरा र कुवर न गज गाडा थिया जका इया रा धरम
 नाई हो । द्वाली माध चर भाधी रा मारघा । सादा गोत्र नारा
 नाळ म र दीनी । उवा रा मग मणी बच परार बोभार बग्घा ।
 जन मू पाप रा पइमो बध्यो है । बमायो धन क ह्य ? मगणी
 रो धान गुणर बगनूडी र ग म गणी दृग्घो । उरै मट्टेणी मगणा
 मू मू डो फोर नानो । मगणी थापर गग जाली बगनूडी बध्य पर
 नाटडा मानी । बू टाकर करानी प्राग बसतू रो नछळ नाब
 जाग उठयो । बगनू मारी दुय रा कथा मुणार्द । ठाकर धाण रपो
 भिजार्द । थागार अर मिफाही प्राया नाळ मोदर कुवर रा
 हाता कथाया । सारा र माची कथा माली बुधमल र हथकरी
 घानी । सागी बजावण मू कुवर रो कग्घो खून उपडयो ।

मदुभो



दोकाग रा बास भाला ग्दाम, अठ मुत्र सम्पति रा खेडा कम । पुराण राजपरै री बात एव चौधरी रो मुदानो । चौधरी पुवता पुरख अर मतवाळो । दिन रा रियाव तिया जाठ री बनाय रा वाहळो । ह्य कारण दो घटा परणाया पताया जका दोनू ही पारा हुग्या । घटो आप जकी सामरै गई । दा डकमडका घणो लुगाड घरा बठा गिलरा कर अर गन्ना नास । माल मत्तारी कमी नही जरे काम्न दोनू लाग लुगाई बेफिकर होकर रवे ! घर रो धान मोकळा बाणो वरतण न पीमो सफत जीणो । चोगो खाव आछा पर अर नगो गेण रा उजळा काज कर । गाव र भोगत री ठुकराणी ग्या र लाल घाघोनी है । ठुकराणी चौधरी न बाको जो अर चौधरण न बाकीमा कह परा वतळावे । अ दोनू उव न जायोडी वेठी ममान बाणे अर बाईमा कवता धका पचाणे । इया रै इयै मुरजादी सभाव रा भाव गाव माय धान ह ।

सुख सोमती नी दियाळी । तेता म राम, रोही म चारो मागोडो कातीसरो जमानो प्यारो । देवता रमे जिसा घरा म चैळ पळ लाग रयो है । चावळ-भापमी रा माल मलीदा वणरिया है ।

नू व दिन रा नू वा भोजन चौधरी र घरा ही सीरो पुडी हवला । काद मू दळी रा साग मगाया है । चौधरण सुधिया ही बार्दसा न रावळ जीमण रो नू तो नेवण न गई है । नेवगी चौधरी र घरा भोजन बणा वण आ ठूक्यो है । चौधरी सीधो (माल) भलाव नाई खुरपो हलाव है ।

चौधरण ऊतावळी हुइ रावळ आई लामो मू घटो वाड़े उबाणा पगा धाई । रावळ रो च्यारू बूटा भाक धापी । रावळ रो दारोगण्या घर हाजरणी मिनळा कियो— आपरी (टुकराणी रो) आसग कोनी, ओखद लरिया हैं । मायन सो गिया है चौधरण किवाड र कोचर मायकर देरयो । दोनू भोट डोलिय माथ बठा है । जु बार्दसा उकाळी पारिया है । ला सा । लो'सा कर । पण बावसा प्यानो पाछा करता थका सका नटै है । चौधरण फट फुरगी । देख नी सकी ।

घरा आई घर चौधरी सू कियो— पुरलिय रा बाप । बार्दसा तो अणसारी है डील कोयनी ! जु बार्द बठा दुबार्द पारिया है । जा सू भगडा लाग रिया है । जीमण रो कीरी सरधा हैं ?'

चौधरी हसी भरी रिगटोळी सू बोल्यो— 'आछा याल हुया । पाधरी आडू है । बार्दसा तो राजी खुमा है । म्हा भखावटे ही मितार आया हू । रावळी रीत न थूक जाण ? जु बार्द बार्द मनवार करता हुमी ? नू वो दिन बारा मीणा रो त्यू हार आपरो बार्द कुसळ मनावता होवला । चतर आदमी कोई भी काम कर तो पूरो जाच पडताळ करके उथळा देव पण तमास्त मुदल दमे बिना ही सूई रो मूगळ बणा व । गोड घड लव तथा अणचीती अणभागी क नाखै । अ स घण म्याण पण रा पुन परताव है ।'

चौधरण सूज गई । कूकर रो सी आर्या वाड र बोली— देख्या कोयनी तस्या स्याणा ? भखावट ही क्यू कै आया ना ? म्हा

रु पग सू कोइ वैर हो के ? एक पय दो वान आव तो ! म्हारे नागाडा म छाळ रो के भार है, दूज जा आसू । इतो क परा भागे पग रावळ कानी पाट्टी चानी ।”

चौधरण कोटडी म बढी, ठुकराणी भाजकर पगे पडी। बोनी—‘काकी सा सुधिया या पघारिया म्हु निली नही । मतवाळ माड राखा । चौधरण—“हमें ता चोखी तरा हा ?”

ठुकराणी—‘त्यू हार मायं म्हा लोगा म दाहू पीवण रा ग्वाज है, जको ठाकरा साग दाहू नेवणा करा हा काकी सा । और काई तारप कोयती ही । चौधरण—‘केठा बाई म्हुँ तो घणी त्री । हा । तो बाई सा घाटा दाहू म्हानै ही घानो जको घारै काको सा साथ बँठ न पीवा ।”

ठुकराणी बोनी— हा । हमें लादू सा । मोल घाडो ही यावणो है । रोज रोज नहों तो इक्यातर दूज होळी दियाळी ता दिया करो काकी म्हारी । हारी काकी, चाकी चून तो पिया करो । पीणा तू त्यू हार भावें थोडो घणो राग रग अर नू घापणो नीं ल्याव ता कं टा पं ?

ठुकराणी माय मू एक वडा वाटकियो भर ल्याई । चौधरण पत्ले सू ढक परोर आपरें घरा कानी चान पडी । बाईमा न मिश्या जीमण रो नू तो भी दे आई । सीघाळी माळ र मोटां माचें नाच उतानर दाहू हाळो वाटकियो ढकर मेन दानो अर चौधरी मू मुक्त मजनिस्स रो वात मुळकती घकी मखीन मू बही—‘पुगलिम रा बाप दियाळी मदा ही घाडो भावें ? रावळ म तो जु बाई अर बाई दोनवा दाहू रा प्याता पिया है । जु बाई सा मदेवा वण रिया है, मजा घाल । बाई घणें हरख सू मतवाळा हुया मानै । हमक आपां ही दाहू सू ग्वाळी मनावा । बाईमा मने वियो—‘कदेही

कदेही तो जाकीना न ही पाया वी । घाज घायण घारी मोबळा मनुहार करु ली । ताका गिया मना ।

घोपरी — 'तो आपण घरा दारु कीदय पुरखियरी मा ? गदर्त म तो घणा ही घटा दाटघा पडवा है । भभक चढ अ उठा उठ्य है । आपण तो द्याद्य रावडो भना हा नाधो दारु कीदया (कर) पडवा है ?' घोपरण — दारु री फिरक मत करो मनुहार जगद री फिरक करा । गरु रो तो एक माटा भोवो (परतण) भरार ल्याई ह । पीलपाय्य ७ माघ ह्य मलया है । त्वार हवो मारुजी घान आज छिहार दारुडा पाऊली । मागोज मनवाळा यणार हनुवो जिमाऊती । म्हार चर नस घायगी है । दूध दूधनाऊ भोड नी मर । बाड जाहू ह बाईसा घाव ता परास रिया । नी ता म्है आपरीर जीमा मू । घाज घारी र म्हारी बात है दियाळी री रात है ।

चौधरी रा मूको म्हेदरा (मूरत) हया ह्ययो । उव र जी म हनाम री लर आ गर । भसा आणन घर मन्वा पण री जोत सी जाग पडा । बायो— 'पुरखिय री मा । तरा तो वी उई मजा है । लुगार्ई दव तो भगवान कीन ही इसी देव ।

चौधरण भन दुवण न बाड गर । दभी सीधो बाधो त्वार कर परार मल्यो । बाइसा सिइया मू अधार घरोगण न पधारसी । गल बठ चौधरी र ठाल माय म जू सा खावण लागगी ।— कद पुरखिय री मा भम दुह परा घाव धर दाह भिळ । पण भस रो दुवणो मारो गाडा हा है । उवा पायसै म अर घारी भेच जद हव नो । घाठ दम सर दूध भी तो काढना लाळ राग । ओ मारो काम चाटो गटो खाया पछ ही भस सारींती । न दारु पीवण रो वधत हौ टळ जासी । सिइया पछ बाईसा ही ता घरोगण आनी घर नाइ

भा जीमण न पाद्यो भ्रावला । उवाँ सगळा रँ सामण दारू क'या पोवाना ? ज काम तो गवळा बावळा रा है । 'आप देख न कुतो भ्रम ! कोटडी मे कोइ आवँ न जावँ पडचा गू गा हुया गुडव' । आपमरा म ह्मी मुमखरी करै । पाण नि पटवो है ओजू तो सूरज पवता माव पर ही पडचा है । म्है तो वगो सो पा नवड् । पुर्णदिय रो मा मागर न आइ तो साया म्वाथा पीपरा टटा मद्र । अचना श्री मारो तवला ममद्र । नुग या न दारू कप (के वद) ? व ता कारू रा काम करो अर टात्ररा गू घर भरो । चौधरी जनी जनी बाना साचतो थवो सामली साल म बडघो अर माच नीचपण्यो नागरिया र पाणा रो भग्धाडो तत्रनी चरट चरड चोम गियो । म्वावो वणग्धा अर घूमर घाण न लागग्या । कूटा नगा दिखाल है । आपगे जाटणी ७ झूठे ही ठगणी चाव है । टिणा साव आमण आयड पड । बतळाया चिड है ।

भम दुहा अर जाटणी घर म आर्द । पाळी म बडत हा म्वाव चौधरी जोर रो खवी लगार्द । प्रिय र माण जावर पडघो अर दूष रो गवणियों हुळा दियो । जद चौधरण बीनी — इया के हग्धा ? मिनखा र मायन क्य पडो ? उजाड कर दियो । दस सर दूष हुळा नाख्या । दारो घणी काडना मिनखा न इती छाछ हा साध नही ।

चौधरी— 'म्वाग नड इश्य (अठ) दूष लिया के कर हा ? मर्न कं ठा तू दूर लिया इतग (अठै) मर ही ।'

चौधरण बीनी—के इतो दारू ये जकता ही पोग्धा या पुग्धिय रा वाप । माचो डाळर सो जावी । बार्मा देखना ता हग्धा । थ तो पूरा उमँबाज हा ।' चौधरी बोल्यो— 'इतो मेर गळ-ताळव ही कोताग्धानी ! आजू तो अथाग नसो ही नी आया है । कोरा आख्या रा डारा, लाल हुया है । पग कड है अर धक्का

उपरला दिन है, धाकी धिनावां । अर्धे वित्तिक धाजी है ? राम वरसाण हाळा है । मेह वरस्यो नी अर बाबो आधोनीं । एकर री वात है । धानडो ले भावा । सेम रा टावर बातडो मन में अचार है ।

चाँधरी रो बडोडो बेटो चूनियो हरखू री हाट गियो अर मोठ बाजरो मांग्या । हरखू मापी चीज लेवणी गाहा । चूनिय कियो— 'अबकाळ तो उधार ही तोल देवो काको जी । बाबो आधी जद धारा सारा पइसडा दे दसी ।'

हरखू— 'ना भाई ना । हमो काम नी करा । गवार थोडा ही हा । धी ऊन त्यावो अर बाजरी मोठ ले जाओ ।

चूनियो— 'कावा सदा ही तो सामणै चीज देवा हा । अब काळ जे नौं देवा तो बाबो आ परार दे देसी । धाने दुकान मू धान चून तोलण री भोळावण है । म्हे भूखा थोडा ही रस्या । दूजो म्हान कुण जाएँ ?'

हरखू— 'जकी बात री मनं काई ठा ? म्हे तो उधार हर गज तोलू नही । म्हारो किसो घर पाणी मे है ? उधार किसै किस न देवू ।'

हरखू री बात सुणर चूनियो बोत्वो न चाल्यो चुपचाप आपरै घरां चयो गियो । मा न सठ गी सारी बात सुणाई अर आगर उदरपूरणा खातर धार मङ्गी री काई जुगती लडाई । अजीन पाच धार तिन मे सेमो वरसाळ री म्हाई जाणर घरा आयो । टावरा न विनखा जोमा अर बज्यो— 'कोडा तो नी पड्या ।'

चूनियो बोत्वो— 'इत्ता दिन तो ऊन अर धी रै बरोबर काकाजी थोठ बाजरी देंवता रिया । पण अबकाळ मीरुँ ऊन धी तो आपा र घरा हुया नही अर कोरा दाणा काच सेठ दिया । म्हाँ । जक

एत मजूरी करांहां, पेट भरांहां। गुजरान तो बरणो ही पई।
 इत छोटा मूण ही खावां हा।”

शौषरां मम नै, सेठ री चाल बाजी सू घणी रीस भाई।
 बि घावरी सुगाई सू पूछयो—“हरखू कितोब घान दी-हो ? आपण
 ए म बिय री दूबान धी कतोक गियो ? उन रा भाव फळायाव
 नै ? ए नकनी दाम बिय सू कितो बिरिया ली हा ?”

सप री सुगाई कियो—‘म्हानें तो दाम दी-हा कोपनी।
 ती बर उन न बाजरो र भाव ही लगा लिया। म्हतो घर री पंदा
 पोडी बीजां दे देर हो बाजरी ल्याया। बीजा री काठ हुई, सठा
 सफा नाट हुई। उघार णी भागल रँ भती नहीं जद म्हे म्हारो
 बा दग दाळो करयो। ई मोण कळाप करना घना दूजी जगा स
 न चुन लावा हा। ह्मे घ घा गिया घान ही अडाका हा।’

वेम नै घात्र हरखू पर जिनी रीस भाई बिली बिय नै कदे
 कीं वरी माथ भी नीं घाई। जाट तो सग मू बडो तरत जवावी
 शलियो अर बडो नेवण। अण्णो उसवाद जाणीजै। वो
 भरोस पर पीळो सू परतल ठगावै पण ठगणिये री हुस्पारी अर घाल
 काजी रा ठा पड जावै ज-छो री खापोडो नासा सू पाछो निवास
 लेवै। साच नी गेम रै होयै म बडलै री उपाव सूभ आयो। वो सँर
 बीकानेर कानी बींघडी रो घडी दुर दियो। बठै जायकर। एक दो
 रुपिय म मोड रो एक लामो लकरुड सो माटो नाळो खरी लियो अर
 बिय नाळ माथ एक सुनार सू मिल परोर बीस तीस रुपिया रो
 पाने रो पात चडा लियो। (पुराणा भावा मुताबिक) सुनार नाळ
 नै पात सू इसो जरु डक दियो क एकरतो आपणे जात रँ जायोडै
 वच न ही मोड रो ठा लागै नहीं। जोर सू देखणै पर गौर व
 घर बणावट, भी कारीगरी रो बसक नावो रँ वै। लो लुका दियो एक



परताबमी सगा गनेतिया र घरा रया करतो । मा-बाप सुरग सिधार गया जद सू ही प्रठ ल्यायो गयो । इयरा माईत इय री छोटी ऊमर म ही आग न गया । सारो बोलणो चालणो अठ ही मोख्यो है । हमें तो यो दूधियो जुवान होबाळो है । आछो डील घाल्यो है छलाइ री चाल चाल्या है । नाक सज रयो है बठ गाघो पड गयो है । बाळकपण रो नाव निसाण तक नी लाध । बचपण म घर्ग लाड प्यार सू ही नी आपर जाम्योड दाइ मा वणर बनेई (जीजो) री भुरजाई मोटी कियो । आखीरात जागती थकी परताब नै राजी राखती । कित्तो ही ऊजडो कित्तो ही बीगडो पण परसग्या र माइत बार टावर न डाढा सोरो राइयो । जकर भी कूटघो मारधोनी । चोखो खवायो पाया जर हवायो घुवायो । हमें परताब मोटी जुवान हुयो जोयकर, आर घर रो जन मन घणो राजी है । जक टावर न पाळ पोसन जवान बणायो उबर वास्त आखो घर पुरो हमदरद है । इयर बहनोई र छोट भाई री बेटो परमळ रो ब्याह भी परताबसी र पल्ल करण री ओल ओल बाता चाल है । परमळ इभ र साय खेलवाळी सायण है ।

परताब र बनईमा रो नाव अगमसिंह अर उवारै वडै दाग भाई रो नाव जुगमसिंह है । नोनवां सू छोटकियै भाई रो नाव तुगम सिंह वारै । तुगमसिंह नै बीचोटिय भाई अगमसिंह भेव दिन सम नायो कि— 'परताबसी (म्हारो माळा) घर घराणै रो टावर मिरदार है । हाड मोडे पूत्रो डिलाळ जुवान डावडो है । आपार घरा हा पळघो तथा रळघो रियो है । आपणै ही घरा इयरो माल बण्यो रवै तो किमो विगाह है ? जिसे परमळ विसा ही परताब । दिन गन रो सी जोड प्रमात मिश्या रो सा मोड जोवता इमो टावर आपा न सार्धे नहीँ घर घराणा ता नैड निडाम दीखै नही । आतर कठ ही अजाण म आम्र मीचन आघारो करणा पडसी । कठ ही गोना न माया लागयो ता ऊमर भर रो तसिया अर छातीपचा रमी ।

तुगमसिंह रै तो आ बात घणा दिना नू सूनीसी खुभ रहा हा । उव तो सक सरम मे इत्ता तिन काडघा । ज्याण्यो दाग भाई हकारो भरला या नही । कड नाखै— साख म माल जार मिर म राख ।' इय वास्त डरतो रयो पण हमे बोया— परमळ रो मा तो मन रोजीन आप सू अज करण खातर कँवती रव । नकड राख कान नाव, कव— टावर हाथ स नी चलयो जाव । घर आया नागना पूजिय बाबी पूजण जाय वाली कँवत था म्हा माथ माची नी हो जाव । भाई माहव । म्है तो जाणू क अ'पर परमळ काइ दूजी पाडा है । पण उव रो जिया (मा) न तो कदे ही ध्यावस नी आवै । भोरघो भाठो ही भुरजावै । म्है भी तो मिनख हू । रावळ प वडनो हा हराम होरियो है । वगीसी टीक रो रसम करवाय दो जको म्हार हा जभट मिटै ।'

अगमसिंह कयो— 'जको तो मन ठा है टीकै टाक रो के डर है । किसो दूमर गाव जावै । मोटो भोजाईसा न बूक्त परा घोडी

सिनस कर देस्या । घन दायर्ज री ही घणी बि ता नहीं । जान बरात
 घर तीबळ ताग सू बिलकुल टळ सका । साढ ना कोई बरहल, गाय ना
 कोई भ स, जच तो दो खीखरी (गाय) दे दिया । नहीं तो किसी
 भवाळी आव । भवार देव सूता है । देव उठणी इग्यारस पछ चोखो
 वार देख टाबर र हाथ म रिपियो नारेळ द देसा । वसत पाच्यू
 ताई फेरा कर दसा । कठ जाव ? इयर तो कुटम्ब म कोई आग
 लार ही कोनी । आपा ही हा । आपण ही घरा पळयो है तो आपण
 ही घरा रगी । बाकी अठं तो चालणो सू छाण्या ही टाबर इसो
 लाघ नही । हजार मे ही मुहगो अर टाळकी है ।'

दादा भाई री बाता सुण कर तुगमसिह रँ मन मे घणा
 विचार आया ।

उवारी बोपारी बुद्धि घर चीकणी बाता सुणर तुगमसिह
 थोडो सो भबरोसो करघो । जाण्यो— दादो भाई साळ न काठो
 कर मिजाज दिखाळ अर थोथा लोर त्याव । पण म्हारो मन तो
 परताबसीर फूल स च्छैर माथ मडरारियो है । तुगमसिह बिया तो
 भाइ रो घणो मान मलायदो राखतो पको वोलँ पण जीम आज गिचर
 पिचर करँ । दुपडदो पिचर सो वणरियो है ।

मगर मे मढास गाव र ठाकरा री कोटडी म आज आधी
 रो हल बलो पड । चानणो चिलक घोडा माथ काठी माड । दरोगी
 दरोगा न ही पूरो बरो पाटयो नी । ठाकर तीनू भाई लारल गळत
 मे पग काड । घोडा पर जीन कसीज । ठुकराण्या भेळी होरयी है ।
 तुगमसिह री बहू भासू ढळबावँ है । घराण री बात, कव न सुण
 मन ही मन कुडँ । घर घर मे ही चीड बाड । फटाफट बार बणगी ।
 तीनू भाई चढघा घोडा पर अर लगाई लामी ताग जके सूरज री
 उगाळी नै ना पूग्या कोस तीस । ठाणा ठरघोडा घोडा ऐड सर्ती
 सकया । रात्रू रात देग्या तबडका ।

मुधिया री बल्ला बन री रेळा परमळ नै परताव मारग
 र एक ऊच मगर माथ थोडी भेती सू अळगा सक्कर नीन् म सूना
 िवाई पड्या । तीनू भाइ खीर दाई लाल हुम्या । पण भाई बडा
 घणा स्याणा न समभार । धीरज सू आगली पाछनी मोच थर
 वागिया बुध राई । पत्या ही बाल्यो— भाइ तोगा सुण लवो ।
 थोड़ी छानी राखा घर पग थामा । थान म्हारी घाण है । राजाराम
 री छुआई ३ । आपार घर री ही बात है । घर री बाद घर घर
 परमग्या रा क घर, थान न यथाओ मती । गुना माफ करे अर
 पाट्या ल चाला । घाला गात्रा वास कटाय न परा सवाय दया । बटा
 दणी ता राजपून र टाड न ही है, तो भळ इसो जाण्यो पिट्याणो कठ
 नापसी ? क्या राता न ही टटा है । बटै बेटी म और क परक
 है ? थोडी ता बापडा आपणा बडरा बन्धा न जामत ही दूध (अफाम)
 पा दिया करता हा । ' बोनता बालता जुगमसिंह दुखो भिनख दाद
 मूना वणाकर सिमकारो नाग्या । भायारा रीस उतारी क्रोव हाक्यो ।
 बडीन घोडा र हण हणाट सू झडवडाय कर परमळ नै परताव री
 नीन् टूटी । परताव, माथण लडकी रा बाप बाबा छाती माथ आया
 दवर भभडक्या पण उठ्या नही । ऐडे विद्रोह रै मोरु परताव री
 अक्कल ठिकारु आग २ । बो वनेई गी ठनी नितर ताडनो थको
 समभ गयो, क— 'हमें म्हारी मार पीट नी, मुद-टीकै री बात हयनी ।
 म्हारो पत्तो परमळ सू तुडवालो है । पण मनै हमै टळवाळो बुवार
 करणो थार्ये । 'तट्टा (गवाव) दणो है ।' परमळ अके पास उठ खडी
 हूँ पण पत्ताय पसवात्र ही फोरयो नही । उवै र धनोई बतळायो—
 परतावमी उठा घरा थानो अर थारो ब्याह करा । आना गात्रा
 वास कटाय कर बगा मडो बाधा । बात बधनी, जात रजपूती है ।
 रावळा बावळा री रीन राग ही थारा वग । लोगा नै रागडा रा
 मोत नेग ही अपरोखा लाभ । कृण जाणुं के हुई ? रातू रात मगळ

गुणाय देस्यां । गडा हो जाआ । वेगा सा घरां घाली ।' अगमसिंह
(परताब रो बनेई) बोल्थो— म्है तो बार मोणां सू परमळ रै
सास रो घां वेगी बात कर राखी लकिन घां म्हें सू ही घणी उता
वळ करी : इमें क्यू मू मोडो ? घाना घोडी समाळो । सांइ माथ
परमळ रै साथ म्है नड जागू ।'

इण भाते परताब रा बारी बारी सू चाल कर ब्याह करण
खातर अगमसिंह अर उवर दोनू भायां घणा योरा करघा । पण
परताब तो आपरी सागण जगां सू हात्यो भो नही । उव रो परमळ
सू जाबक मन फाटग्यो ।

परताब एब घराण रो भान्नी है । इय रा पिता बेरीमान
सिंह जी आछ स्वभाव रा मिनख हा । मो १ गढ़ घर मोकळा नेत
उवा रै हाथ हा । गाया भ स्यारा भी बगळा उछट्टी उछरता । ऊ
माडि अर घोडा रा एक दो जाडा रया करता । इज्जत आवरू सू
काम चालतो । ठावर बात रा पक्का नै घणा घणी हा । उवा रै अंक
बडो बाईं जकी मोकळी घूम घाम सू अगमसिंह जी न परणायनी घर
कु वर (परताब) जलम्यो जित्त न आगीन गया ।

कु वर परताबसी साल रो हुयो मां न भळ गोडा नीचै
नी । कबत ही है— मा मर जका री मासी ही मर । बापजी रै सार
मा सिधाई । जद परताब री बडी बहन उवन आपर साथ सासर
लठी भाईं । लाख मैणा मोसा सयकर भाईं न पळथो । बडी जेठाणी
सार आपर तो कोई बाळ गापाळ हो नही दिराणी रै भाईं परताब
न घण लाड प्यार सू मोटो करियो । अगमसिंह (बनेई) घापरै सासरै
रो घोर तो सारो माल हाथा पगां रै लगायो पण एक गढ खाती
समाळ न राख्यो । दो चार मिनखा रै कर्ण सूरत दो चार खेत भी
साळ री भलाई वेगी'नी बेच्या । मीण मास मे परमळ रै साथ याह
करपरार सारो करज उतार देवतो घर परमळ परताब र माथ सारो

उमर आपरा अहेसान तथा करज लादे राखतो । देवउठणी ग्यारस नीं
 घाई, परताव परमळ र मिलर भाज जाणै रो वेला घाई । भाज
 बाया तो भाज आया । टावर हा । हमें चालर ब्याह तो करालणा
 चाय । अंगमसिह तुंगमसिह अर जुगमसिह तीनू भाई घणा वळपता
 बरा बास करता है धाप्या तो कोई असर नी परताव रो सफा नाट
 है । वो पाछो उवा र घरां ही नही जाव ।

तानू भाई खाली परमळ नै लेयपरा घरा बानी पाछा
 चाल्या । परताव कयो— म्है परमळ नै नी परणीजू । म्हे दोनुवा
 भाजण रो मतो करघा जद राज र टोळ रै राईके सू कार् आछा
 बिरवाळ (तेज चाळणा) भत माग्यो । राईको हरमळ बोयो— एक
 घण रात म साठ कोस पाँच सक । इय रो नानी एक दिन मे
 पूरा मो कास जाया करती । पण बिर्य म एक अब ही । मारग म
 सीन (गौली जगा) आवनी बठ ही नानी बठ जाया करती । छाटा
 छिडकी तथा ओस गळम रो ठडी जमी भाय ही चालती चालती बठ
 जाया करती । ऊट साड म मा नानीरा सभाव अर गुण आगुण
 घणा भाव, मो थानै (आपन) धोखो नही दय दवै । म्है तो मोळ
 बटण र लाभ म कूडो नही क सू । ले जावो तो थारी खुसी है ।
 मन ओळमो मती निया ।' पण म्है हरमळ रो चात मानी नही । साड
 मगाली अर नेग चुका दियो । जाण्यो नानी बानी रो अब बठ थकी
 भाव । पलाण करायो अर सणक मणक सोपो पडता ही साड माथ
 चढ बठघा । परमळ बोली— घोडा घणा घरा ऊभा है मूती रात
 ही लाग आवा जद पार पडे नही तो नावळ लसी । म्है किया—
 साठ (६०) कोस र पल्ल रो साड माथे चढे बठा हा घोडा रो तीस
 कोस मू बत्ती घाह (दोड) नही दूव । पण हरमळ अर परमळ रा
 बात साची हई । साड चाली तो चोखी मस्ता तीस कोस याया—
 के कुदरत सू आगे भीजी भू (गौली जमीन) आ गई । साड भच्च

वर कामती चाणगी मारण में ही धर गई । माता-पौतरों मर काम
 इया री मार चाणगी पण तांडू जगती ती लोटा । इहारा ता आरु मार्ग
 ना मर गया । बो-यो त चा-यो चांग रें भायकर गावण्यो । पण
 परमळ री शान धन घाणगी कि— न्ये गांडू री माता म लक्ष अरु
 हुआ करणा । वण । परमळ मार्गे ब्याह हाती बाण वण मारणा गटा ।
 इय र गाध ब्याह करणगर पण किमी मुण नागु मा । इय गांडू री
 लमिया— मा पण पुन पिना पर पाहा पणा रगी ता लोटा पाहा ।
 माता त लोटा जशी इहारे गाध भाकर जावण त ल्यार हुगी वर
 म नाग्याटा वण चाण करणा ? ब्याह री ब्याहा ही गणात हे ता
 परमळ री पुन किना इवान म मात माभात व वाळा हाता ? व वण
 हा हे न्यो गाट न्या ही पाया इगी तार न्या ही जाया । घट
 किमी टाकरी मा किमी डोकरा । तो वणू हुगिया म दुस्नाय वण ?
 किमी दूट बिना ही सोरा किना नार किना ही छारा । यामा
 व वन न वणू जाण घुणर पर म पाणा ? उमरमत रा दुग दू ।
 मा पारा परमळ सभाळां घर घरा व जावो । इहारे नू ना इयारी
 घट आया पण पूरा बाण ही नहा हूँ । गाध भाज घाया सा शी पाण
 नाग्या त । बाकी मा जाया नू वगी राववा हे । नीयत रो पाप
 बान ही लाग तो इहांत भी लागमी । पण इहारा मन इय नू घाग
 जावण जाण नही । जो दिडू राख तो बाळ राह ही उमर बाडू दव
 नहा ता न्ये ब्याह नू ही भूण भाज न ती । मन तो न्ये गाडू मू पूरा
 म्यात मवाहू मित्र मया । वण परम्वरा वानवरण नू विसर है । वण
 ही ता लोण अणइम्या टावरा न उण्यांर नू ओळण लव व ओ तो
 पनाण रो बटो पोतो दीम ।

घोड़े री असवार



एक अलबतो मिनख घोड़ चढियाटो राजाजी स मिनण न जारियो हा । माग्ग स एक डाररी री भूपडी आई । डोकरी उव रास्त मू जावणिया वटउवा नै जापर अटपटा मुवाल जगवा सू घपाकर तथा हार मनावर ही आगीनै जावण दी । हराया विना हरगज भूपडी पर राके राखती । घोड़ र अमवार नै देखता हा डोकरी नै आज अेक अजीब बाल ऊकरी । उव घोड़ र असवार न बूझयो— 'अरे घाडै रा जमवार—लका री बात जाण वाई ?'

असवार जाणू हू । लका री बात सुणाऊ का साचेली लका परतख लिखा देऊ ?

डोकरी— परतख लका देगाळ देवै तो भळे मन चाय ही के ? डोकरी री इयै बात माय घोड़ र अमवार आपर गूळ माय स िधासडाई री पेटी काढी अर एक नूळी फाड कर डोकरी री भूपडी रै लापो नगाय दीनो । भूपडी री हबडोट होगियो । डोकरी री सारी मालमता वासत र भेंट हो गये । डोकरी करळ भरळ वूकण नै जागगी । अर घोड़ रै अमवार न गाळ ठोकती थकी बोली 'अरे नागडिय खादा मरी भूपडी क्यू बाळगी ?'

असवार बियो—'त ही तो बिया सबा री बान पय ।
जणा म्है त ७ वूझयो सबा री बान बहू बा लबा परतम निगाळू ?
जद यू बोनी परतम निगाळ देव तो भळ चाय ही के । सबा परतम
दिखाळ दी । सक इहान हा जळी ही ।

डोबरी बोनी—'म्है किमो नामडिये खाण तन भू पढी
बाळण रा बियो । जको घ मन विना टापर करणे । इमे चान
राजा मन , तन पडटाथू । वा भू पढी रो डड तिरावू ।'

असवार बोल्यो— चान राजा कर्न । दोनू जणा चाल
पडधा । जावता जावता आग दोनवा नै मारण म एव डूमरो सुगाई
ओळू मिनी । उव रो छोरो रारियो हो । उव घोड र असवार न
कियो - घोड रा असवार म्हारो छोरो रोव हँ । इय रा कान
बाढ ले रे ।'

घोड र असवार बियो— बाई बाढ तसू । इतो कय
परार उवै आपर गळ बढेँ सू तरवार काढी भर म्यान सू बार
निकाळ कर चट टीगर रा दोनू कानडा वाट सीना । टीगर चिर
ळायो अर उव री मा ठोकी गाळ— सापडो खाव तनेँ मरज्याणा
म्हार छोरै रा बान क्यू काटिया ?'

बोल्यो— 'त ही तो कियो के म्हारो छोरो रोव, इय रा
कान बाढ ले रे ।'

बोली—'म्है किमो साचे ही कयो । चाल राजा कर्न ।

बोल्यो— चाल राजा कर्न ।' तीनू जणा चान पडिया ।
आग रास्त म कोई गूजरी दूध बेवण न जावती उवा नै मिली ।
गूजने घोड रँ असवार नै कियो के—'घोडेँ रा असवार काई बात
इमो क जकी गाल रीगा अर गळगटका आवेँ ।

अमवार गूजरी री बात रो हकारो भरतँ थकँ आपरी काठी म लाठी निकाळी अर गूजरी रँ माथ मळघोडँ दूध रँ मटक पर दे मारी । घडो खळवाध नाह्यो । गाले रीगा अर गळ गटका भीर दूया । गुजरी ठोकी गाल । बाली— मर थारी राड मरँ । म्हारो दूध बुळवा दी-यो ।'

बोल्यो—तँ ही तो कियो के बात कै । बात इसी कै जको गाल रींगा अर गळ गटका आवँ । बता गाले रीगा अर गळ गटका आया क भी । इस तरिया गूजरी भी घोडँ रँ असवार री परियाद लेकर उवा आखा लीगा र सार्यँ सार्यँ र राजदरवार खानी चान पही । आग सहर रो बजार आयो । बाजार रँ बीचाळ एक क दोई री हाट आई । हाट भात भतीली मिठया सू भरियाडो ही । नमकीन चीजा रा घाल घामा भी सजियोडा पडिया हा । घोड रो अमवार एक थोळ कानी आगळी दिखाळतो थको बोल्यो— भाई ! या काई चीज है ?

क-दोई पडउथळो दियो— खाजा '

घोडँ रँ असवार भळे कियो—' भाई इयँ मिठाई रो नाव काइ है ? '

क-दोई भूजर बोल्यो—'कहू तो हू वे खाजा ।' घाडँ वालो बट ही बैठ गियो अर खाजा रँ घाल माथ खावण न दूक गियो । मारा खाजा लाकर घाल ठालो करियो । जद ही पछ उठकर आग न टुरियो । क-दोई उब न भाजकर नावडघा अर खाजा रा पइसा माग्या । कियो मुपत रो माल खाय जाणो ।'

घोडँ रो असवार बोल्यो— पइसा कठ ? त ही तो मनँ कयो के खा जा नही तो म्है क्यू खावतो ।' दोनू आपसरी मे हबोपनी हुया ।

क दोई कयो— चाल राजा कने, 'याव करावा ।'

घोड र असवार कियो— 'चाल'

क थोई भळ घोड र असवार लारें उवा मिनसा साग हो लियो । आखा लोग राजा र कन याव करावण खातर चाल पडथा । क दोईवाटें मू कडघा ही नहा क घाड बाळो एक दूसरा दुकान पर जाऊगो । हलवा दोवटा काडरियो हा । घोड बाळ बूयो — मोदी जो अ काइ काडो ?

हलवाई कियो— दोवटा ।' असवार दोवटाळें रा दो टिरकड उठा साया अर मारग लियो । हलवाई चार भाज्यो अर असवार रा हूकिया भाल्या ।

घोड र असवार कियो— त ही तो कियो दो उठा । मई जे दो मू काई उठायो हुव तो बत्ता । हलवाई कियो— खा भल ही पण पत्सा ता भन्ना ।

असवार बोल्यो— पइसा नया रा दो उठायो है थारा ।

हलवाई— 'चाल राजा कन ।' .

असवार— चाल राजा कन । हलवाई साथ हो निया भाग बजार र कराड एक पनवाणी रो दुबान मायी । घोड र असवार पनवाडी मू एक पान रो बीडो माय्यो । रोब मू कियो- राज अरवार म जा रियो ह । पइसा टक्का नही मिलला खाना म पान लगाय कर भाग्य दे जका मूडो रचावा । इपे बात मा पनवाडी हगर बोल्या— जका रो मू टा नान दीस उत्र र मूड थारो मू टा रगड लीने, मोफत म मू टो नान हो जागी । हळी ल न फिटकटी रग थोळो आसा । पनवाडी रो नै कारो ल परो असवार भाग चाट्यो ता गल म पनवाडी रा ही घर आयो । पोळी

पनवाडा रो भाळी डाळी हावही सही पान खा रयी ही । अमवार आपर घोड सू नीचो उतरकर गयो अर पान चावती डीकरी रँ मूढ सू मूढो रगड आयो । छारी जार रो टीळी मारी तथा गरळार्हे पनवाडी आपरी वगी रो रोवणा मुण परार आयो अर घां र अस वार न गाळ ठोकण जाग्यो । बोल्यो— हराम थारा अ काम । प्रवान बाळक न क्यु रुवाणी ?

अमवार उचळो दियो— त ही तो मन कियो क जका रा मूठो लाल लखाव उव रँ मूढ सू थारो मूढो रगड लाव । राड बघा पनवाडी बघा— चान राजा बन ।

“चाल ’ असवार उचळो दियो । पनवाडी ही उर्व परचादी टोळ माय हो लिया । इयै सघ रा स ग भिनख घाड र अमवार री मिखायत लिया राजा बन जागरिया हा । मारग में एक लामो दाडी हाळो भीयो मिल्यो । उव मिय सू घोड र असवार ब्रह्मो— मीया जो इत्ती माटी दाडी कठ मू बघाई ? ’

मीया चिडकर बोल्यो— थारै बाप खनें सू । ’

असवार— थारो बाप बडा दावळो है जको थन तो दोनी इत्ती मोटी दाडी अर म्हारी ठोडी राखी सफा उघाडी । म्है तो इय दाडी नै पाळी लस । आ बात क वन थवै बटाळ असवार मुड्ड मीय न उठार पटक्यो अर सिणियो सी सारी सूकी दाडी उपाड लीनी । मायो भळे खुदा रँ भरोस नाही रा इसाफ करवाण खातर राज तरवार कानो भीर हुयो । घोटी दूर अळग गया अद मारग म भट्ट एक बाणिय री दुकान भाई । बाणियो तेला लूणो री दुकान करे अर आपरो पट भर । पण दुकान म तेन रँ घडे सू थोडो तेल बुळग्यो । बाणिय आगरा सू तेल पू छयो अर वो आपर सार कडू मे री खैर (कामना) मनावण लाग्यो । बोल्यो— मरी खैर ! मेरी लुगाई री

टावरा री खर ! म्हार घर री खर ! म्हारी दुकान री खर ! आसा
घन पसवा री खर ! करो महाराज !'

घोड र असवार बाणिय नै वृश्यो — 'क्या री खर मनाव ?'

बाणिय कयो — 'म्हार कडूम री ।

घोड र असवार कयो — 'मैं ही खर मनावू ।

बाणियो बोल्यो — 'मना ।

घोड र असवार तेल हाळ घटे माथ खेंचर मारी डाग जको
घडो फूट गयो अर हाट म तल रा बाळा ववण लाग्या । बाणियो
कूक्यो अर घोड रो असवार आपरी खर मनावण नाग्यो — 'मेरी
खर ! मेरे राजा री खर ! सारी परजा री खर !

बाणिय कयो — 'मेरो तत्र क्यू ढोळयो ?'

घोड र असवार उषळो दियो — 'मैं तो म्हारी खर मनाई
है । यू अकलो बोरी धार घर री खर मनाव हो । मैं राजा अर
सारी परजारी खर मनारिया हू ।

बाणिय कियो — 'चात्र राजा र बन ।

बोल्यो — 'चात्र राजा र बनै ।

बा बाणियो ही घाट र असवार न मरावण खातर फरि
यात्ते लोगा माथे रागा र दरवार कानी चात्र पड्या । राज दरवार
आयो सै ग लाग जारा वारा गू फरियात्ता गुणानण लाग्या । पल योन
टोक्री आपरी रूपे रा बात कयी बाना — 'मेरी रूपडी बाळती ।'

राजा कयो — 'क्यू बाळी ?

असवार उषळो लियो — 'मरजार न्य टोक्री मन सवा
देखाळत रो कयो । मैं रूपडी अनापकर परतग जलती सवा देता
दीनी ।

राजा डोकरो नै बियो— जद घोडे वालै रो कसर नही ।
त लका दखणी चायी असवार इय वास्ती भू पडी जळार । अय तू
भू पडी दूसरो माड कर बँट ।

इस तरा सू सगळा आप आपरो उजाड बतायो । राजा
असवार सू सगळा र उजाड रो उयळो चायो । साची वाता म घोडे
रो असवार जावक नी घबडायो ।

बोल्यो— 'महाराज म्है जका इया रा उजाड किया है व
स ग इया र कँवण सूरत ही पूरा किया है । डाकरी पछ मन एक
दूसरी लुगाइ मिला जका हैणै (अवार) हाजर है' बयो घोडे वाला
म्हारा छोरो रोवै कान काट ल । म्है छारे रा कान बचर दगी गट
लिया । तीसर गुजरी मिनी जक उवै न गाते रीगा अर गळ गटका
भाया । म्है हुव रै माथ मेल्यो दूध रो घटो फोडाय कर रीगा चलाया
इस तरा खाजा खाया । दो उगाया । मूढो रगडिया अर भायो लग-
वियो । छेकड वाणिये र तत रो घने फोडकर आपरो खर मनाई ।'

राजा आवा उवा मिनवा सू वड्यो— या लोग असवार
सू एडी वाता करी काइ 'असवार कूडो तो नी बोल किया ह?'
उवा सगळा लोग एर साग ही असवार रै साधाट री हा भरी ।

राजा बयो— जद ये तो थारी कूडा वाता सू ही बवि
यात्रा हो । घोडे वाल रो इया म काई दोस है ? यो तो रानी वाता
रा हा फरक है ।' इतो क परार राजा घोडे रै असवार न प्रेममूर
छाडकर पाछो मोड दियो । परिशान्त नोगा आप आपर घर रा गलो
लियो ।'

पिडितां री टक्कर



पडिन चेतनराम कासी री पढाई पूरी कर परोर पाछो घग आवण लाग्यो । बठ वेद, बामणा अर बोध धरम रा मोटा मोटा पोषा मोकळा पन्था । घणा बखान सुण्या अर कळा बिम्यान रा पाठ गुण्या । जोतिस तथा कम काड री जुगती पकाई । पडिताई र मुद सागीडो सरबजाण बणकर गाय नै टुरयो अर गर जजमानी रो हीलो करण खातर पाठसाला सू मुडयो । घर कू चा ! घर मजळा । चालता चालता आयण हुई तो एक गाव म वासो लियो । गाव रा लागा इधकमाण सू चौधरी र घरा पडित रो डेरो लगायो । घर घणी पडित जी स पूछयो—'पडित जी आप कठ सू पधारिया हो ? तथा कठे रा वासो तथा कठ पधारोला गुरा ।'

पडित चेतनराम घण घमड सू कियो—'जजमाना ! म्है कासी जी सू घणखरी भणाई भण कर आयो हू । म्हारै लायक कोई काम काज या भणाई गुणाई री चावना हुव तो वेखटक वता देवो ?

घर घणी बोल्यो—'महाराज ! और काम काज तो नी है अर ना भणाई गुणाई री चावना है, पण म्हार गाव मे पडित पर मानराम वे सास्तरा रा खरा जाणवार है । उवा र जोड रो नेड निडास कोई पडित नी लाघ, म्है तो उवा न महापिडित माना हा ।

कीरी हिम्मत पढ़ जको उवा रँ बरोबर खडो हूँ । परमान री जोड़ रो पिडत हयो न हूव ।”

चेतनराम चमक गियो—“हा हा ! इसो वक्तो विद्वान कुण है ? कठ पडघो है ? कासीजी में तो बारँ बरस म्हँ गाळ्या है घर अनक विद्यावा रो ग्यान पायो है । बठँ सू पढघोडा बढघोडा रा देम विन्मा म चानणो चमक है । धारै गाव म कठ सू सठ रो गाठियो नाव पसारी बण्यो बेठी हे ?”

घर घणी घर गाव हाळा कोड सू कियो—‘तो महाराज काल या दोनवा म सास्तरारथ करा देवां । ग्यान ही छोटी बड रो टा पडे । ग्यान तो परमानराम पीपळ सी पूजनीक अर भोटो लागै है ।’

हा, हा ! सास्तरारथ जरूर कराय देवो, पडित री पू छडी न रगडर राख दसू । चेतन राम भूजतँ थक कियो । दूज दिन गाव रा स ग समभदार आत्मी पचायती र अक मोट घासरँ म अकठा हूवा । बीचाळ विछायोड मोट गिदर माथ आमण नामणँ दो गाडवा र सार दानू पिडत बुनाय कर त्रैठाण्या । चिड्या म भाठो सी पडघो निया आवा लोगा चुपी धारी । पली पात पडिन परमान राम सास्तरारथ छेडधो अर पूछयो— वेद कित्ता है । बताओ ?

पडित चेतनराम परमान री या छोटी सी बात सुणर रीस सू फाटग्यो । बोण्यो— वेद च्यार हैं । आधी राड ही जाणँ । ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अर अथर्ववेद । इया रँ अलावा अट्टारँ पुराण अर छव दरसन सास्तर भळे है जका स ग म्हारा तो धिरवाळघोडा पढ्या है ।

“कूड सपा कूड ! पिडत परमान राम हाय पटकतो थको बोण्यो— वेद च्यार नी गधर लेखँ ही घाठ है । रिग वेद अर उवँ री वदनी (पत्नी) जजुरवेद अर उव री थनी । सामवेद अर उव री

वेदनी तथा अथर्ववेद अर उव रा वेदनी । अ ग्यानी घर स्याणा
रिसिया मुनिवा रा बणायोडा कुन आठ वेद वेदनी हैं । जका एक
साथ च्यार कया हो सक ? कोने मोटो पगडो भाथे मेल परार
पिडित बणयो, भळ म्हार स सास्तरारथ कणै सातर भिडियो है ।
साज नी आई ।' पिडित न छोडर पद्ध परमान राम गाव वाळा लोगा
कानी घिरियो अर किया -- अरे नात्तायको ! ये मन किमक मूरख
साथ ग्यान चिरचा करवाण न जाग्या हो ? जका न बदा रो ही पूरो
ग्यान नी है ? बायो न्य नै अठ सू कुन मार कर ।

गाव हाळा सडा दृषा, चेतनराम म चता बापरियो । चेत
गम ना ! ना ! करतो रिया पण गाव हाळा जक नी मुणी । परमान
राम रा बत्तायाडा परिपाटा मुताबक चेतन पडित रा सारा पोषा
पानडा सोस निया अर गाता गळगोता देवता थका गाव सू अर
काड आया ।

बापड चेतनराम रावन बूकन आपरो गाव अर घर नेडा
नियो । चेतन वार बग्गा सू पत्र पाछो घरा आयो हो इय वास्त
उर्व रा माटो भाई जादू दादो बगरान धणी घवहाया । उव बापर
हाटे भाइ चेतनराम स रोवण बूकण रो वारण पूढयो । चेतनगम
नाग्न गाव म हुवाडे सास्तरारथ गळी सारी वागता बगाई । जद बग
राज रो घास तणगी, लोहो उबळ आयो अर बातडा ढवरा बणगी । उव
बापर छोट भाइ पडित चेतनगम सू किया -- भाई काटो काट सू
ही निकळयो । जिस्त उजड गाव हाळा बिमा ही बिया रो पडित ।
जडा गुर बडा जजमान । हर्मे म्है जावू अर उवा माळा मूरखा न
मजो चखावू ला । उतरो घर तो जूत हा हर्ब । नकटा देवा रा ती
मूरडा (बिना मोरो ग) ही पूजारा । नष्ट देवा रा भिरस्ट भोषा
बण्या बिना पार ना पड । इट रो जयलो पत्थर सू दस । सर न
सबा सेर बत्ताया बिना मोक्ळा भिनखा म फोडा पड जावै । थार अप

मान र बगल साग उवां नै सागीडी म र भी दे घास ।'

दूज दिन वेगै दाई (वगराज) एक बैन गाडी जुटवाई । तद पन्नाद र हाथा रा मै ग पाथी पानडा जर घर रा सारा प्रथ भाग नतीरा गठडिया म बाधकर गाडी म तदथा पछ ऊजळा घाळर बम तर पहिर कर बगो दादा खुद गाडीवान र बराबर जा चढयो । गाथे टोरी मोरी डीली छोडी । पळियोडा बैन जा पांच्या घायण नै मागी गाव जठ चननराम रा म ग पोथी पानना गोमकर गांव हाळा मुरख मिनखा आपर पडित परम न राम र कवर्णू मू पिटाई कगी ही ।

गाडी टामी गाव रा आया । पाथी पानना दणकर तो घणा चकराया । पडित जाणकर घणो मण मण करियो जर राजी हूया । गाव हाळा न गत्री प्यकर पडित वगराज ती उवा न मास्तरारथ करावण खातर लनाड दिया । मजा रा दखु गांव हाळा तो याती चात्रा न । पडिन वगराज भी ता सूकिया रै बटका बाड हो । गाव हाळा पनापट पचायनी र मिनर म जाजम गिनरा उगाय कर परमानराम नै ल्याय भिनयो । परमान राम भी ता आ रा बंद सास्तरा रा पोथा माथ तयकर आय बैठयो । थोडी मौन रै पछ वगराज परमान पडिन र मामन अनवनी अकड अर नजावन र भाव सू फुर परोर पूछयो—
बंद किता अर किता किता है ?

बंद बाठ है रिगवेद जर उवां री वेदनी 'जजुवेद व नी स्याम वेद-वदनी, अथववे वेदनी --परमानराम आपरो ऊडी सान मू राम तमाम नाम बताया ।

जाबक भूड ! सफा वूड ! कसा बावलो कुण नावडयो ?
आ विद्या कण बताइ ? अरे ! मू ग साणे सुणत्यो बदा रा साची नाव म्है बताऊ—

(१४६)

आया अर नाणा हाळी वाता सुणर घणा पिछताणा । बोल्या — 'घधू
कार जमान म म्है कित्ताक टा ना भूना ठाली रया ।'

लोगा कियो — ओरू ही परमानराम मन जाओ अर प
पीठ तथा दोनू काव्या म जठ कठ ही चार ह गता लाघ खाम त्यादा ।
मी नी तो बीमिया नासिया मू तो व वाळ ही नही जावै ।

••

दरबारी पिछत रो रोग



एक अंबड र गुवाळिया रो गाव हा । उर्वे गाव मे घणा अवन चरावणिया ही रया करता हा । र्वे दिन मे भेडा चरावता अर रात न गाव रं बराई अंबड नै बँठाकर गल्ला करता घका रवता हा । बिया गुवाळिया हाथी रो तावो तो सण राख्यो पण उवार हाथी रक्षण रो काम नी पडियो । व जाणता के हाथी एक मुणा जिनावर है जको राजा र अठे रव ।

अक रात रो बात ! हजरू भेडा र बोचाळ फम कर एक सुसियो (ररगासियो) मर गियो । मधिया एक गुवाळिय मग्थोडो सुमियो देख्यो अर जाण्यो के राजा रो हाथी क्विचरीज कर मर गयो है । बा गुवाळियो घणो डरियो अर घरा आकर आपरा लुगार् टाबरा न डरतो सो कँवण लाग्यो— गजब हुम्या । रात तो राजा रो हाथी आपनो भेडा म फसकर मरगियो । राजा नै ना पडता हो फासी हो जामी ।”

गाव रो चौधरी तुलायो अर उव आगे हाथा जोडा करी । चौधरा घणो स्वाणो समभदार बाजतो । बोत्यो रोवो मन । मरियोडो हाथी हाथा मे ल परार राजा कर्न चालो । राजा क्याधारी

हैं। सारी बात बता देण पर गुनो माफ कर देगी।'

मुनिव चौपरी रो स्याणो मजा मगळो मोगो र नाम भाई अर धीरज बंधो। जबा रें अयेइ म मुनिवा मगळीजर मरघो, उव गुवाळिय रा भाई उधु सापी-गपी भडा हो परार मजा रो मरियोहो सापी निवा राजा र दरवार बानी टर भीर हुआ। मुनिव र हुम म् निजराणा निवा गाय, भस ऊर घर बकरा उकरी भी गाय म निवा। राजा र रीग म आ जाण पर हापी रें मोन ग मारग जिनावर दयकर घो काम मरग निवो। जाभा अहो मोनर बं अवह हाळा दरवार र दरुज जाऊभा। 'रवान म्वा घर पूरघा— बया आवा भाईहो ?

अब गुवाळियो बीयो— राजा रा मरमण करण। 'रवान कियो— राजा राजा धान दरमण नही देखला। चल्हा जापा अठै मू।' इय बान माय धावा अवाळ डर गिया। मुनिवा भाग भायो अर दरवान चपगमो नै एक बकरा नजराण रो दीनी। कियो— 'हजर धारा मजूर मिनल हा अनिर मू धावा हा अवम राजाजी म मिनायो।' 'रवान आपरो भें पूजा सानी अर गुवाळिय र आण रो राजा न जाणकारी दीनी। राजा उवा न बुनाया तथा फरियाद सुणनी चायी। राजा कियो— भाई म क बाद बेवणो चावो ?

आवा अवाळ राजा र डर म् धरघर वापण लागम्य। उवा म म अेव भी राजा रो बाल रो उघळो नी देव अर ऊभा अक हूज रो मूढो जोव। छकड चौपरी मुनिव अवाळ जाग आयकर धूजन वापत सारा बात क सणाई। मुनिव रो बात सुणता थका अवाळ घणा हरिया। जाण्या हर्म राजा फासो रो हुम दनी।

रवड र गुवाळियां रो फरियाद सुण परार राजाजी घर

मग दरबारी लोग हसन न लाग गया । बंध्यां ओ-सो हसता हसता
 पट दुषण लाग्यो । जद राजाजी आखा गुवाळिया न आपर दस
 दीवान बन भेज दिया अर कियो—' धारो मामलो दीवानजी सनटा
 वरा ।' राजाजी दरवार सू चाल्या अर हूमता ही महल म बढिया ।
 पण अंवाळ तो ऊधी समभिया उवा जाण्यो— गुनो वकसणो
 होतो तो राजाजी हाण ही माफ कर चावता । मामलो दीवानजी र
 टाय हरगज नी स पता । आपम में अँडो भोड करता थवा भ्रत्वा
 गुवाळिया पाछा धिरिया । एकड सगळीं री सना म् मुणियो चौधरी
 दीवानजी न कवण वास्तुं आठो गियो अर वाच्या— दीवान जा गुनो
 (अपराध) तो म्हारो बडो है पण ओ म्हामू अणजाण म ह्यो हैं ।
 म्य वेगी जीवणदान माग रिया न । आपरो निजराणो हाजर है ।
 म्हे गाव, भ स भेड बकरिया सागै लॅन्ता आया हा । उवा न आप
 निरावो अर म्हाने जा णटान दिरावा ।

देम दीवान कियो— थास यो वसूर अणजाण में ह्यो,
 म्य वास्त राजाजी अेक बार ता माफ कर दिया । आगै सारु निग
 राखना रिया नी तो जरवाने भुगतणो पडना । धारा जिनावर भी
 सना जावो ।

गुवाळिया माफी रो नावो सुण परार घणा राजी ह्यो ।
 वैं उल्लसता-बूदता आपरें मुखिय चौधरी री चनराई तणी बडाई
 करता धर कानी टुळिया । अंवाळ राजा अर दीवान रें भनाव याव
 री बडाई करता आपर गाव र नेडं आ पोच्या । गाव में बडना बचन
 नार्न सू कण ही हेलो मारिया । हेलो सुणवर सै ग जणा भळ डर
 गया । जाण्यो राजा दीवान रो पाय खारज नी कर दिया हे ? हा
 जठं ही ठैरग्या ।

चट लार सू एक चनती पुरजो सा पिडत आया । माप
 तिनक बगल म पोथो, वात वणाव घोथी मोथी । घाळी घोती अर

बसूमल पागड़ी रो यात्र मोर् गालां रो फुलाट सू जाबक पाट नीं हो । रोष दाब सू दरबार दाबळ मारी । टगण रो बरी तुम्हत धारी । इयै चाम्नें ही दरबार सू निबळता इयां गुवाळियां रो पिडतजी लारो लिया वग हा ।

मुनियो चौधरी—“बतामो दाग ! दीवानजा रो करियोडो म्हारळो फमलो राजाजा रू कर लिया ।”

पिडत बो-या— ना ना ! दीवान जो रू करियोड फमत न कोई भी मारिज नी कर मरु । पण मीं अरु बात घान बँवण न आया हू जकी वान खोलर गुणल्यो । थ नोग हाथी मार पगर राज दरबार सू ता हू गिमा पण रामदरवार सू गुवा नी निबळ मकोला । भगवान मो की दाव है । पन्ति गो बात मणर अंगळ फिर व पड गया । व बिना म एक दूज र सामा भावया घर बोन उतळावणसी करो — पिडत जी कर्वे तो माथी है । बात बणती दगकर दरवागी पित्त भळे बो-यो— सगळा जावा म हाथी बडो हूवै । उव न मारण रो महापाप है भर राजा र हाथी न माग्ण सू ता पाप रा छडो ही नी रव ।

मुनिय चौधरी हा भरी भर सिर हिनामो तिथा कियो— आछी बात है । हमे म्हान पाप ऊतर जिसो उपाव बताओ । पिडत— सै सू सोरो उपाय तो या है वे ये लोग भागवन रो कथा सणो ।

एक अवाळ — ‘कथा के हूव ?’

पिडत — ‘म्है स ग बता दसू ।’

दूसरा अवाळ — ‘पिडत जी ठीक ही तो बव हाथी मारण रो मोटो पाप आपणै माथै है जका ऊतार लया तो चोर्यो है ।

भगवान र दरबार में भी कोई भलो दीवान लाघग्यो ता यो दुख प्रवस कट आसी ।'

मुखियो बोल्हो—' चोखी बात । पिडत जी थ म्हारें घरा चाला अर कथा भागवत सुणा परा पाप उतारण रो भालो भालो । पिडन रै परबी आई अंबड र गुवाळिया र घरा गियो । दो चार दिन तो मान उढायो । उवा न समभा िया क कथा आछ िन रो सह करी जासी । इयै बीच मे बनला गावा रा गुवाळिया न भी पडिन जी र आण रो पत्तो पडग्यो ।

बसाख रो पुयू रै दिगू ग पडित जी कथा वाचण न बटा । गाव अर ग्राम पास रै गावा रा पुरख लुगार्द तिया बूढा बाळक बाबा मिनख पडित जी रै बारकर घेरियो बणाकर गठ गिया । पडित जी माटी चोकी माथे आप बटा । उव र ऊपर छोट पाटे माथे कथा रो पोधी मेनी । पास म घूप दीप सख अर आरता रो गरजान जचाय परोर कथा मन्वृत रा सिरळोक सहकरया । भासा म ग्रन्थ करण रो जची नी । अंबाळ बोना बोना मुणन नाम्या । नुगाया हाथ जोडघा । टाबर देखण लाम्या बूढा सिर निवायो । पन्नि जी पल पोत सख बजायो । गुवाळिया गू गा बहरा तिया चौरना हग्या । उवा म सू एक बोल्हो— पिडत जी कोई जादू दूणा जान हे— हाथ लगायो हाड रोवै । जका पाप जगत रा धावै । अवाळिया आपसरी मे सपसपाटिया सह करघा । कानाबाती चलाई । पिडन जी जाण्यो म्हारी कथा रो आछी रगत भाई अर भळे उ तापळ बाण णनै लाम्या ।

गुवाळिया काई गैरी अर ऊडी धारता साची । उ स आपरी बात त कर परार घर रै पढव में गया । पिडत जा जाण्यो म्हारें बड़ाघ रो सोचना करता हवना । इय स्वातर पिडतजी कथा माथे सारो जोर लगा दियो । कारण के घर भायला मिनखा

भा सामीही घर पर रह सक । जिहा गुवाळिया पद्व में बहपा उवां
 आदमरी मे राय करी । अर बियो— विडतजी र कटा में रोग
 हुवाया मगाव मारम जिना म्गाटी बरुरी र हुयो । धनी ताळ तर्
 बिदिमाकर मरो ही । नेती रही गई ।

दूजो बो-यो— विडतजी मरया तो भारी दोभो बाजाना ।
 हापी रो म्गाय हाग करया ही है विनजी मरगिया तो सारा नो
 हुना । राजजा दया ग मरया गुणग ही भाया सग्ठां न घापी प
 घान पोहा दवना । कम घाना ही है राजगिरन है । तेज बियो—
 घादग नट निगास तो कां म्दानो हिरमनी भा नीं है ।

सोया बो-या— मर तुकारिय टोडिय र अवरग या रोग
 हुयो रक। गिर भुआ भुघा कर अरहाया । जन् म्हे तो बासन म
 मों सान कर परार बोर कग नाच माहा मगां जको चट नेणाय
 सागे भायो । फन् म्गाळ मारनां घरण न रागयो । स ही
 रा ग ल भादा ही है बोद भा जिनावर वाव भाजै जन् नाडा मू ही
 म्गाया हाव । घान मगळा र टाय आय गर् । जद घणो जगरो जयापा
 घर उव न अन् तर साहु ग दानी तगा । विडत जी कया बावण
 र अम न हुना हा । घान बीराळ गय भी बजाना हा । गुवाटा
 मन्गाटा उकपटा— बावळा म्या फिरा सार मू अक जरा घायकर
 चट पाट बठ विडत जो रै गळ ट् कटा पर साल सपियोडी दानी
 र सीधी घाल दाना । विडत जा म्गळया । मर गुडघो मर पोवा
 परिषां जाय कर पक्षी । व बोमग सवया ही नहा के दूजी दातो स्थाय
 कर नस पर कस दीनी । म्ग नी विडतना मरळाया । उठकर भाजणो
 चायो पण बई गुवाळिया सामीहा बांया म पकड सीना अर पेन् मगर
 तथा कमर पर सीडिया सु दाय दीना । जगां जगा सारा सीग घाल
 दीना । डील बसीज्यो विडत जी कूवया । जद अक अवाळ बोत्यो—
 रोवो मन विडत जी राग बडो सुगलौं है । थारी जान ऊवर तो

साया रा हा ।' गल्लै, नस कठ, कमर, पेट अर छाती मायै दातो सू चारु मेर डाम घाल दीना । चामडी पर चटका रा चरडाट ऊप ह्या । पिडतजी पैली तो गयो पण पछ सुनो अर पीडा सू पीडित होय कर पडगियो । मन में जाण्यो—' लिखयोडी टल नही । आपर पुराण समाव र मुजब सोचणै र सागै सागै एक हाथ सिर मायै चलयो गियो । चट एक गुवाळियो बोल उठ्यो—' पिडतजी बतावै के म्हारै माय म ओजू रोग है । वम भल्ल के चायै हो ? पिडतजी न चोखी तरिया तो करणोती हो । मायपर भल्ल दो च्यार डाम घालदीना । हमै अेवडहाळा अेवाळ घणा राजीह्या । इयार मायसु एक भार सो उतर गियो । पिडतजी रो डोल पूरो डाम कर सुख री सास लीनी । आख गाव री दाता किनस मिटी के मालक पिडतजी न उवार लीनों नी तो राजाजी गाव उजाड नाखता । पिडतजी सफा तो नही मरिया पण डामा री पीड सू कई दिना ताणी हा जठै ही पढया रया । गुवाळिया उवा ऊपर धी दूध री तो नदी सी बुवाय दीनी । चू टियै चूरम अर गूरु री रोर सू लीडिया री रीळ मिटी अर पिडतजी उठ्या । बोला बोला मुह अघारै ही आपरै गाव रो गैलो लियो । पोधी पानडा तो सै ग युहार लम्हा पण सख रो पत्तो वृहवुडो नी लाग्यो । हमै इयै गाव म क॰ ही बाळका री सभा जुडै, जद ही व बाळ सभाव अनुसार पिडतजी हाळी कथा बाचणै अर सुणन रो साग भरै सख बजावै अर गागरा कर । पण जुगाया गाळा ठोकै—' कोई रोग लगाऊ हो रे ?'

कल्लि

०३०

प्राण माग र्हा रवाग बाजळी र पया ज्यु माटी माठी परमळ वग । अक सरको उन मू भाव दूजो वु न मू जावे डानर हींइ रा गा हलोळा लाग । फोगनो पूर रग बट गोनिया र वाळा निडा चू चाव । गाव र गुवाठ चग बाजं गारव उजाड टाबर हृद दडो ख । मोहना मोहना तुगाया रा भूनरा मू गात गाइज । कठ ही रम्पन कठ ही गांग माकळी जगा मिनख महरी वध्या नाच अर घूमर घाने । रात रा ताळा जडे घानड पडे अर डडिया रा कनाकड घोल है । होळा आगळा नि मतवाळा मन सामोडा बल है । एर कोन्ही हाळा आदमी आपर रावळ मे ही चम्भानोळ कर है । ब आपन माटा आपमो गिण । उनपुलिया थोडा ही है जको आडा आम्ह्या माग नेल । गढ र माय न ही मारुडा गाईज अर दारुडा पीईज । दमामध्या डाल माथ बकियो राजा रतनो राणो अर मूमन सूरुगे गाव ।

चाप्ती रात—मोटी छात कुवर रो माथो जुलबळाव । मिनखा री मफा तुगाया रा भूनरा कुवर न जाबक नी मुवाव । इय वास्त वो आपरो अकलो ही सिध्या पडे ऊचो डागळ चढ जाव है । गाभरु जुवान, आख चाखळ म मान की री मजान है जको सामण ही जोनव । आख र इमार माथ मुक नाच उठ । फक मू घास वाळ नाव मू हिरण खोडा हुव । कुवर न नाट करण री हिम्मत कोई राख नही । महारावळ बूना, महाराणी जो आद्या पण कुवराणी जी की कवे घसडकावे राग जिका आपर पीवर पया रियोडा है । थोडी घाख लागी न लागी कुवर जी वभडक उल्या ।

बटा छाती माथे हाथ आगधो बाई ऊ घा मू घा लार वग्या के वर
 दावता थका कलाळी कलाळी कर थाक्या । तात्रियो द्याड्यो घोड माथ
 जीन बसा लियो । दो घ्यार बाळसगलिया माथ लयकर कलाळी र देस
 कानी चाल मोर ह्या । बोई मपनी आयो जवा म कलाळी री
 सो,वणी सीबी देखकर जी उपाह लियो ।

ध्यानणी चड्ड रात एक मणक सापा चवम रो चाद
 सूवो सिम्बर चढता धारियो है । उर्नसू चांदो ऊ चा घाव पण बुर्त
 दळता किरह्या रं भूमक री धारिरी जडा मे भवरारो सा परई ।
 इसड सोवणे मोवण सम म कुवरजी कलाळी र दस बानी घोडा
 शवट दीना । घोडा अनर वळेरा, ठाणा माथे लडा रियोडा टारडा,
 त्रिग न मोवा कोमा जा बड्या । बठ दज मुलक री चोराहो
 धाजाण स अस धी जगा मारग रास्ता पाटा वृभणा पड्या । रगील
 कुवर जी धनरोहा म खड अक गाया र गुवाळिय न घणी मीठी
 मघरी बोलो सु चतळावता थका बूड्या— अर भाईडा ! म्हान
 बताआ । राजा म्हाराजाळ कलाळ र दस न वृणसो गलो जासी ?

अक गुवाळिय कियो— कुवरजी । सामण जका दो गैला
 फट उवा मे सूडावो तो जसलमर जावाळो मारग है अर जावणोडो
 रास्तो धागेड कलाळ र देस न जावलोता सो धां जीवणोड मारग
 घोडा घालदया ।

कुवर र साविया स ग घोडा उव म रग तानी माड दिया अर
 लगाई अंड जको जा लया कलाळ हाळ नगर र नडा । बठ मारग
 वन अेब मोटो वाग आयो । वाग री माळी गल र नडे ऊभो ।
 मि यो । कुवर जी माळी न वृक्षयो— अरे वागवान कलाळी र वाग
 रो काई क ठिकाणो है ?

माळी — कलाळी रो वाग ता सा धो ही है ! फळ फळा
 सु लदियोडो है । ध्य म मावळा पाका घाम नारसीला निम्बू है ।

वस । हमें तो रगोला कुंवर जी नें कलाञ्जी र मिलन से पूरो आस
 पध गई अर घोडा न सर मे बाड दीना । घोडा बडी-बडी गलिया
 न सूदता वका अरे बावडी र नई जा पूग्या । बठ मोकळी पणिहा
 रघा पाणी भरण खातर आ जारया हा । कुंवर जी घणी उतावळो
 स उग न बूग्यो— मुणाजी पणिहारो सहेलिया ! म्हान थार नगर
 रं मोट्टे कलाळ री पोळ नें दरवाजो बतावो ? इय सर म स ग घर
 बडा-बडा दरवाजा सू सजियोडा है अर म्हे नवा आत्मी हा । बूभ
 थाक्या । हमें साचेलो दरवाजो था बताय देवो ।

म ग पणिहारिया थोडो ऊमी बगता बटाउवां री चास बास
 जोयो अर बडा मिनख देखकर हाथ र इसार सू कियो—‘ उवा
 देखो राजाजी ! सूरज सामी जो लामी पळवती पोळ दीख अर उव
 र आग वळ भवरकी सलावतो थको लामो सहीड भोटा खावै,
 आहीज राजा पातस्यावा र भसल कलाळ री पोळ है । आप सीधा
 नाकरी डाडी पघारपरा जाओ । कुंवरजी कलाळ री पाळ पक्की
 करली अर वखतर बल आगै जा ऊमा । पोळ माथ एक सावचेत
 हखाळो पोळियो लाधो । पोळिय नें भवर जो बतळायो । कियो—
 ‘पोळीडा वीरा उठ परोर पोळ उपाड, बार देख सिगरथ पावणा
 आया ऊमा है ।’

पोळियो अेकर तो हाकयो दाकयो सो रहग्यो । रावळी फोन
 सी भाई देखकर चमक्या । पण तुरत सावचेत होकर बोल्थो—
 पोळ उघडन को भवरजा हाण जावक जोग नही है । वयू क पोळघा
 मे कलाळ री साव स्याणो पूत सावचेन सूरिया है ।

भवरजी चौकीदार री चट्टो उधळो पायकर हूज बारण जाय
 न किवाड री कडी खड खडाई अर कलाळी न सभडक हेलो मारयो
 ‘कलाळी थारा सजड किवाड खालो । बार महाराजा री कुंकर
 ऊमो भडीव रियो है ।’ कलाळी उठी, फट समझी, कोई राजा री

गल्लूणो बरडो कुबधी कुवर है । राजमद रो इधकार लिया आयो है । आवा न घापणी इज्जन देवता यका स्याणो उषळो देवणो चाय । कियो—'घोडा भवर जी धीमा मधरा बोलो सा । वयू के पोळयां मे म्हारा सुमरो सा साया हुआ साभळरिया है । पण भवर जी र मोई मे ता कीडा सा जुळ बळाव । ब कद माना ? उवा तो कियो—'सुमर जी रो भोळी राणी काई डर है ? किवाड खोनी । उवा न तो दिहनी आगरं जिमा सर दिरावाना ।

कलाळी जाण्यो बडो गवार है । हरगज माने नही । खोटो माय लाग्यो । घोडा डराणो चाय । कियो— भवर जी म्हारो मागणां काच सू जडियोडो है जका थारा घोडा र पोडा सू उषड न पूर रियो है । इयां न पाछा मोड परार थारं देस सिधावो । पण अवरून बाधरा दोघड तथा ठरक्योडा रूठ इस नीव उयळ न काई मान ? इन रो कुतियो अर जवान कुवर वपूत क जाण काण कायणे ? व मान पू मडा अर जून । माण मुलायणे राखणिया री भून । पण इसडा राव राजा तो डरपोक तुगायां अर टावरीं सू ही पडता फिर है । कीं कलखारी फौजा मरदानो लडासू औरत र घक्क बाज्यर तो लता ल नवै । कलाळी होळ होळें ममभाव ज्यू ज्यू कवर जी नडा जाव । कव है— कलाळी जी थारो आगणो हीरा पना सू जडाय लेमू घर बारण न हीगळू सू तिपा नाश्र ना ।'

कलाळी भळ छाती करी अर उळाव लेकर बोली । वयो—
माटा सिरदार । घोडा धीमा नै मधरा बोलो सा । अठ रावळी डपोडी म म्हारा मारुसा सो रया है जका काची नौद जाग आवैला ।'
पण भवरसा र सिर मे तो कुभावना रा जूजळा सा किलबिलाव । डफोळ सध हाळी वातो कर । घणहूती दाब नै लाभ री लीला विवाळ है । कव है—'थारं मारुजी नै कलाळी सा दूजी दोष मरवण नूई नखराळी नार परणाय देसू । उवा सू नही रीक सी

तो सावळी मुसकी मरवण भळ त्याय देवू । घान घणी रो कोई डर
 नी है । धारै घणी रा तो म्हे घणी हा । राजा पातस्यावा न तो
 डोळा ही लवण रो इधवार हुव । जकी जिनस राजा र जी म जव
 जाव परजा नै बा चीज भेंट कर परार राजी होवणो पड । पण भळ
 ही म्हे अक् र बटळ दोय परणावण वंगी त्यार हा । म्हान धारो रूप
 रग न नजाकत घणी घ्राछी लाग । सावळ नही तो कावळ ही सही
 प । म लुका परा ल चढस्या । त्य बात माय कलाळी न रीस तो
 घणी घ्राई । पण वरतार र वरताव सारू नारी जात र मुभाव मुजव
 पड उघळो दियो । आपरो भे लुका राख्यो । बाता सू ही पाछी मोड
 परोर पीछो छुडावणो चायो । कयो—पटा म पातळिया धार फूटरो
 तेल फनेल होवणो चाय । लुगाई न काई पटा म राळोला सा । दूजा
 री लुगाई माथ जी डोलावणो धार जोग नी है । पाप री बाता
 आपन हरगज भोप नी उलटी कोपली । घणो हो तो घरम पाळो
 कुळजुगी काळो वसू चाडो ?

नागडा नवळो नेह जिण तिण सू बीज नही ।
 लीज पराथो छेद भपणो पण दीज नही ॥

भवरजी थाडा ठडा पड्या तो सरी पण योथा धूल घरम रै
 मुद मूळ न काई जाण ? उवा तो भळ कवणो सह कर दियो ।
 बोल्या— कलाळीगा धारी घसरळी रुवाळी म्हान डादी दाय घाय
 रयी है । म्हे थामू हार न नणा म सार ल चलाला ! नी तो म्हारो
 राजा मे राजी मान जाधो । कलाळी काई कर ? लुगाई रो जमारो
 जावक माडो । घर मे अक्ली औरत अर राज्य रो डर बंधारो । पोरे
 री बात । बोली— नणा म लाहेसर सा ! तीछी सुरम री रेव
 सोवणी लाग ? दूजा री लुगाई री तस्वीर ही अणसावणी दीस ।
 मवर कवर ता चवरा ही री छतर जिया म चाल । ज अवरा री
 लुगाई री सीबी उवा री आख्या मे क मोभा पाव । छर्ना री घण

छना रँ घरा ही घ्राछी पण महला म राज कवरा री सायधणा
ही घणा गुणा ननाव । अडा करमा स मिनख बेमौत मर ।'

भवरजी रो नसो इमी बाता सू काई उतर हो । उवा तो
बाही रट राखी । कयो— 'कलाळी जी ! या म्हांने मोह लीना ।
धारा पुत्ररपो म्हारो धागे काठ नाभ्यो । जी करँ था जही पुणवती
न गळ में पर परा न जाऊसा । इयँ बात पर कनाळी टक्को सा
जबाव पकडा दियो । कयो—- राजकवर हो तो गळें म मोकळा कठी,
होरा अर गोप परो सा । विराणी बडुवा न बयू भरमावता फिगे ।
यो काई वडापणा है ?"

भवर जी भट्टे कलाळी धागे सुवान करधो—- धारी कामण
गारी सूरत म्हार काळज म खटकी है । नी मानएँ पर डबी म जड
परा ल जासू , कनाळी भी छाली मू छी त्यार राखी । कयो—
"राजकवर हो तो धेक नही अनक डबी डनिया में पचासा मोहन अर
रुपिया रासो रासो कण पाल ? पण पारकी लुगाया डब्बी मे डबी
देखा सुणी होसी ? सगला सपना है बुरा पिचार धावँ है बाकी इमी
कुण नार है जकी आपर घणा न छाडर था साथै डब्बी में जहीजर
भोर हासी ।'

भवर जी मळे ही नी समझा कयो— कलाळी था घागीडी
कपवान हा, था न तो कडघा म बाध न ले जास जद ही जान म
जान धासी । सोर सास नी तो धास साथै घीसए ही ले लगस्या ।'

कलाळी बोली— कडघा मे काई कटार बाधो सा । नी
तो तागडी करनोळा परो । पण दूजा री प्यारी उपर जी दुनावणो
सफा कूडा है । ना तो काई मानवण धार साथै चढँनी भर ना धारा
मनस्था री होवली । म्हारी मानो तो बोला बोला मारग ल्यो । कीं
धाखड र घक्क चए गिया ती ऊमर भर बग भरोख भोला खावोना

सा ।" भले ही भवर जी र भोड सु हगामो रो भवाली नी ऊररी । बो-यो — या न श्या बलाली जी काळज में तार सा फड । वपाता राड निकमी बठी घडी नागो । जो में आव थाने पगा में पर न ल जावा । एय बेवूबी रो बात माथ बलाली नै हमा भा गई । जन्वा बोली व — पगा में मोचडघा सु मारो पारकी गीरीघण न जावण रो वदे हो जो म मती घारा । बडा बाळा में घुह रा नाया ही नी हे । घोयो गरव अर घमड निकालिर्पा हा राव रामावा रो मानवो ऊजळ । घार राजपाट अर फौज र जोर सु म्हा लोगा रें सीळ रो दीर माटो हे । मिथ नाव धराय न गपळ गपळ गाण्डाळा करम करणा चावो । थान या छोटी अर ईमी सो मीठी बात लाग, पण घ्हार वास्त जावक माडो मोटी तथा सारी खोटा भाक सी हे । थारा इया कुकरमा रो कुवाण पोखण सारु लुगाया आपरो इज्जत लुटा देमी ? भरम न भुला दवा । थारो यो मन हेक मणो ? लोह रो मणो हातो तो जरूर पिघळ जावती । लाज नी आवें । बलाली र कोप सु भवरजी रो जाडा चिपगी । कान सुयर हाथ में भावणा । काटो तो खून नी । हार र लारे उणरो फुरण्या सु तातो बाफा सो भावण लागनी । ओठ सूक्या भास्या आडा काच फिरयो अर मट रा माठ चरड देणो सी चुस गिया । बा उव घर र दरुज सु दूर जायकर दूकतां पको बाल्या — इय कममल न रातू रात उठापकर नी मगा मलू तो म्हे राणी रा नी चमारो रा खू घ्या है । बाबोमा नै काल ही कनापपरा थ्ये रें बलाळ न कैद में नखा दसू । फरडका करतो खल्या खावोडो सो तिथा माईत मरडो सो भवर दूज दिन आगर गड भावुबन्धो ।

वीर समद देश



राजस्थान में वीर चूड़ामल और हाडी गणी रं त्याग तथा वीरता की का'णी कृत्य में ही नी लोक साहित्य में भी घणी चाले । मेर सिनेमा स्कू'न मंदरसा पर फोनीग्राफ—बाजा की चूड़िया मार्घ व्यावा सावा र मोरुं भी मिनग्या र काना में सेनाणी रं नाव सू ई मी रस सो घाने । मेवाड र इय वीर वीरागण दाई मारवाड में भी उवा र जोड सू वत्तो अेक वीर लोग पर वीरागण भटियाणी रं जोड भारी त्याग पर वीरता दिखाई है । लोग बिना सिर र जूभियो है पर भटियाणी सती हुई हैं । इय पर वधू रं अणोखं बल-पराकरम की कथा रोज वाचण लोग है ।

सतरव सईक की बान आगरं गढरी अेक विद्वान पातस्या साहजहा एफ भेळा एभा बुलाई । सभा में सतर खान (मुमलमान) पर बोहतर हिंदू अमराव जगामर मौजूत बठा हा । अलावा उवा रं—कवि पिडत, भा'त्र जाचक पर नाच गान करण वाली जत्या वकसीस लेवै ही स ग गपळी रीत पूरी हुया पर्ये साहजहा सभा सामो अेक अणहूता सुवाळ राख्यो ।

पूछण—' मुमळमानी सततगत र राज्य दरबार में—खान नबाबा की गिणती सतर पर राव राजा की गिणती बोहतर क्यू है ? नानवा की बराबर हावणी चायै ही । अर खानी ने की ही बेसी कमी क्यू है ?

इय सुवाल की जबाब केया राजा नबाबा थाप की घोकात सारू दीनो । पण पातस्या पूरो पतीज्यो नी पर कियो— ई इय की

साङ्ख्य तपछा मेवणा चायू है । यून क आज म म सदाणः मरबत्राण
राजा वास्या हाजर है ।

उव वगत न्निगनां सूव रो सुवगर मीरस्थानजहा बठ
महो होवरर व वण सागा— हजूर । माकमार भाप र बुत्ररगा र
सूक माकछो धार तण तुवया है—क हि दू राजा भापगा सू नी म
बाता म दुनिया म ऊवा है । जहा वास्त हा उवा न म कनबां रो
गिणती वत्ती रमाई गई है । पलही बात हि दू लोग जुद्ध में घट मू
मायो घळगी हा जाव तो ही लहना रव । हूजा बात पढ पढ जाव
ज उवा रो वीर राणिवा उवा रें भाप न आपरा गोी में लपकर
जावनी जळ मर । जहा वास्त ह्या र। गिणती दो वत्ती वा तर
है।”

मीर रो सांची वान सुणर साहजहां मारी निराज ह्यो ।
कारण बी तो मुसळमानो राज म हि दुवा रा गिणती कम करणी
धाव हो । भर बिया—‘मीर मा’व । अ दोनू वानी मूँ म्हारी
भाकणा देवणी चाङ्गा । एव मीणा रो म्वा है । मारी मनस्वा
पूरी कर म्गा । नत्रो ता धारी या बात वास्त्य न र विनाक माना
जावला घर उव गुन रो मजा पजन मोत है ।’ मीर भर कई ममीर
साग बादस्या र मामग भापरी कई गुज्रांरम करणा चावा हा, रण
हजूर रें हूकम सू दुरत सभा वरसवास्त कर दी गई ।

समा विडी, स ग राव नवाव आप आपार ठिकाण चाल्या ।
बापहो मीर घोळा मु मारेही कमडो रो तरिया धूजतो वापतो टुळ
बधा । उव समे मार रो दमा देवण जोग ही । पातस्या र डर अर
लोगो रो ताज सू नदिमोहा राव वास्त्य भी मिर नीव किया चाल
पडचा । मगर मारवाह र धणी गजसिपजी न भा बात धणो मलरी
न दोरी लागी । उवा सभा भवन सू धारें कढता हो स ग लोगो न
रोकर टोका दीना अर मोकळ जोत मू रोस मर परोर बियो—‘माई

लोगा, आप आखा खान उमराव मीर साहब र माथे आई आफन टाळणु बाबत जोधपुर र काट पधारा । यो हिन्दू मुसलमान, दानवा री फरज है, पातभ्या री ना समनी या नाराजी म थडे सुवाल नीसरधा है । राठूपन हरगज मार साहब रा प्राण उवारला । उवा री इज्जत बजोड है । महाराजा र बड, नाम चौने फुरमाणे मूजब म ग रजवाण बात मानी अर मीर री पीड मिटावण री हामळ भरी । मीर ने चार मीणा वेगी मारा रजवाडा कन फिर फिर आपरी आफन री कथा बवण खातर कडयो । माग चौला मोटा जागीरदार सरदार सीना अर महाराजा र कय अनुमान आखा राजवाडा रा दोरा सरू कर दीना ।

मीर री दळ राजस्थान म अके वसै वीर री ग्णोच कर रयो जो सिर पड जाणै र बाण जोम मू जूझ अर धड पडता हो उवा री बीरागण उवै भावर री मिर ले परा सना होव । पण काम डाढो बगो पार पड कैया ? इय वास्तु फिरता फिरता मीर री संगीर छाटो होग्यो, पण खाली हाथा पाछो गजसिंघजी कने आवणो पन्चो । गजसिंघजी तुरत आपरै लीवान मू खाम परवाणो लिखवायकर साडिया र हाथा चारू मेर आदेश भिजवा याणि अर उवा माग्वाड रा हाना मोटा सारा मिरदारा न जोधपुर बला निया । अके भलवाडै म बठ स ग मिरदारा री भीड लागी । जोधपुर र गढ म बडा सोवणो दरबार जुडियो । हरेक मिरदार ढाल तलवार अर वमतर-मम-तर मू मजियोडा हा । गजसिंघजी भी आपर आज अवे गौरवपूण वस म सजकर मभार बाध सिंघासन माथ आय विराज्या । अमल री मनुवारा मरु हुई कविमा वसू मै री मैमा गाई । वीरा री मू द्या तणी अर जोस आयो । पान सुपारी शोक चिन्म री खातरी रै बाण महाराजा सभा री तरफ नजर करी । सारा मिरदारा रा लिलाड चमकता जोया अर फुरमाणे— मिरदारा । मीर सा व सै ग रजवाडा मे जाय नै

तोपा री भारी गरजणा रँ साथ सारी बरात कने सू बढी । सडका गळिया भर मवाना माथ मिनळा लुगाशा भर टाबरा रा टोळ घमोळ चोळ सू फून बरसावण वग्या । घसरफिया री उछाळ रा गेड अर घेड लग्या ।

नरपत निछरावळ भूपन जकार तथा सारी जनता दरसन नँ चाली । हाथी र होत वीरवर तोगा री सजी सवारी नद भर कामदेव री होड नँ हानी । लार रथ, ऊट घोड री रीत ही घणी घापरयो ही । जान भाटी सिरदार रँ गाव रँ गीव बन भाई । सामला भाटी सिरदार घापर नळ बळ स सजकर सामेळ पधारथा । मान मनुवार र बाण बरान सही जगा ठर्राई गई अर नेग चार, जोमणवार, मादरबुद्धार म सुरत दिन ढळन री थ्यारी हुई । आखी जान हाथी, घाडा चडा भर तोरण सहेळा न टुरी । तोप ब दूकां नगरा निसाण अर वाजी तुल । तारण वायां पछ तोग जी नँ मैडे नीच बडे री राजपुरोहित याद वेनी बन ह्याया । उवा भाटी कु बरी नँ भी उठ बुलाई । पडिता येद गाण पड्याया लुगाया मोठा गीत गाया । वीन वानणी सिव पारवता ज्यू जगासर ज चिया । खबर मोरछळ दुटपा साव मोरत सू दानू देवमान पुटपा । ब्याह विष पूगे हूवो जकी मबर पापकर तोपा घाना । राजपूत राजी हुया । गजसिपजी दान निसणा रा मजा लिया । इय ब्याह उद्याय री रण आय ऊजळा न बजो ह्यो ।

ब्याह री दूजी रात रावळा बानचीन वगा मू यां री टोळा तोगात्री न बनावण घातर घाई । तोगा जी मफा मरिया हरगत्र रात्रळ जाणँ मू हू गिया । इय बान मू कई उमराव घणा उदाग भूे गिया । उवा सिरा गजसिपत्री मू भरत्र करी । क्रिया— घनगता ! तागा जी रावळ वगारता जू टोका रतो ।

तोगाजी र वस चालण वगी मीर साहब न पातस्या कर्न भेज कर दस बार मीणा री म्याद भळे मागली जाती तो चोखो रँता । दनीमना जिसँ इय जोडो रो वस चलायकर पछै पाधू चमतभारी काम पूरा कराया जावता जदे आण म किसी कमी पडती ।

सँ ग राजा महाराजा तथा गजसिधजी र दबावी हुकम मुजव वीर तोगा जी अगली रात नँ गवळ्ळ गया तो सरो पण राग रग री जगा आण वाण री बान आपरी प्राण प्यारी भटियाणी जी सू कर परार वीरा री आदत लिया पाछा आगिया । अतँ पुर र अय नग चारा रँ अलावा अमर नहघार पक्को कर परार बरात रँ डेर पघार आया । सरक सुरग मकती साधण अेकाकार ह्या । सुराग विराग री दो सरजावण मूरता अैडी जाण पडरयी माना वीर परमस्वर महा सकती न सती रो अवतार देवण न त्यार ह्या है । सती भटीयाणी जी भी वरदान र रूप म तागा जी न म्याद बघावण री मनाई करी । जद उव रोज िनु ग तोगाजी आप री बगत रा राव उमरावा नँ भेळा कर परार कियो— या स म्हारी अरज है के मीरसाहब न आगरा भती भेजो । म्याद बघावणी आछी नीँ है । हमँ तो सारा बराती म्हार साग आगर चालो । सास सास रो काई विमवास औनाद होणी भी सारै नीँ मो हमँ स ग सिरार आपरा तम्बूवा म पघारर चदन री ताकड करावो ।

भाटी सरदारा जान न सीख दराई । नु वरी भटियाणी रय मे आई । िनुवा री साची सरवीरता सू मीरखानजहा न बडो ताज्जुव ह्यो । उवँ जाण्यो म्हारी अेक जान (प्राण) वगी इय दो जणा री जान जा रयी है । अँडो ईमानदारी वफादारी भर इमानियत दूज मुलका म बठ पठी है । उव सारा राव उमरावां नँ गजसिध जी न मोकळ कायद सू सलाम करो तथा जगासर बटियो । जानु धिरै

राग री बात बराग म बदली । रथ हाथी घोडा रँ पोडा सू घरती धूज पडी । तोगा जी आपर गाव खनखर जात नै लाया । माय जोधाण नाथ गजसिंघ जी अर मोरखानजहा नै ल परार मागी रा तरमण करण गाव में गिया । गाव रा लोग घणी खातरदारी करी अर तोगा जी र घरा आखी इतजाम करवाया । हावण धोवण जीमण जूठण रो पूररो परबध हूयो । तोगा जी अर भटियाणी जी दोनवा माजी सू प्रणाम कर धामीम लीनी । माजी मोकळ मोर सू जद मे जावण री सीख दीनी अर आपरी कूचन खुद मराई । राजाजी समर सुत सेवा करण रो भरोसो नीनो अर कियो— तोगा जी घारी मा म्हारी नी मारी राजपूत जात री मात है । म्हारी भीखम बाणी हैं । जीवण भर इधर री च्या म रमू ।

पछ मोरखानजहा कवण लागो— 'तोगा जी आप खुनक मुलक रा कोडा कायरा न पाक मद बणावण वेगीं जा रिया हो तो अम्माजान की जि दगी भर यो खाकसार विदमत करतो रसी । इम गुनाम न मोको मुसिकल सू मय्यसर हूयो है ।

माताजी र स ग लोग पगा पडिया । माताजी सगळा न आसीरवाद दियो अर कियो— दूमरा भगवान ! आज म्हार गाव रा भाग मोटा है । सोनें रा सूरज उग्या है । जका आप पधारकर आख गाव अर म्हारें घर री घर ऊजळी करी । म्ह आपरी काई सेवा कर सका ? मार साहब री मेहरबानी भो आज माकण हूई है । म्हारा तो या साडसर ही सरबधन है जको आपरी भेंट है ।'

स ग घणा राजी हूयो । विरा मागा अर मिली । बसत र बळ जान जोधपुर हूकी । नगर म नवी खबर पमी । तोगा जी उवा री मांजी अर भटियाणी जी री चारु बानी बडाई होवा लागी । तो को री मारवाड र घणी घात्र रो तिन मगळ मानवणा में अठ ही बीतावणो घायो । कीद म गीत, राग अर नाटक, चत्रक होता रया ।

दूज तिन हावणा घोवणा कर परार जुद्ध जातरा नै त्यार हुया ।
राजपुरोहित मुन मोरत म राजाजी वन सू तोगा भटियाणी जी रं
तिलक करवायकर पूजा करी घर रथ मार्थ चढाया ।

तोषा चाली जै ज कार हुई अर हजारू हथियार बध जाधा,
तोगा जी र रथ लाग नगर सू नीकळिया । मानो या थ्या रो दूमरी
बरात है । घणा हाथी घोडा अर ऊटां मार्थ मोटा मोटा राजा महा
राजा घर मिरदार लोग आप आपर दळ बळ र मळ मनोखी आण-
बाण सू तोगा जी र रथ कन आ उभा । पूरी फौज बण गई ज
मख बाज्या नगरा घुरघा तथा तोषां रो गरजणा में सेना नायक
यजसिधजी रो इग्या सू सारो राजपूत सेना आगर रो तरफ खाना
हुइ । रबी अकास पर छा गई । फौज में खिया ठहै गई । ब्याह में नी
पौंच सख्या जका महाप्रयाण र मौक अदत भाया है ।

घर मजना घर कू धा । दसथै रोज बाद दोपहर मे इय
महामना आगर कने जमना नदी र किनार जा परा आपरो पडाव
जमायो ।

जमुना जी रो सीतल सुखद सेवा में राजपूत लोग रात भर
सोकर उठया जद बठरा लोग भी कानि दी र कराड हाण घोण अर
पूजा पाठ में लाग्या । निदरा म आरती मसीता में बागा प्रभाती
लोरी अर विलोवणा रा मीठा सब सुवारिया हा । पातस्या साहजहा
सूतो उठयो अर पत्तो पडयो के आगरें सू दो माल दूर, जमना रै
परलै पार राजपूती फौज पडाव नाख राख्यो है । काळजो हाल गियो ।
धरणा कापग्या । घूजण नागग्यो रोटी छुटगी । सरव नगर निवासी,
राज रा नौकर अर सना रा बिकाही तथा आगर रा आखा वासी
मोटी उदासी में रमग्या । पातस्या र गृफिया रुखाळा खबर दी के—
कयामत आई है । टिड्डी दळ दाई मानवो जुडियो है बहर डा देसी ।'

गामा समलस्या । जद गुटियो बोल्यो—“गुटियो राज
डाकण छुरी पत्तार है’ या बात सुणकर डाकण दापळगी
सोव ता इय न भळ माळ । पण गुटियो तो मरकजाण
हो । उव आपरै चवारा भाईडा न उठा परा रातूरात
टार तिया । आप विल्ली माथ चढ परी भुवारी रा तिणक
लार ल र वनीर हुयो । डाकण रा सभाव विष सू क ।

भसावटै डाकण भमडकर उठी । मारियाडा
समाळभा तो डील रो लोही मूक्या अर जीम ताळव
तिरवाळे) आयकर है पडी । कवरा री जण आपर
मारघोश लाया । बडो भडो चटी हुई देख परीर डाक
रोस म हटी । दिल काठो कर परीर आपरा आवर
बोवती थकी गुटियै रै नार नहाठी । पण गुटियो माटो
आव हो ? बो ता पग पग माथ आपरी मितरघाडा
तिणकला नाखतो थका चालै ही । अ जाद रा तिणक
सू चुग्या बिना डाकण आग नी सरक सकी । तिणकला
पण छेडो नी आयो । घालर ठडा हुग्या, रोस माळो
छेकड हार परीर डाकण पाछी मुडगी । घर में बडी ।
घर रावती रयी घडी घडी ।

मूरज चड आयो कुवरा वेगा सासो द्यागे । रि
नी चावडने खातर राजा रो जी घणो तिरमिलायो म
गण र मोखड माथे चढकर जायो तो उलरादी दिस घाडा
री संत रा डू ड तिया मोट उपडता दीसया । तिणक चडैत
बाळ सा उमडता उघडया । राजा राजा हुयो । कवर प
आपर वाप न कवरा गुटिय री नारी वारता बताई व
उव री चनराई जाणकर राजगिरी रो घणो बणायो । उ
न घणूना राज माण दी हो । जणू ही ‘गुटियो राजा’

